हिमाचल प्रदेश का प्राचीन ग्रन्थ : साञ्चा

साञ्चा

हिन्दी अनुवाद
मूल पावुची सहित

साञ्चा

हिन्दी अनुवाद मूल पावुची सहित

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी

क्लिफ ऐण्ड एस्टेट, शिमला - 171001

साञ्चा

हिन्दी अनुवाद मूल पावुची सहित

पावुची से अनुवाद

देवी राम पांडे

मनी राम शर्मा

संपादक

डॉ. श्यामा वर्मा

सूनृता गौतम

देव राज शर्मा

ISBN : 978–81–86755–13–6

प्रकाशक : सचिव
हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी
क्लिफ़-ऐण्ड एस्टेट, शिमला 171001

द्वितीय संस्करण : 2012

मूल्य : ₹ 300.00 सजिल्द
₹ 200.00 पेपरबैक

मुद्रक : भारत ऑफसेट वर्क्स
3550, जाटवाड़ा स्ट्रीट, दरयागंज
नई दिल्ली - 110 002

SANCHA
Editor : Dr. Shyama Verma, Sunrita Gautam, Devraj Sharma
Published by : Secretary, Himachal Academy of Arts, Culture & Languages, Shimla-171001
Edition : 2012
Price : ₹ 300, Paperback : ₹ 200/-

प्राक्कथन

डॉ. तुलसी रमण

सचिव, हिमाचल अकादमी

श्रुति परम्परा के बाद जब हस्तलिखित ग्रंथ लिपिबद्ध किए जाने लगे तो खुले पत्रों की पांडुलिपियाँ तैयार हुईं। ये पांडुलिपियाँ पहले ताड़ पत्रों, भोज पत्रों तथा काष्ठ फलकों आदि पर अंकित होती थीं। कालांतर में जब कागज़ बनने लगा तो उसके खुले पन्नों पर लिखित भाषा में पोथियाँ बनने लगीं। खुले पन्नों की ये पोथियाँ कपड़े में बाँधकर रखी जाती रहीं। लिखित पत्रों या विद्या के संचयन अर्थ में ऐसी पोथियों का नाम *'साञ्चा* हुआ। इन्हें पवित्र मानते हुए पूजा में रखा जाने लगा। बाद में मुद्रित ग्रंथों को भी खुले पन्नों में रखा जाता रहा।

आज आधुनिकतम मुद्रण कला के ज़माने में ये सदियों पुराने साञ्चा ग्रंथ वंशानुगत विद्वानों के घरों में पुरा-सम्पदा के रूप में मिल जाते हैं। हिमाचल प्रदेश के प्रायः सभी क्षेत्रों में प्राचीन पांडुलिपियाँ उपलब्ध हो रही हैं, मगर इनमें *साञ्चा* कहलाने वाली पोथियाँ शिमला, सिरमौर, सोलन, कुल्लू और मंडी ज़िलों में पारम्परिक विद्वानों द्वारा व्यवहार में लायी जाती हैं। 11-12वीं सदी में जो कश्मीरी पंडित रानी के साथ आकर सिरमौर के गाँवों में बस गए थे, यह साञ्चा विद्या उनकी विरासत है। पंडिताई उनका व्यवसाय था। तंत्र, मंत्र, यंत्र और ज्योतिष ज्ञान के माध्यम से वे लोगों की बीमारियों और विभिन्न समस्याओं का समाधान करते थे। इस ज्ञान परम्परा में खगोल विद्या के आधार पर पंचांग बनाने की विधि का *'उगताई का साञ्चा'* प्रसिद्ध है और पौराणिक आख्यान *'भारता साञ्चा* में संकलित मिलते हैं। सिरमौर के बाद ये पंडित विभिन्न क्षेत्रों में जाकर बस गए तो उनके साथ साञ्चा विद्या का भी प्रसार हुआ। ये *साञ्चा* ग्रंथ पावुची, पंडवानी, चंदवानी और भट्टाक्षरी लिपियों में होने के कारण भी बहुमूल्य धरोहर के रूप में हैं। ये चारों लिपियाँ कश्मीरी शारदा लिपि से निकली हैं। चार वंशों के साञ्चा पंडितों के लगभग आठ सदियों के व्यवहार से ये लिपियाँ विकसित हुई हैं।

इस पुस्तक में सिरमौर के खड़कांह गाँव के पंडित अमर सिंह से प्राप्त पावुची लिपि का साञ्चा पं. मनीराम के अनुवाद सहित प्रकाशित किया गया है। इसका पहला संस्करण वर्ष 2004 में छपा था और अब यह दूसरा संस्करण विद्वानों की मांग पर सजिल्द और पेपरबैक दोनों तरह से प्रकाशित किया गया है। आशा है साञ्चा विद्वानों और लिपि विज्ञान में रुचि रखनेवाले लोगों के लिए यह प्रकाशन उपयोगी सिद्ध होगा।

साञ्चा : पारम्परिक ग्रंथ संचयन

डॉ. गोकुल चंद शर्मा

साञ्चा ज्योतिष, तंत्रविद्या एवं आगमशास्त्र का एक अद्‌भुत संग्रह है। संचीयते अत्र–सम्‌चिङ से संचय शब्द बनता है, जिसका अर्थ है–ग्रंथ लेखन के लिए काम आनेवाले पत्रों का संग्रह। इसी संचय शब्द का तत्सम शब्द साञ्चा हो सकता है। गुरुग्रंथ साहब चार 'सैंची' में ग्रंथित है। जैसे सिक्ख सम्प्रदाय में गुरुवाणी के संग्रह को 'सैंची' नाम दिया गया है, उसी प्रकार हिमालय में विभिन्न साधकों के वचन संग्रहों को 'साञ्चा' नाम दिया गया। इन साञ्चों का उपयोग आज भी स्थानीय विद्वान विभिन्न जन–समस्याओं के समाधान के लिए करते हैं और दैनन्दिन कर्मकांड, ज्योतिष, वैद्यक के कार्य इन्हीं साञ्चों यानी पोथियों के आधार पर हुआ करते हैं।

अधिकांश साञ्चों की लिपि स्थानीय है, क्योंकि लिपि विज्ञान के अनुसार ब्राह्मी लिपि से उत्तर भारत में शारदा, टांकरी, गुरुमुखी आदि लिपियों का विकास हुआ है। हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त साञ्चा ग्रंथ पावुची, भट्‌टाक्षरी, चंदवाणी, पंडवाणी आदि अनेक लिपियों में उपलब्ध हैं। ये लिपियाँ भी शारदा से निकली हैं। शिमला, सिरमौर तथा वर्तमान उत्तराखण्ड के जोंनसार बाबर क्षेत्र में पर्याप्त साञ्चा ग्रंथ मिलते हैं। तंत्रग्रंथों के प्रणयन के लिए आज भी इन क्षेत्रों में उक्त लिपियाँ प्रचलित हैं। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू, लाहुल–स्पीति, किन्नौर तथा मंडी से लेकर सोलन, सिरमौर एवं साथ लगते जोंनसार क्षेत्र तक हज़ारों पाण्डुलिपियाँ स्थानीय लोगों के पास उपलब्ध हैं। अगली पीढ़ी के लोग इस विद्या को नहीं सीख रहे, जिससे यह साञ्चा विद्या लुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी है। 1972 में हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी की स्थापना हुई, जिसके माध्यम से साञ्चा विद्या पर भी अन्वेषण होने लगा। आज साञ्चों के बारे में जो कुछ ज्ञान प्रकाश में आया

है, वह अकादमी की ही देन है।

वर्तमान में उपलब्ध साञ्चों का स्वरूप और इनकी विषयवस्तु अतिविस्तृत है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त के संस्कारों की प्रक्रिया के लिए इनका अध्ययन एवं उपयोग किया जाता है। वास्तुशास्त्र, रोग निवारण, जादू-टोना, भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति, गुप्त प्रश्न, फलादेश, सम्मोहन, मूर्छन तथा मारण के मंत्रों की प्रयोग विधि भी इन्हीं साञ्चों में उपलब्ध है। प्रसव कष्ट को दूर करने, प्रसव के उपरान्त बच्चे का भविष्य जानने तथा विशेषकर डांडा, छत्तरी, रेख, ब्रह्मसूत्र, राड़ आदि व्याधियों के निवारणार्थ इन साञ्चों में निहित मंत्र या तंत्र द्वारा उपचार किया जाता है, जिससे तत्काल लाभ मिलता है। शुभाशुभ मुहूर्त भी इन्हीं के गणित माध्यम से निर्धारित होते हैं। विवाह, गृहस्थापन, भ्रमण आदि के लिए इन्हीं साञ्चों के गणित के आधार पर मुहूर्त निश्चित किए जाते हैं। अमुक लग्न में वर्षा होगी, अमुक लग्न में फलाँ जानवर बोलेगा या दिखेगा, जैसा बहुत कुछ सत्य साबित होता है। 'सींज' करते समय, पानी का लोटा भर जाएगा, अन्न का पत्था आधे से पूरा भर जाएगा जैसे प्रमाण प्रत्यक्ष देखे गए हैं। इस प्रकार साञ्चों के स्वरूप से ज्ञात होता है कि ये 'सर्वजनहिताय एवं सर्वजनसुखाय' ही तैयार किए गए थे, जो आज भी परम्परानुसार चलन में हैं।

ओंकार का जप और तेज का ध्यान ही शब्द ब्रह्म की उपासना है। संसार में दो प्रकार के शब्द सुने जाते हैं, पहला नित्य तथा दूसरा अनित्य का कार्यरूप। जो शब्द सुना जाता है या उच्चरित होता है, वह लोक व्यवहार के लिए प्रवृत बैखरी रूप है, कार्यात्मक अनित्य है। अर्थात् शब्द के चार भेद व्याकरण में बताए गए हैं— परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। इनमें परावाक् ब्रह्मस्वरूप है। पश्यन्ती रूप शब्द ब्रह्मात्मक बिम्ब के ही वर्ण (मातृकाएँ), पद और वाक्य रूप में प्रतिबिम्ब हैं। यही समस्त व्यवहार का उपादान कारण है। अतः समस्त कर्मों का आश्रय, सुख-दुख का अधिष्ठान, घट के अन्दर रखे दीपक के प्रकाश की भांति भोगायतन शरीरमात्र का प्रकाशक शब्दब्रह्म है। वह उच्चारण करनेवाले जीवित जनों के हृदय में विद्यमान रहता है। नाद योगी अपने दक्षिण कर्ण में अनाहतनाद को सुनता है। अंतिम नाद ओंकार है तभी तो नादबिन्दूपनिषद् कहता है—

सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां संधाय वैष्णवीम्।
श्रृणुयात् दक्षिणे कर्णे नादमन्तर्गतं सदा।।

हठयोग प्रदीपिका 4.29.83.59 में कहा गया है–

इन्द्रियाणां मनोनाथो मनोनाथस्तु मारुतः।
मारुतस्य लयोनाथः सलयो नादमाश्रितः।।
अभ्यस्यमानो नादोऽयं ब्रह्ममावृणुते ध्वनिम्।
पश्चाद् विक्षेपमखिलं जित्वा योगी सुखी भवेत्।।
कर्पूरमनले यद्वत् सैन्धवं सलिले यथा।
तथा संन्धीयमानञ्च मनस्तत्त्वे विलीयते।।

यह लययोग कुण्डलिनी योग के नाम से जाना जाता है। शरीर में मेरुदंड के नीचे मूलाधार के नाम से एक कन्द प्रसिद्ध है। बहत्तर हज़ार नाड़ियाँ उससे निकलकर सम्पूर्ण देह में व्याप्त मेरुदंड के वाम पार्श्व में चन्द्रनाड़ी इड़ा, दक्षिण पार्श्व में सूर्यनाड़ी पिंगला और इनके मध्यम भाग में सुषुम्ना सरस्वती रूपिणी रहती है। मूलाधार में यह सर्पिणी रूपी कुंडलिनी सोती रहती है। ध्यान और जाप से इसे जागृत करके सहस्रार मस्तिष्क में लीन किया जाता है, वही लय योग है।

महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज ने अपने 'तंत्र और आगमशास्त्रों का 'दिग्दर्शन' नामक ग्रंथ में तत्त्व से प्रारम्भ करके साहित्य तक अनेक बातें बतलाई हैं।

तंत्र साहित्य में दस शिवागम, अष्टादश रुद्रागम, चौंसठ भैरवागम, चौंसठ कुलमार्गतंत्र, समय मार्ग के शुभागम पंचक और नवयुग के चौंसठ तंत्र गिने गए हैं। वे कहते हैं कि वैदिक साहित्य की तरह भारतीय संस्कृति में आगम साहित्य का भी एक विशिष्ट स्थान है। उसके जो वर्णन हमें उपलब्ध हैं वे उपेक्षा से कहीं लुप्त न हो जाएँ।

'किरणागम' के अनुसार परमेश्वर ने सर्वप्रथम दस शिवों को उत्पन्न करके, उन्हें अपने एक-एक अंश का ज्ञान दिया। वह अविभक्त ज्ञान ही पूर्ण शिवागम है। परमेश्वर द्वारा उत्पन्न उक्त दस शिव इस प्रकार हैं–

प्रणव–कामिकागम, सुधा–योगजागम, दीप्त–चिन्तागम, कारण–कारणागम, सुशिव–अजितागम, ईश–सुदीप्तकागम, सूक्ष्म–सूक्ष्म, काल–सहस्र, धनेश–सुप्रभेद (मुकुटागम), अंशु–अंशुमान्।

इसी तरह 18 रुद्रागम भी हैं–

विजय–अनादिरुद्र, निःश्वास–दशार्ण, परमेश्वर–श्रीरूप, प्रोदगीत–शूली, मुखबिम्ब–प्रशान्त, सिद्धमत–बिन्दु, संतान–शिवलिंग,

नारसिंह–सौम्य, चन्द्रांशु–अनन्त, वीरभद्र–सर्वात्मा, स्वायम्भुव–निधन, विरज–तेज, कौरव्य–ब्रघ्नेश, माकुट–ईशान, किरण–देवपिता, ललित–आलय, आग्नेय–व्योमशिव,–शिव।

इनमें एक आगम का नाम नहीं मिलता। सिद्धान्तानुसार 18X2=36 रुद्रज्ञान हैं। शिव तथा रुद्रों को मिलाकर 30+36=66 शिवरुद्र ज्ञान हैं।

कविराज ने इन ज्ञानों को त्रिधा विभाजित किया है। शिवज्ञान प्रतिपादक तंत्र सर्वश्रेष्ठ माने हैं। उनका कहना है कि ज्ञान तीन प्रकार का है–1. विशुद्धमार्ग, 2. अशुद्धमार्ग और 3. मिश्रमार्ग। विशुद्धमार्ग भी परापर भेद से दो प्रकार का है। तंत्रालोक के टीकाकार जयरथ ने श्रीकंठ संहिता के अनुसार भैरवागमों की चर्चा की है, जैसे–1. भैरवाष्टक, 2. यामलाष्टक, 3. मताष्टक, 4. मंगलाष्टक, 5. चक्राष्टक, 6. बहुरूपाष्टक, 7. वागीशाष्टक और 8. शिखाष्टक।

नवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शिवाष्टक के वीणाशिवा सम्मोह और शिरश्छेद नामक तंत्र भारत से कम्बोज देश में पहुँच गए थे।

शंकराचार्य द्वारा लिखित आनन्दलहरी के 'चतुःषष्ट्या तन्त्रैः सकलमनुसंधाय भुवनम्' अंश में 64 तंत्रों की बात कही है (श्लोक 31)। के.सी.पांडे द्वारा लिखित 'अभिनवगुप्त' के पृष्ठ 55 में लिखा है कि हरिवंश के अनुसार श्रीकृष्ण ने दुर्वासा से 64 अद्वैत तंत्रों का अध्ययन किया था। 1174 ई. में लिखी पिंगलामत नामक पुस्तक में ब्रह्मयामल मतानुसार 7 तंत्र बताये गए हैं, जिनमें दुर्वासा और सारस्वत मत प्रसिद्ध हैं।

आगम-निगम में साञ्चा विद्या

तंत्र वह विद्या है, जिससे ज्ञान का विस्तार किया जाता है। तंत्र का व्यापक अर्थ शास्त्र, सिद्धांत, अनुष्ठान, विज्ञान विषयक विश्लेषण है। शंकराचार्य ने सांख्य को तंत्र कहा है। महाभारत में न्याय, धर्मशास्त्र, योग शास्त्र को तंत्र ही कहा गया है। परन्तु हिमाचल प्रदेश में साञ्चा उन ग्रंथों को कहा गया है, जिनमें तंत्र–मंत्र और साधना से लोक कल्याण का आधारभूत ज्ञान है; जैसे– 'मननात् मंत्रः' व्युत्पत्ति है वैसे 'तननात् तंत्रः' व्युत्पत्ति भी है, 'तपः पूतेन मनसा साक्षात्कृतो मंत्रः मन्त्रार्थस्य विस्तरेण निरूपणाच्च तंत्रः।' तभी तो विष्णुसंहिता के सप्तम पटल में कहा है :–

सर्वेऽर्थाः येन तन्यन्ते त्रायन्ते च भयाज्जनाः।
इति तन्त्रस्य तन्त्रत्वं तन्त्रज्ञाः परिचक्षति।।

वराहतन्त्र में उल्लेख है :-

सर्गः प्रतिसर्गश्च मन्त्रनिर्णय एव च।
हरचक्रस्याख्यानं स्त्रीपुंसोश्चैव लक्षणम्।।
राजधर्मो दानधर्मो युगधर्मस्तथैव च।
व्यवहारो कथ्यते च तथा चाध्यात्मवर्णनम्।।
इत्यादि लक्षणैर्युक्तं तन्त्रमित्यभिधीयते।।

तंत्रों का तंत्रवार्तिक में निम्न वर्णन आया है :-

सांख्ययोग–पांचरात्र–पाशुपत–शाक्य–निर्ग्रन्थ–धर्माधर्म निबन्धनानिचिकित्सावशीकरणोच्चाटनोन्मादनादिसमर्थकतिपयमन्त्रौषध कदाचित्सिद्धिनिदर्शनबलेनाहिंसासत्यवचनदमदानदयादिश्रुतिस्मृति संवादिस्तोकार्थगंधवासितजीविकाप्रायार्थान्तरोपदेशीनि, यानि च मलेच्छाचारमिश्रकुभोजनाचरणनिबन्धनानि, तेषामेवैतत् श्रुतिविरोध हेतुदर्शनाभ्यामनपेक्षणीयत्वं प्रतिपाद्यते।

इस प्रकार वेदविरुद्ध खान-पान, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण के कारण तंत्रों की उपेक्षा की जाने लगी थी।

शाक्त मत में तीन भाव हैं– 1. पशुभाव, 2. वीरभाव, 3. दिव्यभाव। इसी तरह सात आचार हैं– 1. वेदाचार, 2. वैष्णवाचार, 3. शैवाचार, 4. दक्षिणाचार, 5. वामाचार, 6. सिद्धान्ताचार और 7. कौलाचार। इनके अतिरिक्त अघोराचार और योगाचार भी कुछ लोग मानते हैं। भाव का मतलब मानसिक अवस्था और आचार का मतलब बाह्य अवस्था है।

1. वेदाचार–नित्यकर्म सन्ध्यावन्दनादि।
2. वैष्णवाचार–भक्ति।
3. शैवाचार–भक्ति और अन्तर्लक्ष्य प्रधान।
4. दक्षिणाचार–गुणत्रय से सम्बंध स्थापित कर धारणा–ध्यान–समाधि का अधिकारी बनता है।
5.वामाचार- इसमें निवृत्ति मार्ग ग्रहण किया जाता है। इस मार्ग में पंच शुद्धि आवश्यक है–1. आत्मशुद्धि, 2.स्थानशुद्धि, 3.मंत्रशुद्धि, 4.द्रव्यशुद्धि और 5.देवताशुद्धि। मंत्रशुद्धि में लोम-विलोम रूप से मंत्र के ऊपर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। वर्तमान सांचों का तंत्र इसलिए फलीभूत नहीं होता कि उपर्युक्त शुद्धियों में कमी रह जाती है। जब फलीभूत नहीं होता और साधक कौलाचार में जाकर भैरवीचक्र की पूजा करना आरम्भ कर देते हैं, तब पूजा–पाठ की आड़ में व्यभिचार को प्रोत्साहन देते हैं।

तांत्रिक क्रियाओं को विषयवासना की तृप्ति के लिए साधन बनाते हैं। तंत्राचार्यों ने इन्द्रियनिग्रहार्थ परीक्षा के तौर पर, जो साधन नियत किए थे उन्हें विषयानन्द का साधन बना दिया जाता है, तभी तो सबसे पवित्र परमहंस धर्म माना जाने वाला वामाचार सबसे निकृष्ट बना दिया गया। परन्तु इससे तंत्रशास्त्र दूषित नहीं हुआ, बल्कि उसके उपासक–साधक दूषित हुए और नरकगामी बनते गए। तंत्रशास्त्र समाधिअवस्था के लिखे ग्रंथ हैं, उनकी व्याख्या भी समाधिस्थ योगी ही कर सकते हैं। तेन शास्त्रं न गर्ह्यं किन्तु तदवेत्तार एव गर्ह्याः। जैसे पंच मकार है :–

मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च।
मकारपंचकं प्राहुः योगिनां मुक्तिदायकम्।।

मद्य–सहस्रदल ब्रह्मरन्ध्र से निकला रस है।

मांस–पुण्यापुण्य पशु को ज्ञानरूपी खड्ग से मारकर, परब्रह्म में रमण करना ही मांसाशी है। मैं को जो मार दे।

मीन–इड़ा-पिंगला के श्वासों को कुम्भक प्राणायाम में रोकना मीन भक्षण है।

मुद्रा–सत्संगमुद्रणं यत्तु, तन्मुद्रा प्रकीर्तिता। लक्षण के अनुसार सत्संग से ही मुक्ति मिल सकती है, कुसंग से नहीं।

मैथुन–इड़ा-पिंगला के प्राणों को सुषुम्ना में इकट्ठा करने को जीव संज्ञा दी गई। जब ये इकट्ठे होते हैं तो उसे 'सुरत' कहा जाता है। इनको भौतिक अर्थ से जोड़नेवाले तो नरकगामी बनते ही हैं।

तांत्रिकों का कहना है कि तंत्र दो प्रकार का है–वैदिक और अवैदिक। जिन तंत्रों में वेद के अनुसार व्यवस्थाएँ दी हैं, वे वैदिक और जिन्होंने समस्तजनों को कर्माधिकारी मान लिया है, वे अवैदिक हैं।कुछ पंडितों के पास रमल विद्या का एक साञ्चा होता है, एक सफेद गृध्र की हड्डी का तीन अंकों वाला पाशा होता है। ज्योतिष ज्ञान का ग्रंथ संचयन होता है। कुछ तंत्र–मंत्र–यंत्र होते हैं, जो समस्त बाधाओं के निवारणार्थ उपयोग में लाए जाते हैं। चूड़धार क्षेत्र के गुरुकुलों में खड़कांह, भटेवड़ी, मनयोटी, सिद्धयोटी, खद्दर, गुम्मा (रोहड़ू) आदि प्रमुख हैं। इन क्षेत्रों में उपलब्ध कुछ साञ्चे इस प्रकार हैं :–

1. उगताई का साञ्चा

इसमें ज्योतिष सम्बन्धी सूत्रों का समावेश है। कुछ अनुभवों का जुड़ाव भी हुआ है, जो 'मुदालु' तैयार करते समय प्रयोग में लाया जाता है। यह गुरु परम्परा से सीखा जाता है।

2. फलित ज्योतिष

अधिकतर विद्वानों के पास यही साञ्चा होता है। इसी से वास्तु, विवाह, जन्म, गृहप्रवेश, मुंडन, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों के मुहूर्त/फलादेश बताए जाते हैं।

3. भारथा का साञ्चा

भारथा का तात्पर्य वार्ता अथवा पौराणिक आख्यानों से है। इसके द्वारा शिवत्रेउड़, रामत्रेउड़, कानड़ू, पंडवायन अर्थात् महाभारत आदि का वर्णन किया जाता है। ये साञ्चे साल में एक बार ही बाहर आते हैं। इस अवसर पर पावुच ब्राह्मण इनका पूजन करते हैं। सामिषभोजी भाट और पांडे बकरे की बलि देते हैं।

4. तंत्र-मंत्र-यंत्र का साञ्चा

यह अत्यन्त गोपनीय होता है। गुरुकुल में भी परिवार के बड़े बेटे को ही इसकी शिक्षा दी जाती है।

इन साञ्चों की प्रारम्भिक लिपि ब्राह्मी थी। उसमें संशोधन परिवर्तन से शारदा बनी। कालान्तर में वह भी स्थानिक लिपि में परिवर्तित हो गई। इन पहाड़ी क्षेत्रों में राज-काज में टांकरी, व्यापार में लाहंडा तथा ब्रह्मकार्य में भट्टाक्षरी लिपि का विकास हुआ। वही स्थानीय भेद के साथ पावुची, भट्टाक्षरी, चंदवाणी तथा पंडवाणी के रूप में विकसित हुई।

अधिकांश साञ्चों में तंत्र विद्या है। कभी साधारण व्यक्ति भी पाशा फेंककर भविष्यवाणी करते थे। आज भी गढ़वाल के पंडितों में यह बात देखी जाती है। उत्तरकाशी के पंडित अपने थोड़े नुस्खों से अनेक भविष्यवाणियाँ किया करते हैं। जिन्होंने कालीमठ की काली शिला या श्रीनगर की श्रीशिला पर बैठकर 'नवार्ण मंत्र' का एक दिन भी जापकर लिया, वे तो महामहोपाध्याय ही बन जाते हैं।

ये तंत्र सौर, गाणपत्य, वैष्णव, शैव, शाक्त भेद के माने गए हैं। नाम के अनुसार इनका विषय विभक्त है। तंत्र साहित्य के अनुशीलन से पता लगता है कि वैदिक साहित्य की तरह ही आगम साहित्य भी अनादि और उपयोगी है। तंत्र साहित्य ने भी समाज की वैसे ही सेवा की है, जैसी वैदिक साहित्य ने। अतः आगम और निगम दोनों मानव जाति के उपकारक साहित्य हैं और ये साञ्चा ग्रंथ आगम साहित्य के अन्तर्गत आते हैं।

छोटी कालज्ञानी

111 एक एक एक की होरा कहती है कि पुत्र के लिये देव तथा पितृदोष है।

112 एक एक दो की होरा कहती है कि ऐसा लगता है कि देवता तथा भूत–प्रेत का प्रकोप है।

113 एक एक तीन की होरा कहती है कि देवी, क्षेत्रपाल तथा *हत्या का दोष दिखाई देता है।

114 एक एक चार की होरा कहती है कि जलभूत और देवी का दोष है।

121 एक दो एक की होरा कहती है कि शंखिनी (दूसरे स्थान की देवी) की भोजन करते समय छाया पड़ी है।

122 एक दो दो की होरा कहती है कि भूख न लगने का कारण देवदोष है तथा किसी की कुदृष्टि पड़ी है।

123 एक दो तीन की होरा कहती है कि गृह में किसी की छाया पड़ी है तथा भूत–प्रेत और किंकिणी देवी का कोप है।

124 एक दो चार की होरा कहती है कि गृह में भूत की छाया पड़ी है तथा डाकिनी का दोष है।

131 एक तीन एक की होरा कहती है कि देवदोष तथा पितृदोष दिखाई देता है।

132 एक तीन दो की होरा कहती है कि शुभ स्थान या जल के स्थान पर छाया पड़ी है तथा स्वजाति के पितर का दोष है।

133 एक तीन तीन की होरा कहती है कि आपने कुल में किसी के प्रति कोई कपट किया है, उसी के कारण दुःख भोगना पड़ रहा है, अतः पितृदोष है।

141 एक चार एक की होरा कहती है कि शुभ स्थान के जल को

अपवित्र करने के कारण जलदेवी कुपित है।

|142| एक चार दो की होरा कहती है कि आपके सन्तान न होना, संतान का दुःखी होना या संतान से दुःखी होने का कारण देव तथा पितृदोष लगता है।

|143| एक चार तीन की होरा कहती है कि भूत-प्रेत की छाया पड़ी है। जल के पास के इष्टदेव तथा जलदेव का कोप है। हत्या के कारण मन अशांत रहता है।

|144| एक चार चार की होरा कहती है कि आपके पुत्र के लिये क्षेत्रपाल तथा कुलदेवी का दोष है।

|211| दो एक एक की होरा कहती है कि शंखिनी और भूत-बेताल का कोप है तथा हत्या के कारण मन अशान्त है।

|212| दो एक दो की होरा कहती है कि अपने सम्बंधी के साथ कलह होने से गृह में अशान्ति है।

|213| दो एक तीन की होरा कहती है कि क्षेत्रपाल का कोप दिखाई देता है।

|214| दो एक चार की होरा कहती है कि गरीब या निम्न जाति के लोगों को दुःखी करने के कारण चण्डिका देवी कुपित है।

|221| दो दो एक की होरा कहती है कि नीच जाति के व्यक्ति को पीड़ित करने के कारण गृह देवता कुपित है।

|222| दो दो दो की होरा कहती है कि अपने कुल के किसी व्यक्ति को दुःखी करने के कारण नगरकोट की देवी दुर्गा कुपित है। इस कारण गृह में धन-धान्य की हानि तथा सन्तान दुःख है।

|223| दो दो तीन की होरा कहती है कि अपने परिवार में ही किसी की हत्या करने के कारण उसके प्रेत बनने से आपके परिवार तथा गृह पर उसका कोप है।

|224| दो दो चार की होरा कहती है कि तीर्थस्थल के पास डाकिनी की कुदृष्टि पड़ने से और कुलदेवता के दोष तथा पितृ कोप के कारण कष्ट उठाना पड़ रहा है।

|231| दो तीन एक की होरा कहती है कि देवता, भूत-प्रेत, इष्ट के कोप के कारण सन्तान का दुःख है।

|232| दो तीन दो की होरा कहती है कि चण्डिका देवी तथा देवता का कोप है।

|233| दो तीन तीन की होरा कहती है कि कन्या की हत्या के कारण गृह में अशान्ति है।

|234| दो तीन चार की होरा कहती है कि तीर्थस्थल में जल के पास ब्रह्महत्या की गई है।

|241| दो चार एक की होरा कहती है कि क्षेत्रपाल के स्थान या बावली या कुएँ के पास छाया पड़ी है।

|242| दो चार दो की होरा कहती है कि दूसरे स्थान के देवता का दोष है। कलह करके किसी के घर की भूमि हड़पने से शत्रु के इष्ट का कोप है।

|243| दो चार तीन की होरा कहती है कि निःसंतान को दुःखी करने के कारण दुःख भोगना पड़ सकता है, जिसका उपचार नवग्रह की पूजा करने पर भी नहीं है।

|244| दो चार चार की होरा कहती है कि निःसंतान को दुःख पहुँचाने से देवता कुपित हैं तथा ग्रह भी खराब हो सकते हैं।

|311| तीन एक एक की होरा कहती है कि कुलदेवता तथा इष्ट के कोप से कार्यों में बाधाएँ पड़ी हैं।

|312| तीन एक दो की होरा कहती है कि डाकिनी की छाया, देवता का कोप है तथा नीच जाति के इष्ट का कोप है।

|313| तीन एक तीन की होरा कहती है कि नागदेवता की हत्या तथा स्त्री हत्या के कारण देवी का दोष लगा है।

|314| तीन एक चार की होरा कहती है कि डाकिनी का कोप है। किसी की हत्या के कारण देवता कुपित है।

|321| तीन दो एक की होरा कहती है कि परदेसी की हत्या तथा दूसरी जाति के व्यक्ति की हत्या के कारण पितृदोष लगा है।

|322| तीन दो दो की होरा कहती है कि जल में किसी की हत्या होने के कारण भूत-प्रेत का कोप है।

|323| तीन दो तीन की होरा कहती है कि आपके घर में देवता का कोप है।

|324| तीन दो चार की होरा कहती है कि आपको कर्मों का फल भोगना पड़ रहा है। क्षेत्रपाल तथा कुलदेवता का दोष है।

|331| तीन तीन एक की होरा कहती है कि आपको बुरे कर्मों का फल भोगना पड़ रहा है।

332 तीन तीन दो की होरा कहती है कि गृह में देवी चण्डी का दोष है तथा पितृदोष भी है।

333 तीन तीन तीन की होरा कहती है कि जिस घर में आप रह रहे हैं वह आपके लिये ठीक नहीं है। अतः शारीरिक कष्ट उठाना पड़ रहा है।

334 तीन तीन चार की होरा कहती है कि डाकिनी, जलदेवी तथा सूर्य देवता का कोप है।

341 तीन चार एक की होरा कहती है कि बीमार सम्बंधी की सेवा न करने से हुई उसकी मृत्यु के कारण पितृदोष लगा है।

342 तीन चार दो की होरा कहती है कि ब्रह्महत्या के कारण पितृदोष लगा है।

343 तीन चार तीन की होरा कहती है कि इष्ट देव का कोप है। जल में किसी की मृत्यु होने के कारण पितृदोष लगा है।

344 तीन चार चार की होरा कहती है कि महादेवी चण्डी का कोप है।

411 चार एक एक की होरा कहती है कि गृह में आग लगने से हुई जीवहत्या से पितृदोष दिखाई देता है।

412 चार एक दो की होरा कहती है कि ब्रह्महत्या के कारण पितृदोष तथा कुलदेवता को न पूजने के कारण देवता का कोप लगा है।

413 चार एक तीन की होरा कहती है कि घर पर कुदृष्टि पड़ने से संतान दुःख है।

414 चार एक चार की होरा कहती है कि कुल में किसी के द्वारा आत्महत्या किये जाने के कारण पितृदोष तथा देवदोष दिखाई देता है।

421 चार दो एक की होरा कहती है कि आपको शंखिनी देवी, इष्ट तथा चण्डी देवी का दोष लगा है।

422 चार दो दो की होरा कहती है कि आप पर किसी की कुदृष्टि पड़ी है तथा पितृदोष के कारण गृह में अशांति फैली है।

423 चार दो तीन की होरा कहती है कि आपके कुल का धर्म भ्रष्ट होने से घर में व्याधि फैली है।

424 चार दो चार की होरा कहती है कि आपको किसी ने विष खिलाया है जिस कारण आपको पीड़ा रहती है। इष्ट के कोप

के कारण घर में अशान्ति रहती है तथा कुल में विरोध फैला है।

431 चार तीन एक की होरा कहती है कि किसी निम्न जाति की निःसंतान स्त्री की छाया पड़ने तथा देवी का कोप होने से कष्ट प्राप्त हो रहा है।

432 चार तीन दो की होरा कहती है कि शंखिनी देवी तथा क्षेत्रपाल का दोष है।

433 चार तीन तीन की होरा कहती है कि किसी स्त्री की कुदृष्टि पड़ने से कष्ट उत्पन्न हुआ है, जिसका निवारण देवी की पूजा है।

434 चार तीन चार की होरा कहती है कि किसी की कुदृष्टि पड़ने से कुल में जिसकी मृत्यु हुई है, उसका पितृदोष है।

441 चार चार एक की होरा कहती है कि देवता तथा भूत के प्रकोप के कारण गृह में अशान्ति रहती है।

442 चार चार दो की होरा कहती है कि ब्रह्महत्या दोष, देवदोष तथा पितृदोष है।

443 चार चार तीन की होरा कहती है कि शंखिनी देवी का कोप है।

444 चार चार चार की होरा कहती है कि कुलदेवता का कोप है। निवारण हेतु कुलदेवता की पूजा करें।

इति छोटी कालज्ञानी होरा सम्पूर्ण

---

*हत्य: हत्या करने का पाप, गृह में किसी व्यक्ति को बिना कारण तंग करने से यदि उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाए तो मृतात्मा उस घर के लोगों को दु:ख देती है।

अथ बड़ी कालज्ञानी होरा लिखी जा रही है

111 (1) एक एक एक की होरा कहती है कि आपको पुत्रलाभ और धनलाभ होगा। अपने इष्ट देवता से भी शुभ फल प्राप्त होगा। सब प्रकार के सुख मिलेंगे। आपका हर प्रकार से कल्याण होगा लेकिन मन में दुविधा होने से तीन वर्ष से दुःस्वप्न आते हैं। स्थानीय देवी भी कहती है कि आपका मंगल होगा। अर्थ सम्पत्ति का लाभ दिखाई देता है। शनि की दशा सहित चैत्र मास से श्रावण मास तक किसी एक नक्षत्र में अल्पमृत्यु के योग बनते हैं।

112 (2) एक एक दो की होरा कहती है कि आपकी भूमि का कोई हिस्सा जाएगा लेकिन अर्थ सम्पत्ति का लाभ है। हानि होने के योग भी दिखाई दे रहे हैं। शारीरिक पीड़ा, विघ्न बाधा हो सकती है। अगला समय कठिनाई से युक्त दिखाई देता है। उसके बाद लाभ होगा। मन में संतोष रखें। दो साल के बाद आपको शुभ फल प्राप्त होगा। शुक्ल पक्ष की पंचमी, संक्रान्ति के दिन, भाद्रपद मास और कृष्णपक्ष की पंचमी, रेवती नक्षत्र, बुधवार तक आपको हानि के योग हैं।

113 (3) एक एक तीन की होरा के अनुसार स्थानीय देवी कहती है कि अर्थ सम्पत्ति का नाश भाग्य के अनुसार हो रहा है। अगले मास तीर्थ यात्रा के योग हैं। उसके बाद शनि की दशा आरम्भ होगी। उसमें आत्महत्या का योग है। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में इसका भय है। स्थानीय देवी पुनः कहती है कि आपको किसी भी कार्य से लाभ होगा। पैंतीस वर्ष की आयु में धनलाभ होगा। सत्तर वर्ष की आयु में अकस्मात् मृत्यु के योग हैं। शुभ कर्म करने से आपकी आयु सौ वर्ष हो सकती है। श्रावणमास के कृष्णपक्ष

की अष्टमी तिथि, रेवती नक्षत्र, रविवार के दिन पंचानबे साल में आपकी आयु पूर्ण हो जाएगी।

114 (4) एक एक चार की होरा के अनुसार मंगल देवता कहता है कि आपकी कुल वृद्धि होगी। आपका कल्याण होगा। सब व्याधियों से मुक्त होंगे। धन आदि का लाभ होगा। भूमि लाभ होगा। ब्राह्मण के द्वारा शत्रु के साथ संधि होगी। सभी कुयोग समाप्त होंगे। स्थानीय देवी कहती है कि पशु हानि होगी, कार्य में विघ्न-बाधाएँ आयेंगी और बन्धु के द्वारा अर्थ सम्पत्ति की हानि दिखाई देती है। कुल वृद्धि होगी। उसके बाद उद्वेग पैदा होने के तथा मृत्यु के योग दिखाई देते हैं। 55 वर्ष की आयु में असौज मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी, रेवती नक्षत्र, बुधवार के दिन अर्थ सम्पत्ति का विनाश होगा।

121 (5) आपके गृह पर भूत-प्रेत की कुदृष्टि पड़ी है जिससे अर्थ सम्पत्ति का नाश हो रहा है और दुःस्वप्न दिखाई देते हैं। आपको अर्थ चिन्ता रहती है। कुल में किसी प्रकार की हानि होगी। पिछले एक मास से आपको कष्ट उत्पन्न हुआ है जो पचीस वर्ष तक रहेगा। इन पचीस वर्षों के भीतर अल्प मृत्यु का योग है। फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष, आर्द्रा नक्षत्र में मृत्यु होगी, इसमें कोई संशय नहीं है।

122 (6) पाँचाली देवी कहती है कि आपको अन्न-धन की वृद्धि होगी और आपका हर प्रकार से कल्याण होगा। शंकर भगवान् की पूजा करें जिससे विष का अमृत होगा अर्थात् बिगड़े काम भी बनेंगे। शत्रु का नाश होगा। भगवती देवी कहती है कि भविष्य में अर्थ सम्पत्ति किसी भी स्रोत से प्राप्त होगी। उसके बाद कुछ अरिष्ट के योग हैं जो मृत्यु तुल्य हैं लेकिन आपके कर्मानुसार आपकी आयु सौ वर्ष की है।

123 (7) आपके कार्य में विघ्न दिखाई देता है। आपका बन्धु के साथ विरोध होगा और मुकदमेबाजी चलेगी। परिवार में विरोध होगा। सज्जनों से मेल व अर्थ लाभ दिखाई देता है। बन्धु का शाप लगा है। स्थानीय देवी कहती है कि इसके बाद आपको अर्थ लाभ होगा। इष्ट से सुख मिलेगा। पितृ दोष भी है। पराए कार्य के कारण वाद-विवाद होने से दूसरे की बददुआ लगी है। 70

---

*नीच कर्म का प्रेत : मुसलमान तांत्रिक द्वारा करवाया गया टोना।

वर्ष की आयु तक जीवित रहेंगे। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, शनिवार की अर्धरात्रि को अकस्मात् मृत्यु का योग है।

124 (8) होरा कहती है कि आपने देवता की मनौती की थी, जिसे पूरा नहीं किया गया है। इस कारण आपके घर में अशांति फैली हुई है, जिसे दूर करना इतना कठिन है जितना इकट्ठे हुए तिल और उड़द को अलग करना। आपका मन विचलित है इसलिये विघ्न बाधाएँ आ रही हैं। वैसे आपका भाग्योदय होने जा रहा है। आपका शुभ कार्य सात वर्ष के अन्दर पूरा होगा। कार्य की वृद्धि होगी। अहंकार छोड़ दो। धर्म कर्म करने पर पचपन वर्ष में आपका पुनः भाग्योदय होगा। कलह छोड़ दो। कार्य सिद्ध होगा। आप अपने कर्म से आज से सात वर्ष के अन्दर आषाढ़ मास और भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, विशाखा नक्षत्र को अत्यधिक शुभ फल प्राप्त करोगे।

131 (9) आपके घर में शुभ कार्य होगा। आपके घर में जो क्लेश है, उसका आपने समाधान कर दिया है। आपके घर में पुत्र जन्म होगा। हर प्रकार की सम्पत्ति का लाभ भी हुआ है। लेकिन स्थानीय देवी कहती है कि कुछ दिनों के बाद आपको अर्थ सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आप चण्डी देवी का पाठ करवाएँ जिससे आपकी रक्षा होगी। इससे आपकी आयु सतहत्तर वर्ष की हो सकती है। पौष मास की सप्तमी तिथि, उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र, मंगलवार का दिन मारक हो सकता है। ऐसा विचार किया जाता है कि आपको सपने में बहुत व्यक्तियों के दर्शन हुए जो अपशकुन है।

132 (10) एक तीन दो की होरा कहती है कि आपने परिजनों से विरोध किया है, जिससे दु:स्वप्न आते हैं और भारी कष्ट के लक्षण दिखाई देते हैं। आपके घर में पितर है जिसकी आप ठीक प्रकार से पूजा नहीं करते हैं। आप मन में शांति लाएँ और लक्ष्मी तथा गणेश का पूजन करें, क्योंकि गणेश जी का कोप दिखाई देता है। आप संकल्प करें कि मैं देव व पितर की पूजा करूँगा जिससे मेरी मनोकामना पूर्ण हो तथा अकस्मात् मृत्यु टल जाए। ज्येष्ठ मास, श्रवण नक्षत्र, शनिवार के दिन आपकी

सौ वर्ष की आयु पूर्ण होगी।

133 (11) एक तीन तीन की होरा कहती है कि आपके घर में अकस्मात् अर्थ हानि होगी। आपके शत्रु ने आपके घर में कोई जादू-टोना किया है जो आपके लिये प्राणघातक है। आप इस जादू का उपाय करें तब आपको अन्न-धन का लाभ होगा, शुत्र नाश होगा। इष्ट की पूजा करें तो शुभ होगा। भगवती देवी कहती है कि अगर आप इस कार्य में ढील देंगे तो पचपन वर्ष की आयु में आपकी कहीं भी मृत्यु हो सकती है। ज्येष्ठ नक्षत्र, चैत्र मास की सप्तमी तिथि, रविवार के दिन अपने कर्म से साठ वर्ष में आपकी आयु पूर्ण होगी। अगर आप सत्कर्म करेंगे तो आप इससे अधिक आयु भी पा सकते हैं।

134 (12) एक तीन चार की होरा कहती है कि आपको जिस दोष का संदेह है उसका समाधान करें तो राजदरबार आदि से लाभ होगा। संतान लाभ होगा। आप पितृ पूजा करें। बन्धु द्वारा *नीचकर्म का प्रेत लगाया गया है। उसका उपाय करें तो आपको बन्धु व मित्रों से अर्थ-सम्पत्ति, धन-धान्य और भूमि का लाभ होगा। ऐसा करने पर हस्त नक्षत्र, पौष मास की पंचमी तिथि, शनिवार तक एक सौ पाँच वर्ष की आयु पा सकते हैं।

141 (13) एक चार एक ही होरा कहती है कि आपका मित्रों से वैर है, जिससे आपको हर प्रकार की हानि होती है। सरकार से आपको बहुत लाभ होगा। किसी दिशा से आपको मित्रों का शाप पड़ा है जिससे आपकी हानि होती है। सत्तर वर्ष की आयु तक आपका जीवन क्लेश रहित और सुख पूर्वक बीतेगा। इसके पश्चात् आपको अष्टम चन्द्रमा आदि ग्रह की खराब दशा रहेगी। क्रिया देवी कहती है कि पूजा करने से अर्थ सम्पत्ति का लाभ, व्याधि नाश, रोग मुक्ति और बन्धु जनों का शाप दूर होगा। आगे शुभ दिखाई देता है।

142 (14) स्थानीय देवी कहती है कि आपको धन-धान्य व पुत्र लाभ होगा। लेकिन परिजनों से भय है। परिजनों से मेल रखने से घर में धन की वृद्धि होगी, इसमें संदेह नहीं है। विष्णु भगवान् की पूजा करने से वस्त्र और स्वर्ण की प्राप्ति होगी। सब सुख भोगने के बाद आपकी मुक्ति होगी। स्थानीय देवी पुनः कहती है

कि परिजनों से मेल न करने पर आप सुख खोकर अल्पमृत्यु पाएँगे। बुधवार, दशमी तिथि, विशाखा नक्षत्र तक पचास वर्ष की ही आयु पा सकते हैं।

|143| (15) एक चार तीन की होरा के अनुसार स्थानीय देवी कहती है कि आपको केवल कन्या का ही लाभ है, बाकी सब प्रकार की हानि है। आपको दुःस्वप्न आते हैं। आपका अपनी पत्नी से वाद-विवाद रहता है, जिससे आपकी पत्नी दुःखी रहती है। आपको धन का अहंकार है। आपको स्वप्न में बहुत लोग दिखाई देते हैं, यह अपशकुन है। आपका जीवन सौ वर्ष तक है जो श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि, संक्रान्ति के दिन स्वाति नक्षत्र में पूर्ण हो जाएगा।

|144| (16) एक चार चार की होरा कहती है कि आपने कुलदेवता के जागरण में कुटुम्बियों सहित वाद-विवाद किया है, जिससे आपको तथा आपके कुटुम्बियों को स्वप्न में चिन्ता रहती है। इससे आपको बहुत कष्ट मिलेगा। धन धान्य का नाश होगा। इसके बाद आप सर्व सुख सम्पन्न होंगे तथा शत्रु का नाश होगा। यह योग कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी व संक्रान्ति के दिन आपके अपने कर्म से उदित होगा।

|211| (17) दो एक एक की होरा कहती है कि आपको स्वप्न में धन और अर्थ लाभ दिखाई देता है, जो कि आपके लिये हानिकारक है। आपके घर पर किसी की कुदृष्टि पड़ी है। आपका इष्ट भी रुष्ट दिखाई देता है, जिससे कार्य में विघ्न पड़ता है। आपके घर में पितर दोष है, क्योंकि आपने उनकी ठीक से पूजा नहीं की है। भगवती देवी कहती है कि आपको अर्थ लाभ, कन्या लाभ हुआ है और पुत्र को व्याधि उत्पन्न होती है। आप देवी चण्डिका तथा कुल देवता का पूजन करें,, जिससे आपके सौभाग्य की वृद्धि होगी। जिसका समय आश्विन मास, शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, बुधवार के दिन से आरम्भ होगा।

|212| (18) आपने कुल देवता की जो मनौती रखी है उसे स्थिर मन से नहीं रखा है, जिससे आपको महाकष्ट, अशान्ति रहती है और व्याधि ग्रस्त रहते हैं। ये सभी कष्ट और अन्न–धन का

विनाश इस कारण हुआ है। यह कष्ट आपको पाँच वर्ष से है। आप इसका उपाय करें तो शुभ होगा। मन में दुविधा है। आपको विदेश गमन, तीर्थाटन, धन लाभ के योग हैं। मित्र से मिलाप होगा। आप माघ मास में देवता की पूजा करें तो आपके सिद्धि के योग कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, रविवार के दिन दिखाई देते हैं।

213 (19) दो एक तीन की होरा कहती है कि आपका भाग्योदय हुआ है, जिससे धन-धान्य की वृद्धि और सुख की प्राप्ति होगी। उमा देवी कहती है कि सत् कर्म करने से वस्त्र तथा कन्या लाभ होगा और मन में सोचे कार्य की सिद्धि होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है। देवी तथा सप्तमातृका की पूजा करें। शोषणी देवी कहती है कि आपके घर में पितर दोष है, जिससे आपको शारीरिक कष्ट रहता है। आषाढ़ मास में आपके भाग्योदय के लक्षण दिखाई देते हैं। पचहत्तर वर्ष की आयु में चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि, बुधवार, अश्लेषा नक्षत्र में अल्पमृत्यु के योग पाए जाते हैं। यदि आप सत्कर्म करेंगे तो आप सौ वर्ष तक जीवित रह सकते हैं।

214 (20) दो एक चार की होरा कहती है कि आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। इसमें कोई संदेह नहीं, ऐसा बलभद्र जी कहते हैं। आपको कार्य के बारे में चिंता रहती है। आप अहंकार न करें तो सुख प्राप्त होगा और विजय प्राप्त होगी। चार स्वजनों सहित शुद्ध मन से अपने कुल देवता व देवी का पूजन करें तो आपका कार्य सिद्ध होगा। सप्तमातृका का पूजन करें और उसके प्रति की गई मनौती को पूरा करें। वाग्भवानी कहती है कि आपका कष्ट निवारण होगा, कार्य पूर्ण होंगे, पुत्र लाभ होगा, व्याधि का विनाश होगा और धन लाभ होगा। आपको स्वप्न में बहुत आदमी दिखाई दिये जो अपशकुन है। किसी ने आपके सत् कार्य में बाधा डालने के लिये रविवार के दिन आप पर जादू किया है। चैत्र मास की अष्टमी तिथि, मूल नक्षत्र, रविवार के दिन अर्धरात्रि को आपकी अल्पमृत्यु हो सकती है।

221 (21) दो दो एक की होरा कहती है कि मन चंचल होने के कारण वर्तमान में आपका कार्य ढीला दिखाई देता है और आप

सभी ओर से दुःखी हैं। पिछले तीन वर्ष में आज तक आपका भाग्य अच्छा था परन्तु आगे का समय अग्निदाह के बराबर बीतेगा। ब्राह्मण की पूजा करें, उसकी शरण में जाएं और उनको भोजन और दक्षिणा आदि से संतुष्ट करें। भगवती देवी कहती है कि आपको राज दरबार से लाभ होगा। अच्छे कर्म करने से एक वर्ष के भीतर शुभ फल की प्राप्ति होगी। यदि आप सत्कर्म नहीं करेंगे तो पौष मास, मूल नक्षत्र की अर्धरात्रि को अल्पमृत्यु हो सकती है।

222 (22) दो दो दो की होरा कहती है कि आपके घर में विवाद होने से अर्थ सम्पत्ति का नाश होता है और स्त्री की ओर से चिंता रहती है, जिससे स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। हर किसी से शत्रुता मोल लेने से आपके बन्धुओं को भी परेशानी होती है। गृहपूजन करें। बन्धुओं से विरोध न करें तो अर्थ लाभ होगा। अहंकार न करें तो पुत्रलाभ होगा। अपने कुल देवता व चण्डी देवी की पूजा करें जिससे शनिग्रह की पीड़ा और अल्पमृत्यु का परिहार होगा। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष, रविवार के दिन पुत्र की वृद्धि होगी और अगला समय सुख से व्यतीत होगा।

223 (23) दो दो तीन की होरा कहती है कि आपका संचित धन और अर्थ इस प्रकार नष्ट हो रहा है जिस प्रकार पानी की लकीर खींचते-खींचते ही सूख जाती है। आपके घर में भूत-प्रेत का प्रकोप है। आप ब्राह्मण को बुलाकर उपाय करें ताकि हानि न हो, जिससे आपके मन में संतोष रहेगा। व्याधि दूर होगी और अर्थ लाभ होगा। पितृ पूजन भी करें। मन तथा कर्म से किसी का बुरा न करें तभी सुख मिलेगा। अन्न की चिंता तथा भय दूर होगा।

224 (24) आप पर किसी की कुदृष्टि पड़ी है जो अहर्निश आपके ऊपर है। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि में इसका उपाय करें तो कार्य सिद्ध होगा और संतोष मिलेगा। आपको किसी का श्राप लगा है, जिससे आपकी स्त्री को पीड़ा रहती है। आप अपने घर में पितृ तथा कुलदेव की पूजा करें। सप्तमातृकाओं का भी पूजन करें तो मन को संतोष होगा। मालिनी देवी कहती है कि आपका भाग्य उदय हुआ है। आपको

साठ साल की आयु में पुत्र का सुख मिलेगा। आषाढ़ मास की त्रयोदशी तिथि, ज्येष्ठ नक्षत्र में आपको सुख प्राप्ति के योग हैं।

[231] (25) विष्णु देवता कहता है कि आपको सत् कर्म करने से अर्थ लाभ होगा और सरकार से लाभ प्राप्त होगा। कुल की वृद्धि होगी तथा महासुख प्राप्त होगा। आज से आठ साल बाद कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि, भरणी नक्षत्र को विदेश यात्रा के योग हैं, लेकिन आपके कुल को अर्थ सम्पत्ति की हानि के योग भी दिखाई देते हैं। आठ साल बाद ज्येष्ठा नक्षत्र और शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि, मंगलवार को मृत्यु योग भी पाए जाते हैं इसलिये यात्रा न करें।*

[232] (26) मंगल देवता कहता है कि आपको धन-सम्पत्ति का लाभ है लेकिन गृहदोष, व्याधि, अर्थ हानि, शत्रुभय और अमृत की जगह विष के योग, शनि ग्रह की कुदृष्टि भी है। सावन मास के शुक्ल पक्ष में अपने कर्म के अनुसार अर्थ हानि, पुत्र विरोध और जीवन को कष्ट भी हो सकता है। मंगल देवता कहता है कि आपको बुरे स्वप्न और केतु ग्रह दोष से अल्प मृत्यु के योग पाए जाते हैं। आपको सौ वर्ष की उम्र में श्रावण मास, शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, रविवार के दिन शत्रु पीड़ा पहुँचाएँगे। आपके कुल की वृद्धि होगी। सत्कर्म से पुत्र लाभ और धन की वृद्धि होगी, जिससे आप सुख सम्पन्न होंगे।

[233] (27) दो तीन तीन की होरा कहती है कि आपके परिवार को सुख-सम्पत्ति के योग हैं और आपको अपने कर्म से धन-सम्पत्ति की वृद्धि होगी। आज से पाँच साल बाद आपको भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र को अत्यधिक लाभ होगा। देव की पूजा करें, शुभ होगा।

[234] (28) दो तीन चार की होरा कहती है कि आपको अर्थ-सम्पत्ति का लाभ हो रहा है। जीवन में हर प्रकार के सुख के योग हैं। इसी वर्ष वैशाख मास के ज्येष्ठ नक्षत्र में धन-सम्पत्ति और पुत्र जन्म के योग पाए जाते हैं। उसके बाद वैशाख मास की पंचमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र, वीरवार को अकस्मात् दुर्घटना के योग पाए जाते हैं।

[241] (29) मालिनी देवी कहती है कि आपको धन-सम्पत्ति और पुत्र

लाभ होगा। आपने अपने जिस मित्र से विरोध किया है उससे समझौता करें, जिससे अर्थ लाभ होगा। आपको अट्ठावन वर्ष की आयु में चैत्र मास, रोहिणी नक्षत्र में दुर्घटना के योग पाए जाते हैं। मालिनी देवी कहती हैं कि आपकी पत्नी को जिस कार्य की चिन्ता रहती है, वह कार्य सिद्ध होगा। धन और पुत्र लाभ होगा। सम्बंधियों से मेल-मिलाप होगा और जीवन सुखी रहेगा। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र, बुधवार को रोग इत्यादि के योग पाए जाते हैं।

242 (30) दो चार दो की होरा कहती है कि आपको अर्थ हानि हो सकती है। सरकार की ओर से हानि होगी। गृह में किसी को व्याधि रहेगी। आप यज्ञ करवाएं, जिससे सब बाधाएं दूर होंगी तथा शत्रु का विनाश होगा। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी, भरणी नक्षत्र को हानि के बजाए विदेश गमन से धन-सम्पत्ति का लाभ दिखाई देता है। सत्य नारायण, सूर्य भगवान, चण्डी देवी का पाठ और यज्ञ करें, जिससे सब बाधाओं का विनाश होगा। शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि, भरणी नक्षत्र आपके लिये घातक है।

243 (31) दो चार तीन की होरा कहती है कि आपके घर को बहुत अधिक कष्ट के योग दिखाई देते हैं। आप स्वजनों से मेल करें जिससे कष्ट निवारण होगा। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, उत्तरा फाल्गुन नक्षत्र, रविवार के दिन आपने अपने कुल देवता के लिये मनौती की थी, उसे पूरी करो, जिससे आपकी चिंता दूर होगी। रविवार के दिन घर में पूजा करवाएँ जिससे दुःस्वप्न और व्याधि का नाश होगा। दान करें जिससे सुख–सम्पत्ति का लाभ होगा।

244 (32) दो चार चार की होरा कहती है कि आपको मित्र की ओर से सुख-सम्पत्ति की वृद्धि के योग पाए जाते हैं। आपका अपनी पत्नी से झगड़ा होने से परिवार को पीड़ा पहुँचती है। आप मूर्खता न करें। मित्र से संधि करें और स्त्री से वाद-विवाद करना छोड़ दें, जिससे आपके कुल की वृद्धि होगी। धन की हानि नहीं होगी। आप सत्कर्म करते रहेंगे तो सुख मिलेगा।

311 (33) तीन एक एक की होरा कहती है कि आपका आगामी समय

कष्टकारी है। आपको कोई शारीरिक रोग लगेगा और अर्थ सम्पत्ति की हानि होगी। उसके बाद मार्गशीर्ष मास तक रोग-व्याधि दूर होगी और शुभ फल मिलेगा। तीस वर्ष की आयु में अल्पमृत्यु का भय है। शुक्रवार का व्रत करें और देवता का पूजन करें तो शुभ होगा।

|312| (34) शोषणी देवी कहती है कि आपके अपने बन्धु की ओर से अशुभ फल के बजाए धन लाभ के योग बने हैं। आप तिल–खाण्ड सहित सप्तमातृका का हवन करें, जिससे वैशाख मास में बने अल्पमृत्यु के योग टल जाएँगे। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को अपने घर में अपनी जीवन रक्षा के लिये भगवती देवी और काली का पाठ करवायें। शोषणी देवी कहती है कि आपको तीर्थाटन से धन-सम्पत्ति का लाभ होगा और मित्रों तथा बन्धुओं से मेल-मिलाप होगा। आषाढ़ मास को दरिद्रता और आत्महत्या का भय है, इसलिए आप अपने कुलदेवता का पूजन करें। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी, गुरुवार के दिन आपकी सम्पत्ति का विनाश होगा। आप सत्कर्म करें जिससे आपको शुभ फल की प्राप्ति होगी।

|313| (35) तीन एक तीन की होरा कहती है कि आपको कहीं से धन लाभ, स्वर्ण लाभ, भूमि लाभ होगा। सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। काली देवी कहती है कि आपको पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, पंचमी तिथि को निश्चित रूप से भूमि लाभ होगा। देवी कहती है कि सुकर्म से आपको अर्थ लाभ और स्वर्ण लाभ होगा। रोग का नाश होगा। विदेश से वस्त्रादि का लाभ होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। चौसठ साल की आयु में चैत्र मास की नवमी तिथि, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, मंगलवार के दिन आपको मृत्युतुल्य कष्ट के योग हैं।

|314| (36) तीन एक चार की होरा कहती है कि आपको कोई व्यक्ति धन की हानि पहुँचाएगा, इसमें संदेह नहीं है। आप गृह पूजन व रुद्रीपाठ करें या मृत्यु संजीवनी का जाप करवाएँ। आपको अट्ठावन वर्ष की आयु में भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में बन्धु से धन मिलेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं। आप अपने मन में चिन्ता न करें। आपको संकट से छुटकारा मिलेगा और शुभ

फल की प्राप्ति होगी। मरुत् देवता कहता है कि आपको सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होगी।

321 (37) तीन दो एक की होरा कहती है कि आपने पराई स्त्री से वाद–विवाद किया है जिसके शाप से आपको हानि हुई है। उससे समझौता करने से आपको अर्थ सम्पत्ति का लाभ होगा। अट्ठावन वर्ष की आयु में आपको मृत्यु तुल्य कष्ट है। यदि आप सत् कर्म करेंगे तो सौ वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। ऐसा काली माता कहती है। आप धन-सम्पत्ति का अहंकार न करें, क्योंकि अहंकार विषतुल्य है। अपने कर्मानुसार आपकी आयु सत्तर वर्ष है। आज से बत्तीस वर्ष के बाद माघ मास के वृहस्पतिवार को अल्पमृत्यु का भय है।

322 (38) तीन दो दो की होरा कहती है कि आपको धन–सम्पत्ति के योग दिखाई देते हैं। काली देवी कहती हैं कि ज्येष्ठ मास के मूल नक्षत्र में दो वर्ष के भीतर आपकी सभी पीड़ाएँ अवश्य नष्ट हो जाएँगी तथा सर्वसुख प्राप्त होंगे। काली माता कहती है कि आपको कहीं से धन-सम्पत्ति का लाभ होगा। सुख में वृद्धि होगी। अल्पमृत्यु का भय दूर होगा। ज्येष्ठ मास की पंचमी तिथि के मूल नक्षत्र में शनिवार के दिन अत्यंत पीड़ा होगी। आप सत् कर्म करें ताकि आपकी आयु पचपन वर्ष से अधिक हो।

323 (39) तीन दो तीन की होरा कहती है कि आपको भविष्य में लाभ मिलेगा और सुख सम्पत्ति प्राप्त होगी, लेकिन अल्पमृत्यु के योग पाए जाते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र में आपको शत्रु द्वारा पीड़ा पहुँचाई जाएगी। श्रावण मास के शुक्लपक्ष में विजय तथा सुख के लक्षण दिखाई देते हैं। वाग्भवानी कहती है कि आपको धन लाभ है, लेकिन आषाढ़ मास में आपको शत्रु द्वारा कष्ट पहुँचाया जाएगा। छः मास के भीतर श्रावण मास की चतुर्थी, शुक्रवार के दिन बिजली गिरने से मृत्यु के योग बनते हैं। इसमें बचने की सम्भावना कम है।

324 (40) मालिनी देवी कहती है कि आपके भाग्य में सुख-सम्पत्ति व वस्त्र लाभ की चिन्ता है, जिससे भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष के रविवार के दिन आपकी अल्पमृत्यु के योग बनते हैं। मालिनी देवी पुनः कहती है कि उपाय करने से छः वर्ष के भीतर मृत्यु

दोष दूर होगा और लाभ प्राप्त होगा। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की दशमी तिथि, रविवार, आर्द्रा नक्षत्र तक शुभ फल प्राप्त होगा।

331 (41) तीन तीन एक की होरा कहती है कि आपको धन का अहंकार है, जिससे अट्ठावन वर्ष की आयु तक कठिनाई के योग पाए जाते हैं। काली देवी कहती है कि आप पूर्ण विश्वास करें कि वैशाख मास में आपको लाभ के योग बनते हैं और विष भी आपके लिये अमृत का काम करेगा। धन लाभ होगा परन्तु अहंकार करने से धन दूसरे के हाथ में चला जाएगा। सब प्रकार के सुखों की वृद्धि के लक्षण उदित होते दिखाई दे रहे हैं। पचास वर्ष की आयु तक सारे कष्ट दूर होंगे। कुल वृद्धि होगी। वैशाख मास की सप्तमी तिथि, गुरुवार, ज्येष्ठा नक्षत्र में भाग्योदय होगा।

332 (42) तीन तीन दो की होरा कहती है कि आपका भाग्य मध्यम है। स्त्री के प्रति चिन्ता रहेगी, अर्थ लाभ भी मध्यम रहेगा। आप अपना मन शांत रखें, सुख प्राप्त होगा। इस वर्ष फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को आपकी स्त्री-चिंता दूर होगी और सफलता मिलेगी। भविष्य में अर्थ लाभ होगा और सर्व सुख की वृद्धि होगी। इसके बाद पैंतीस वर्ष की आयु में फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, रविवार को मारक योग बनता है।

333 (43) स्थानीय देवता कहता है कि पितृ दोष के कारण आपका सुख नष्ट हो गया है, इसमें संदेह नहीं। यदि आप पितर को संतुष्ट करेंगे तो आपके सर्वसिद्धि के योग बनेंगे, ऐसा गणेश जी कहते हैं। मालिनी देवी कहती है कि शनि की दशा में बिजली से खतरा, पुत्र विरोध, धन हानि आदि होगी। आपको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि, रविवार के दिन अकस्मात् मृत्यु के योग बनते हैं।

334 (44) मालिनी देवी कहती है कि आपका मित्रों और बन्धुओं से मनमुटाव है। सरस्वती देवी कहती है कि भविष्य में कार्य सिद्ध होंगे। भाग्योदय होगा, यश प्राप्त होगा तथा कार्य सफल होगा। कार्तिक मास, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, शुक्रवार अर्धरात्रि तक कन्या

लाभ, धन लाभ और सूर्य नारायण की पूजा करने से एक सौ आठ वर्ष की आयु के योग पाए जाते हैं।

341 (45) तीन चार एक की होरा कहती है कि वर्जित व्यक्ति के घर भोजन करने से धन की हानि हुई है। उसके साथ प्रीति करने से हर प्रकार का दुःख हुआ है। इसकी शांति के लिये स्वजनों सहित ब्राह्मण कन्या की पूजा करें। स्थानीय देवी का पूजन व जागरण करें तो लाभ होगा। ऐसा करने से दुःस्वप्न दोष दूर होंगे और हर प्रकार की पीड़ा से मुक्ति मिलेगी। आपने देवता की मनौती पूरी नहीं की है, इसलिये आपके सब कार्यों में विघ्न पड़ता है। पितृ दोष भी है। तीर्थ स्थान पर पितृ तर्पण करें और बन्धुओं से मेल करें तो शुभ होगा, अन्यथा आपका जीवन पचपन वर्ष की आयु में आषाढ़ मास में समाप्त हो जाएगा।

342 (46) तीन चार दो की होरा कहती है कि जिन रिश्तेदारों से मेल वर्जित किया गया था आपने उनसे मेल किया है, जिससे आपको हर प्रकार के कष्ट और हानि हुई है। सम्पत्ति लाभ, वस्त्र लाभ और स्त्री लाभ में विघ्न पैदा हुआ है। इसी कारण श्रावण मास की द्वितीया तिथि, शनिवार के दिन आपको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। उपाय करने से आपकी आयु पचहत्तर वर्ष तक हो सकती है।

343 (47) शापटि देवी कहती है कि आपके सारे कार्यों में विघ्न दिखाई दे रहा है। अन्न, धन, सम्पत्ति आदि की हानि हो रही है। क्लेश पैदा हो रहा है, विरोध उत्पन्न हो रहा है। भूत-प्रेत का कोप दिखाई दे रहा है। आप हर प्रकार से असंतुष्ट हैं। श्रावण मास की नवमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र, शुक्रवार तक आपकी जो सौ वर्ष की आयु है उपाय न करवाने पर अल्प हो सकती है, क्योंकि आपको स्वप्न में ढाँक (दुर्गम पहाड़) दिखाई दिया है।

344 (48) तीन चार चार की होरा कहती है कि आपने जो देवता की मन्नत की थी उसे पूरा करें, क्योंकि आपकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। भगवती देवी कहती है कि आपको अधिकतर चिन्ता धन की थी और कार्यों में विघ्न पड़ते थे। आठ वर्ष तक आपको मारक योग था। आप अब इन चिन्ताओं से मुक्त हो गए हो।

411 (49) चार एक एक की होरा कहती है कि आपको भूत-प्रेत और

डाकिनियों का कोप है, जिससे बन्धुओं से वाद-विवाद होता है और आपका अनिष्ट होता है। आप हर प्रकार से अशान्त रहते हैं। हर प्रकार की पीड़ा से ग्रस्त रहते हैं। पुत्र को दुःख पहुँचता है। इसके निवारण हेतु आप ब्राह्मण से पूजा करवाकर वस्त्र तथा भूमि दान करें। भद्राणी देवी कहती है कि आपके घर में पितृ दोष भी है, जिससे आपकी हानि होती है। पितृ तर्पण करें ताकि आपको पुत्र लाभ हो और सौभाग्य प्राप्त हो। पचपन वर्ष की आयु में आषाढ़ मास की सप्तमी तिथि, सोमवार, हस्त नक्षत्र को मृत्यु योग है। यदि आप इसका उपाय करेंगे तो आपकी आयु सौ वर्ष की होगी।

412 (50) चार एक दो की होरा कहती है कि आपके मन में स्त्री की चिन्ता रहती है। आपके वाद–विवाद करने से अर्थ सम्पत्ति की हानि होती है। आप रात्रि के समय अपनी स्त्री से समागम करें और उससे प्रीति करें। जिससे आपके घर में हर प्रकार के शुभ कार्य होंगे। उसके बाद गणेश भगवान का पूजन करके सरस्वती देवी की पूजा करें। इससे आपका भला होगा। स्थान देवी कहती है कि आप वाद–विवाद छोड़कर राजपद से लाभ उठाएँ जिससे सुख मिलेगा। धन का अहंकार न करें तो अर्थ सम्पत्ति का लाभ होगा और सभी कष्टों का निवारण होगा। राम जी कहते हैं कि श्रावण मास के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि, रविवार के दिन, स्वाति नक्षत्र में आपको शुभ योग पाए जाते हैं।

413 (51) चार एक तीन की होरा कहती है कि आपने स्थान देवता का विधि-विधान से पूजन नहीं किया है, जिससे आपके घर में उपद्रव हुआ है। पुत्र लाभ से भी आप वंचित हैं। आप अपने इष्ट देव का, कुलदेव का पूजन करें। ब्राह्मण को दक्षिणा दें। वसु देवता कहता है कि आपके घर में हर प्रकार के मंगल कार्य तथा धन-सम्पत्ति का लाभ है। अहंकार त्याग दें, जिससे आपके जीवन की हर समय रक्षा होगी। ब्राह्मण को भोजन खिलाएँ तथा दान दें अन्यथा आज से बीस साल में कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में आपको अल्पमृत्यु के योग पाए जाते हैं। आप सत्कर्म करते रहें जिससे आपकी आयु सौ वर्ष की हो सकती है।

414 (52) चार एक चार की होरा के अनुसार मालिनी देवी कहती है कि आपने अपने बन्धुओं से शत्रुता की है, जिससे मन बेचैन रहता है। यह विरोध पाँच मास से चल रहा है। स्थान देवता का भी दोष है। देवता की मनौती करें और ब्राह्मण को बुलाकर सप्तमातृका और शंकर भगवान् का पूजन करवाएँ तो मनोकामना पूर्ण होगी। वसु देवता कहता है कि आप अपने बन्धुओं से समझौता करें तो आपको अर्थ लाभ होगा। रोग का नाश होगा। मन की सारी चिंताएँ समाप्त होंगी। सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

421 (53) वसु देवता कहता है कि आपके मन में जो कपट है, उसे छोड़ दें। ब्राह्मण कन्या का पूजन करें तो धन की प्राप्ति होगी। देवता पुनः कहता है कि आने वाले समय में धन लाभ के योग दिखाई देते हैं। माघ मास के रेवती नक्षत्र से मन की चिंताएँ दूर होंगी और हर प्रकार से लाभ होगा। आपकी आयु सौ वर्ष की होगी।

422 (54) चार दो दो की होरा कहती है कि भविष्य में आपको दूसरों की शरण में जाना पड़ेगा, क्योंकि आपको हर प्रकार की पीड़ा और दरिद्रता के योग हैं। दूसरों के काम में विघ्न डालने से आपको उनका श्राप लगा है। आपको तीन वर्ष से यह योग चल रहा है। आपको दुःस्वप्न भी आते हैं। श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में आपकी हानि होगी, स्त्री की ओर से भी कष्ट होगा। आपका मन अशांत रहता है। बारह साल के भीतर अष्टमी तिथि, बुधवार, ज्येष्ठा नक्षत्र में आपको विष योग (अल्पायु योग) है। काली देवी का पूजन करने से आपकी प्राण रक्षा होगी।

423 (55) वसु देवता कहता है कि आपको शत्रु पर विजय प्राप्त होगी। धन सम्पत्ति का लाभ होगा। विलम्बित कार्य सम्पूर्ण होंगे। सब प्रकार से शुभ होगा। आपके सब पापों का नाश होगा। आप जो भी कार्य करेंगे आपको उसमें सफलता मिलेगी। आप इसी वर्ष पितृ पूजा करें। विष्णु तथा गणेश जी की पूजा करें। कन्या तथा वस्त्र लाभ होगा। पाप कर्म न करें। चंडिका देवी तथा कुलदेवता का पूजन करें तो कार्य सिद्ध होंगे। दुःस्वप्न के फल निष्फल होंगे। किसी पराए पितर का कोप है। आने वाले कार्तिक मास की अमावस्या, स्वाति नक्षत्र, रविवार

की अर्धरात्रि से शुभ योग पाए जाते हैं।

|424| (56) चार दो चार की होरा कहती है कि धर्म कर्म करने से आपको कार्य में सफलता मिलेगी। धन-सम्पत्ति का लाभ होगा, ऐसे लक्षण दिखाई दे रहे हैं। मित्रों से वैर समाप्त करके उनसे समझौता करें, तब मन में सोचा हुआ कार्य पूर्ण होगा। वसुदेवता कहता है कि आप विवाद न करें तो आपको धन-सम्पत्ति का लाभ होगा और स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कुल में हो रही हानि से छुटकारा मिलेगा। आठ साल के भीतर आपको शारीरिक कष्ट के योग हैं। विनायक की पूजा से यह कष्ट दूर होगा तथा सब सुख प्राप्त होंगे। आपकी आयु मार्गशीर्ष मास की त्रयोदशी, बुधवार, भरणी नक्षत्र तक पैंसठ वर्ष की है।

|431| (57) चार तीन एक की होरा कहती है कि आपके अपने परिवार में विरोध है। घर में क्लेश होने के कारण लाभ व संतोष नहीं होगा। आप ईश्वर की शरण में जाएं तो आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। सप्तमातृका का पूजन करने से आपका कार्य सिद्ध होगा। आषाढ़ मास में ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की पूजा करने से भविष्य में आप छत्रपति बन सकते हैं। बीस वर्ष के भीतर आपके मारक योग बने हैं। आप अपने मित्र से विरोध न करें। अपने जीवन की रक्षा हेतु आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि, विशाखा नक्षत्र, वीरवार के दिन ब्राह्मण को बुलाकर पूजा करवाएँ।

|432| (58) वसु देवता कहते हैं कि आपका बन्धु से विरोध है, इसलिये आपको पितृदोष लगा है, जिससे रोग-व्याधि उत्पन्न हुई है। इससे मुक्ति पाने के लिए कुल देवता, ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पूजा करें तब श्री की प्राप्ति होगी। देवता का कोप है जिससे दुःस्वप्न आते हैं और सुख प्राप्त नहीं होता। स्थानीय देवी कहती है कि अर्थ हानि और स्त्री से कलह के योग हैं। केतु ग्रह का दोष होने से शारीरिक पीड़ा उत्पन्न होगी। आप वाद-विवाद त्याग दें और अहंकार ने करें। तीर्थाटन से आपके जीवन को खतरा है। पौष मास की दशमी या सप्तमी तिथि, अश्विनी नक्षत्र, बुधवार को आप पूजन करवाएँ ताकि आपकी दीर्घ आयु हो।

|433| (59) वसु देवता कहते हैं कि आपको कार्य में असफलता मिलेगी। कुटुम्ब में विरोध होगा, रोग आदि की उत्पत्ति होगी।

हर प्रकार की हानि होगी, रक्त विकार होगा। ब्राह्मण कन्या की पूजा करें तो लाभ होगा। वाद-विवाद न करें। केतु की अशुभ दशा के योग हैं, जिससे धन हानि, विवाद, दुख, कुल में शत्रुता उत्पन्न होगी। चण्डिका की पूजा करने से कार्य सिद्ध होंगे। राम की कृपा से पुत्र लाभ होगा। राज लाभ दिखाई देता है।

434 (60) अक्षणी देवी कहती है कि आपके कार्य में विघ्न-बाधाएँ आ रही हैं, क्योंकि आपने दूसरे के काम में बाधा डाली है। पाँच मास के भीतर कुलदेवी की पूजा करें और तिल-खण्ड से यज्ञ करें, जिससे दुःस्वप्न का फल निष्फल होगा। ऐसा करने से आयु की वृद्धि होगी। विवाद न करें। आप स्वप्न में कुएँ में बैठे थे, जो अशुभ फलदायक है। अल्पमृत्यु योग दिखाई देते हैं। तीस वर्ष के भीतर मृत्यु योग है। मार्गशीर्ष मास की पंचमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र, मंगलवार को आपके कर्म के अनुसार नारी की हानि के योग हैं।

441 (61) चार चार एक की होरा कहती है कि आपको अन्न-धन का लाभ है, प्राण रक्षा होगी, लेकिन आप पर कुदृष्टि पड़ने से कष्ट और चिन्ता रहेगी। आपकी हानि होगी। उसके निवारण हेतु वस्त्र तथा स्वर्ण दान करें। इष्ट देव व पितर का पूजन करें, जिससे आपको श्री की प्राप्ति होगी। आने वाले माघ मास तक आपको कष्ट आने के योग हैं, क्योंकि शनि की दशा बैठने वाली है। अट्ठावन वर्ष की आयु में मारक योग हैं, कार्तिक मास के पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में अल्प आयु के योग हैं। उस समय ब्राह्मण की पूजा करें तथा भोजन करवाएँ तो कष्ट टल सकता है।

442 (62) स्थानीय शापटि देवी कहती है कि आपने शुभ कर्म करने में विलम्ब किया है, जिससे आपको कष्ट उत्पन्न हुआ है। आपने गणेश भगवान का मन में ध्यान व पूजन भी नहीं किया है, इसलिये आपकी अल्प मृत्यु हो सकती है। ब्राह्मण कन्या का पूजन करें तो श्री की वृद्धि होगी। दुःस्वप्न दिखाई दे रहे हैं, जिसका फल अशुभ होगा। शोषणी देवी कहती है कि आपको वस्त्र लाभ होगा, कार्य सिद्ध होंगे, शुभ फल की प्राप्ति होगी, लेकिन केतु की अशुभ दशा आरम्भ हो रही है। इसके निवारण हेतु नियमपूर्वक 130 व्रत करें तो आपकी आयु चैत्र मास की

अष्टमी तिथि, मूल नक्षत्र, शुक्रवार तक पचपन वर्ष की हो सकती है, यह निश्चित है।

443 (63) चार चार तीन की होरा कहती है कि मित्रों से मिलाप करने से आपके कार्य पूर्ण होंगे। सब व्याधियों से मुक्ति मिलेगी। हृदय रोग दूर होगा। शुभ कर्म करने से भविष्य में महान व्यक्ति बनेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। तिल दान करें तो शुभ रहेगा। शोषणी देवी कहती है कि मित्र से मिलने की आपकी जो चिन्ता है वह पूर्ण होगी। अट्ठावन वर्ष की आयु में भाद्रपद मास, रोहिणी नक्षत्र, बुधवार के दिन आपको शुभ फल मिलेगा।

444 (64) चार चार चार की होरा कहती है कि देवता का ध्यान करने से आपको विजय प्राप्त होगी और अर्थ लाभ होगा, सोचा हुआ कार्य सिद्ध होगा। आपको स्वप्न में देवता के दर्शन होते हैं, जिससे घर में लाभ होने के लक्षण दिखाई देते हैं। राजलाभ होगा, पुत्र वृद्धि होगी। आप अपने सम्बंधियों से विरोध न करें तो आपको हर प्रकार के सुख मिलेंगे। पाप कर्म न करें। सत् कर्म करें तो शुभ होगा।

इति बड़ी कालज्ञानी होरा सम्पूर्ण

भोट प्रश्नावली में चौंसठ होरा

भो	1	2	3	4	5	6	7	8
ट	9	10	11	12	13	14	15	16
प्र	17	18	19	20	21	22	23	24
श	25	26	27	28	29	30	31	32
ना	33	34	35	36	37	38	39	40
होर	41	42	43	44	45	46	47	48
का	49	50	51	52	53	54	55	56
है	57	58	59	60	61	62	63	64

भोट प्रश्नावली

1 कार्य सिद्ध होगा। शत्रु का नाश होगा। एक चित्त होकर पाँच जगहों का जल लेकर काले रंग की बकरी की पूजा करें तो भला होगा। वह जो आपको पराया लगता है वह देवशक्ति के कारण है। उससे विरोध कर आपने शत्रुता मोल ली है। उसकी जो वस्तु आपने ले रखी है उसे वापिस कर दें क्योंकि इस कारण आपको कई व्याधियाँ लगी हैं। इसमें दूसरा कोई मध्यस्थ भी है जो आप में शत्रुता पैदा करवा रहा है। उसकी वस्तु छोड़ दें, शत्रुभय दूर हो जाएगा। पाँच स्थानों का पानी और काली बकरी लेकर राक्षस की पूजा करें तो पुत्र लाभ होगा। आप चिन्तामुक्त होंगे और आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। तब समझना कि यह विद्या सही है।

2 आप द्वारा सोचे गए कार्य में सफलता प्राप्त होना उतना ही कठिन है जितना सिंह से जीतना। कार्य अत्यंत कठिन है परन्तु तुम्हें देवता का बल प्राप्त होगा। दूसरों की बातों पर विश्वास न करें। जिसने तुम्हें दुःख पहुँचाया है या जिसे तुमने दुःख दिया है, उससे मित्रता न करें। आषाढ़ मास में आप किसी वस्तु से भयभीत हुए हो। छागल (झाड़ी विशेष) और मेढ़े की पूजा करें तो शारीरिक सुख प्राप्त होगा। आपकी स्त्री ने स्वप्न में देवता

के दर्शन किये हैं, इससे समझना कि ज्ञान सच्चा है और यह कार्य सिंह पर विजय के समान सिद्ध होगा। इसे झूठ न समझें। देव का बल है। इस कार्य हेतु आपको जूझना पड़ेगा। आपके शत्रु ने आप पर वार करने का निश्चय किया है। वे पाँच शत्रु हैं जिन्होंने देवता का आह्वान कर बल प्राप्त किया है और आपको लगाया है। इसके निवारण हेतु आप देवी (योगिनी) की पूजा करें। आषाढ़ मास में फल के साथ देवी पूजन करें तो स्वप्न में भी दुःख प्राप्त न होगा।

3 आप द्वारा सोचा गया कार्य कोई पराई स्त्री सिद्ध नहीं होने देगी। यह बात झूठ नहीं है। उस स्त्री का पति भी इस कार्य की सिद्धि नहीं चाहता। ये लोग पश्चिम की ओर से काली वस्तु लाए थे। आपको पानी में डराया गया है। आपके घर से उत्तर की ओर एक कटा वृक्ष है जिस पर भूतवास है। आपके बाएँ अंग में कोई चिह्न है परन्तु वह हानिकारक नहीं है। दुष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु पूजा करवाएँ तो धन धान्य की प्राप्ति होगी। अपने मित्र की संगति में रहने से उत्तम फल मिलेगा। कटे वृक्ष की छाया से जो व्याधि उत्पन्न हो रही है उसके निवारण हेतु पश्चिम दिशा में जल से पूजा करें। बाएँ अंग के चिह्न के लिये नवग्रह पूजन करें।

4 आपका कार्य पूर्ण होने में बाधा है क्योंकि आपने कभी देवता की मनौती की थी, जिसे पूरा नहीं किया। कोई स्त्री भी आपका कार्य सिद्ध नहीं होने देती। आपके अकस्मात् ही कई शत्रु बन जाते हैं। आपके कुल में किसी प्रकार का सुख नहीं है। यह सब इसी स्त्री के कारण है। तुम्हारी पत्नी भाग्यवान् है। श्रावण मास में पश्चिम दिशा में पूजा करें। पौष मास में माष का पुतला बनाकर छागल की पूजा करें तो भला होगा। किसी पराए व्यक्ति ने आप पर टोना किया है जो आपको भी ज्ञात है। वे दो व्यक्ति हैं। आपसे भी गलती हुई है जिस कारण परिवार में क्लेश तथा अन्न-धन का नाश हो रहा है। आप अपने देवता को मनाएँ तो कार्य सिद्ध होगा। आगे आप पर भारी कष्ट आ सकता है। आपकी पत्नी को भी दुःख प्राप्त हो सकता है। पश्चिम दिशा में देवता की पूजा करें। श्रावण मास में आपके घर में कोई काली

वस्तु लाई गई है। उस समय आपके घर में और भी व्यक्ति थे। निवारण हेतु असौज मास में पाँच पवित्र स्थानों का जल लेकर छागल की पूजा करें व सुपारी की बलि दें तो कार्य सिद्ध होगा।

5 आपने अपने मन में कोई बड़ा कार्य सोचा है जो सिद्ध होगा। लेकिन शत्रु इसकी सिद्धि में बाधा डाल रहा है। जो आपका शत्रु है उसे आप अपना मित्र समझते हैं। उसके साथ बुरा व्यवहार न करें तभी आपको पुत्र व धनलाभ होगा। हर प्रकार की शांति मिलेगी। कार्य सिद्ध होगा। आपके घर में आपकी स्त्री अशान्त, दुःखी व रोती रहती है। उसके साथ प्यार से रहें, तभी आपके घर में पुत्रलाभ होगा और मन को शान्ति मिलेगी।

6 यह कार्य सद्बुद्धि से करना, तभी लाभ होगा। ऐसा लगता है कि आपके घर में स्त्री और पुरुष का झगड़ा रहता है। वे एकमत नहीं हैं, इसी अहंकार के कारण घर में कई प्रकार के क्लेश पैदा हो रहे हैं। स्त्री ने फाल्गुन मास में अन्य आदमियों के सामने झगड़ा किया। ऐसा लगता है कि आपके परिवार पर दक्षिण दिशा से किसी भूत का प्रकोप है जो मन को भयभीत रखता है। माघ मास की अमावस्या को छागल की पूजा करें तो कार्य सिद्ध होगा। आपका अपने बन्धु से विरोध है और आप उससे रुष्ट हैं। उसके बहकावे में न आएं। फाल्गुन मास में दक्षिण दिशा में पानी के बीच आप डरे हैं, ऐसा दिखाई देता है। पानी का लोटा लेकर नीले रंग के फूलों से देवी की पूजा करें तो शुभ होगा।

7 आप द्वारा सोचा गया कार्य आपका अपना है। मन में दुविधा न रखें, आपका कार्य सिद्ध होगा। आपका देवता आप पर कुपित है, उसकी पूजा करें। कार्य की सिद्धि होगी व पुत्र लाभ होगा। कार्य पूर्ण होने से मन को शान्ति प्राप्त होगी। ब्राह्मण के कहे अनुसार कुल देवता तथा पृथ्वी की पूजा करें तो कार्य सिद्ध होगा तथा धन और वस्तु का लाभ होगा। दुःख समाप्त होंगे। पश्चिम दिशा की ओर पूजा करें तो सुख-शान्ति मिलेगी।

8 आपके कार्य में सफलता नहीं दिखाई दे रही है। यह कार्य कुलदेवता के पूजन से पूर्ण होगा। आपकी पत्नी को स्वप्न में कुलदेवता के दर्शन हुए और देवता ने बताया कि आपकी पीठ

पर निशान है और आने वाले दो वर्षों के भीतर तुम पर कष्ट आ सकता है। इसी वर्ष देवता की पूजा कर उसे सन्तुष्ट करें तो सुख शान्ति मिलेगी।

|9| आप द्वारा सोचा गया कार्य आपके परिवार से सम्बंधित है। आपके परिवार में दो विचारधारा वाले व्यक्ति हैं। आपका बन्धु आपके परिवार में फूट डालने का प्रयत्न करता है, जिस कारण आपके घर में कई प्रकार की क्षति होती है। यूं भी आपके कई शत्रु हैं। उन पर विश्वास न करें। कुलदेवता की पूजा करें तो पारिवारिक कलह समाप्त होगी और सुख की प्राप्ति होगी।

|10| आपके घर में आपका शत्रु जो बाधा डालता है, उसकी शान्ति के लिये नवग्रहों की पूजा करें। चार इष्ट आपके परिवार में कष्ट पहुँचाते हैं, उनकी पूजा करें तो दुश्मन का नाश होगा। आपका शत्रु आपको हर प्रकार से क्षति पहुँचाना चाहता है। उस-पर विश्वास न करें। आपके घर से पूर्व दिशा की ओर एक कटा वृक्ष है, उसका भी दोष है। पूर्व दिशा में ब्राह्मण से पूजा करवाएँ। चार बत्तीयुक्त तेल के दीपक से पूजा करें तो सुख शान्ति प्राप्त होगी।

|11| सोचे गए कार्य को शुद्ध मन से आरम्भ करें, शुभ फल की प्राप्ति होगी। सुख शान्ति मिलेगी और धन, वस्त्र तथा पुत्र लाभ होगा। आपके घर में जिस व्यक्ति को पीड़ा रहती है, वह ज्येष्ठ मास में सर्प देखकर डर गया है। उस समय पश्चिम दिशा में कृष्णपक्ष के समय तीन व्यक्ति भी थे। छागल पूजा और मेढ़े की पूजा करें तो सुख की प्राप्ति होगी। आपको पुत्र लाभ भी हो सकता है।

|12| आपका मन चिन्तित है कि आपका कार्य कैसे सिद्ध होगा। जब यह कार्य होना था, तब आपने नहीं किया। अब आप इसके पूरा होने के बारे में सोचते हैं। इसकी पूर्ति के लिये उत्तर दिशा की ओर से लकड़ी काट कर, उस पर यन्त्र बनाकर उसे पश्चिम दिशा में गाड़ दें। पूर्व दिशा में किसी व्यक्ति के साथ भूमि के कारण विरोध है, जिससे आपको कष्ट है। धन-धान्य की हानि हो रही है। उत्तर दिशा की ओर के खेत में किसी पितर की स्थापना है, जो आपसे कुपित है। पितृ पूजा करें। पश्चिम दिशा

की ओर दीपक जलाकर पूजा करें। पेठे की बलि दें तो सुख शान्ति मिलेगी।

13 आपका कार्य ठीक नहीं है। आपने अपनी पत्नी से जिस लाभ की कामना की थी, उसमें संशय है। आपकी पत्नी का परपुरुष से सम्बंध है, जो आपके लिये घातक है। इसीलिये आपको सुख नहीं मिलता। स्त्री परपुरुष से प्रेम न करे तो शत्रु का नाश होगा और आपको लाभ होगा।

14 आपका कार्य पूर्ण होना इतना कठिन है जितना बिना हथियार और बिना सवारी के शत्रु से जूझना। आपको इष्ट का दोष लगा है। आपके घर में किसी मनुष्य की अकस्मात् मृत्यु हुई है जिससे वह प्रेतयोनि में पड़ा है। आपके किसी शत्रु ने आपके घर को अशुद्ध किया है, जिस कारण आपके घर में कई प्रकार के उपद्रव, जैसे मकान का बोलना, स्वप्न में भयंकर चीज़ें दिखाई देना, मृत व्यक्ति दिखाई देना, चक्कर आना आदि हो रहे हैं। घर की शुद्धि हेतु पूजा करवाएँ। चार मुख वाला दीपक जलाकर, अष्टबलि देकर, कैंथ की लकड़ी में कच्चे सूत का धागा बाँधकर दक्षिण दिशा में मिट्टी में गाड़ दें। घर में हवन करें तो शुभ होगा।

15 ऐसा लगता है कि आप किसी दूसरे का प्रश्न पूछ रहे हैं। आपकी पत्नी को पुत्र लाभ होना था, वह गर्भपात के कारण नहीं हो सका। क्योंकि किसी स्त्री के साथ उसकी लड़ाई है और उस स्त्री के साथ देवता तथा एक वीर है, जिस कारण जीव का हनन हुआ। देवता तथा वीर की शंख सहित पूजा करें। किसी व्यक्ति को दान दें। आपकी पत्नी भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष में दक्षिण दिशा में वस्त्र को देखकर डर गई है, जिस कारण उसे दुःख उठाना पड़ रहा है। दूसरी स्त्री के साथ मित्रता न करें और बकरी की पूजा करें तो शुभ होगा।

16 यह कार्य ठीक नहीं है। कुल देवता के रुष्ट होने से आपके परिवार में झगड़ा है। आपका शत्रु पूर्व दिशा में रहता है, उसके साथ सात आदमी हैं। उनमें से एक आदमी ने आकर आपके घर में जादू किया है। देवता की भक्ति करने से कार्य सिद्ध होगा। ब्राह्मण को वस्त्रदान दें। पंचगव्य से घर को शुद्ध करके

शान्तिपाठ करवाएँ और अपने परिवार के झगड़े को मिटाएँ।

17 ऐसा दिखाई देता है कि धन–धान्य का लाभ होने के साथ-साथ व्यय भी अधिक होता है। गृह में पीड़ा रहती है। देवता का चिंतन करें तो आप्को सुख शान्ति प्राप्त होगी।

18 आपका मन चिन्तित है। आपके घर में दो स्त्रियाँ झगड़ा करती हैं। एक स्त्री के पास कोई वस्तु है जो किसी के दिल को दुःखी करके ली गई है। वह वस्तु अच्छी नहीं है, उसके साथ भूत है, वह आपके घर में हर प्रकार की हानि करता है। भयंकर स्वप्न दिखाई देते हैं। भूत को भगाने के लिये चण्डी देवी की पूजा करें तभी सुख प्राप्त होगा।

19 आपने जो सोचा है, ऐसा लगता है कि आपका किसी नज़दीकी व्यक्ति से झगड़ा हुआ है। उसी के श्राप से आपको इष्ट का दोष लगा है। आपके मन में भय है। आपको इस बात का पता है इसलिये उसके साथ समझौता करके अपने मन को शान्त करें। इष्ट की पूजा करें और पञ्चमी के दिन देवी की पूजा करें। कुलदेवता की भी पूजा करें तभी सुख-शान्ति मिल सकती है।

20 ऐसा दिखाई देता है कि आपका मन संतुष्ट नहीं है। लोभवश आपके मन में चिन्ता है। आपको भय है कि पूर्व दिशा से आप पर किसी की कुदृष्टि पड़ती है। जिस स्थान पर आप डरे हैं, वहाँ पर बहुत से मनुष्य और पशु भी थे। शान्ति हेतु पूर्व दिशा में पूजा करवाएँ। चतुर्मुख दीपक, नीले रंग के फूल तथा चावल लेकर पूजा करें। छठे महीने आपको कोई रोग लग सकता है, जिसमें औषधि से भी लाभ नहीं होगा। जो प्रेत आपको लगा है, उसकी पूजा करने से संकट दूर होगा और सुख-शान्ति प्राप्त होगी।

21 आपके मन में जो चिन्ता है, उसके प्रति ज्यादा उलझन में न पड़ें। पूर्व दिशा की ओर आपका कोई शत्रु है जो आपके कार्य में विघ्न पैदा करता है। उससे आप न घबराएँ। आपका कार्य सिद्ध होगा। माघ या असौज मास के कृष्णपक्ष में गृह में शान्तिपाठ करवाएँ तो आपके पूर्व जन्म के पाप नष्ट होंगे। पहले से जो आपसे शत्रुता रखता आ रहा है, आपको उससे भय लगता है। वह शत्रु आपके साथ मित्रता करेगा और आपका

काम बनेगा तथा आपको सुख और शान्ति मिलेगी।

22 आपके बहुत से शत्रु हैं जो प्रबल हैं। इस कारण आप दुःखी हैं। आप अपने मन में भय न करें और उन पर विश्वास न करें। पश्चिम दिशा की ओर, जहाँ दो व्यक्ति भी थे, पानी के पास आप डरे, वहाँ आप पर प्रेतछाया पड़ी है। पश्चिम दिशा में सुपारी की बलि दें और चतुर्मुख दीपक जलाकर भूत भगाएँ। घर में कुलदेवता की पूजा करें तो शत्रु का नाश होगा और कार्य सिद्ध होगा।

23 आप द्वारा सोचे गए कार्य में आपको बहुत कष्ट है। यह कार्य बहुत बड़ा है। इसमें आपको हानि हो सकती है। शारीरिक कष्ट भी हो सकता है। स्त्री के हाथ से या स्त्री के श्राप से आपको इष्ट लगा है। अपने कार्य की सिद्धि के लिये देवी की पूजा करके किसी को वस्त्र तथा अन्नदान करें और कन्या को भोजन खिलाएँ तो शुभ होगा।

24 होरा कहती है कि आपका एक मित्र से मिलाप हुआ है परन्तु वह आपका भला नहीं चाहेगा। आपने अपने मन में देवता के प्रति कुछ संकल्प किया था, उसे पूरा करें तो आपके घर में धन-धान्य की वृद्धि होगी तथा पुत्रलाभ होगा। अपने मित्र के साथ वैर न करें। मन शांत रखें तभी सुख और शान्ति प्राप्त होगी।

25 होरा कहती है कि भूमि के लिये आपका किसी व्यक्ति से झगड़ा हुआ है और आपसे कुछ भूल हुई है, इसलिये आपको कष्ट उठाना पड़ रहा है। धन-धान्य की हानि होती है। परिवार में जीव की मृत्यु होती है। भूमि के लिये उस व्यक्ति के साथ समझौता करें। उसकी भूमि छोड़ दें और अपने देवता की पूजा करें तो आपको सुख-शान्ति प्राप्त होगी।

26 होरा के अनुसार आपका मन चिन्तित रहता है और आपकी हर प्रकार से हानि हो रही है। गृह में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं होती। अपनी पत्नी के साथ आपका विवाद होता है। आपकी पत्नी के साथ किसी भूत ने घर में प्रवेश किया है, जिससे आपको हर वस्तु की हानि होती है। अपनी स्त्री के मन को शान्त करें। उसके साथ समझौता करें तभी सुख और शान्ति

की प्राप्ति होगी।

27 आपका भाग्य अच्छा है लेकिन आपका अपने बन्धु के साथ झगड़ा हुआ है, जिससे वह आपका भला नहीं चाहता। आपके घर में किसी जीव की हत्या हो सकती है, ऐसा दिखाई देता है। बन्धु के साथ विवाद छोड़ दें, घर में हवन करवाएँ तभी शांति मिलेगी। तब समझना यह वेद सत्य है।

28 होरा कहती है कि आपके घर पशु और धन की हानि होती है, जिससे आपको दुःख प्राप्त होता है। यह सब आपके कर्मों का फल है, ऐसा वेद कहता है। हर चतुर्थ मास में आपके घर पशु या जीव की हानि होती रहती है। आपके घर में भूत का वास है, जिस कारण आपको हानि उठानी पड़ रही है। इस भूत को आप तीर्थस्थान पर जाकर मंदिर में छोड़ दें और घर आकर पाठ करवाएँ तो शान्ति मिलेगी।

29 होरा कहती है कि आपको कष्ट उठाना पड़ रहा है। आपका परिवार हर प्रकार से कष्ट में है। पानी के ऊपर चलने से लोहे की नाव जिस प्रकार क्षतिग्रस्त होती है, उसी प्रकार आपके परिवार में भी क्षति होती है। आपको अपने घर के भीतर कोई भयानक जीव दिखाई देता है, जिससे मन भयभीत रहता है। परिवार में सभी प्राणियों को कष्ट है, किसी को शान्ति नहीं है। आपके घर कोई ऐसी वस्तु आई है, जिस पर किसी स्त्री का श्राप पड़ा है। आपके घर में भूत का वास है। गृह की शुद्धि करो, बाद में हवन करवा कर देवता की पूजा करें तभी सुख-शान्ति मिलेगी। तब समझना वेद सत्य है।

30 आपने मन में सोचा है कि आपका परिवार बड़ी कठिनाई में है। जैसे जल के बिना मछली का जीना बड़ा कठिन है उसी प्रकार आपके परिवार का जीना भी दूभर हो रहा है। इसका कारण यह है कि आपका अपने सगे बन्धु के साथ विरोध है और उसने आप पर जादू करवाया है, परन्तु आपके देवता ने आपकी रक्षा की है। आपका परिवार समाप्त भी हो सकता है। इसीलिये आप अपने गृह से काँसे की थाली में माष की बनी मनुष्य आकृति, चतुर्मुख दीपक, आटे की बनी बकरी जिसे काला रंगा गया हो, लेकर चौराहे पर छोड़ दें, तभी सुख-शांति मिलेगी।

31 होरा कहती है कि ऐसा लगता है कि शुभ कर्म करने से भी आपके घर में हानि होती है। आपको अपने घर का ही दोष लगा है क्योंकि आपने किसी इष्ट की स्थापना की थी परन्तु उसकी पूजा करनी छोड़ दी है। इसलिये वह भूत बनकर आपका हर प्रकार से अनिष्ट कर रहा है। आप इस इष्ट की पुनः उपासना करें तो आपको सुख और शान्ति मिलेगी।

32 होरा के अनुसार ऐसा लगता है कि आपका देवता आपसे अप्रसन्न है इसीलिये आपकी हर व्यक्ति से शत्रुता होती है, जिससे आपको हानि उठानी पड़ती है। दूसरा दोष यह है कि आपके घर में पूर्वजों का झगड़ा होने के कारण किसी संतान की मृत्यु हो गई है। इसलिये आपकी संतान को दुः,ख पहुँचता है। उपचार हेतु तीर्थ में जाकर गंगा स्नान कर पितृपूजन करें। घर में भी जप, दान और पूजा करें, तभी शान्ति मिलेगी।

33 होरा के अनुसार आपके परिवार में सुख नहीं है। इसके लिये देवता की भक्ति करें। सोमवार का व्रत रखें। पाँच मास के भीतर कोई भी हानि हो सकती है। यह आपके पिछले कर्मों का फल है। आपको नई ज़मीन लेने की चिन्ता है, उसके लिये कुलदेवता की पूजा करें। पूर्णिमा का व्रत करके ब्राह्मण और कन्या को दान दें। गोदान भी करें तभी आपको सुख और शान्ति मिलेगी।

34 होरा के अनुसार ऐसा दिखाई देता है कि आपका जो शत्रु है, जिसे आप जानते भी हैं, आपको उसका श्राप लगा है। आप पर देवता का कोप भी है। भूत प्रकोप भी है। अपने शत्रु के साथ मित्रता न करें। उसकी बातों में न आएँ। देवता की पूजा करें। भूत को घर से भगाकर चौराहे पर छोड़ दें। घर में हवन कराएँ तो आपको सुख और शान्ति की प्राप्ति होगी।

35 होरा के अनुसार ऐसा लगता है कि जिस कार्य को करने की आपकी अभिलाषा है, उस कार्य में विघ्न पड़ सकता है। काम करते-करते बीच में हानि हो सकती है। जीव हत्या भी हो सकती है। आपको सपने में जो काली आकृति दिखाई देती है वह एक भूत है। भूत को भगाने के लिये आप काँसे और ताम्बे का पात्र, चार बत्ती वाला दीपक, माश, चावल, फूल और काला वस्त्र लेकर अपने घर में पूजा करवाएँ और इस सामग्री को

चौराहे पर छोड़कर एक बालिस्त कैंथ की लकड़ी लेकर, तीन बार इसमें कच्चा सूत बाँधकर चौराहे में गाड़ दें और उसमें लोहे की कील लगा दें। घर आकर कुलदेवता की पूजा करें।

36 होरा का फल है कि इस कार्य में सुख शान्ति दिखाई देती है। देवता तथा इष्ट की 'उपासना करें। आपका भाग्य अच्छा दिखाई देता है। आपके कर्मों के फल के कारण आपके घर धन-धान्य की हानि होती है और मन में शंका रहती है। आप परोपकारी लगते हैं, इसलिये आपके पास धन संचित नहीं होता। इन्द्र देवता, विष्णु भगवान तथा नवग्रह का पूजन करें तो शुभ होगा।

37 आपके घर में संतान का दुःख है, जिस कारण मन अशान्त रहता है। यह इस कारण है कि आपके घर में पूर्व दिशा से लाल रंग की कोई वस्तु लाई गई है, जिसके साथ भूत का प्रवेश हुआ है। वही आपके घर में क्लेश पैदा कर रहा है। इसलिये भूत को घर से भगाने का उपाय करें। देवता की पूजा करें, तभी शान्ति मिलेगी।

38 ऐसा दिखाई देता है कि आपका बन्धु आपसे दुःखी है। धन या भूमि के लिये उसके साथ विवाद हुआ जिसमें आपसे कुछ भूल हुई है। इस कारण आपको बन्धु का श्राप लगा है। अपने बन्धु से मैत्री करें तो सुख प्राप्त होगा।

39 ऐसा लगता है कि आपका शत्रु आपको जीने नहीं देता। वह हर प्रकार से आपका अनिष्ट करता है। वह आपके लिये घातक है। आपकी पीठ पर जो चिह्न है उससे भी आपको दुःख प्राप्त होता है। आप शिव की पूजा करें तभी आपको धन-धान्य का लाभ होगा और सुख शान्ति मिलेगी। शिव की उपासना करें।

40 ऐसा लगता है कि आप देवता के मंदिर से कोई वस्तु उठाकर लाए हो जिससे आपको देवता का दोष लगा है। आपके घर में हर प्राणी दुःखी रहता है। आपका मन बेचैन रहता है। घर में किसी व्यक्ति को मूर्च्छा आती है, वह देवता का कोप है। देवता की जो वस्तु आपके घर आई थी आपने उसको नष्ट कर दिया है, अतः देवता को प्रसन्न करें। उसके निमित्त यज्ञ करवाएँ। आपका एक बन्धु भी आपसे दुःखी है। जो परायी भूमि आपने ली

है उस पर बन्धु का भी अधिकार है। बन्धु के साथ मित्रता करें तभी शांति प्राप्त होगी।

41 होरा कहती है कि आपको हर प्रकार का सुख प्राप्त है। आपने जो प्रश्न किया है वह दूसरे के लिये किया है। जिसका यह प्रश्न है उसके बने काम बिगड़ जाते हैं। परिवार में अशांति रहती है, भूमि के कारण बन्धु के साथ विवाद रहता है। बन्धु की ज़मीन वापिस कर दें। अपने देवता की पूजा करें, तभी आपका शुभ होगा।

42 सोचा गया कार्य आपके लिये अच्छा नहीं दिखाई दे रहा है। आपके घर के समीप की भूमि पर भूत का वास है, जिस कारण आपके परिवार को दुःख पहुँचता है। आपके परिवार में स्त्री का गर्भपात भी होता रहता है। यह भूमि आग्नेय दिशा (दक्षिण और पूर्व के मध्य) में है। यहीं से प्रेत की छाया पड़ती है। जिसकी यह भूमि है उसका कुल नष्ट हो चुका है। इसलिये आप इस प्रेत की पूजा करें। भूमि पर कब्ज़ा न करें और अपने कुलदेवता को मनाएँ। भला होगा।

43 होरा के अनुसार आपका घर किसी दूसरे की भूमि पर बना है। आपके घर का हर व्यक्ति व्याधिग्रस्त रहता है। आपने किसी व्यक्ति की कोई वस्तु छीनी है, इसलिये उसकी बददुआ लगी है। उसके क्रोध को शांत करें। इसके लिये आपको पहले भी किसी ने बताया था और आपने क्रोध शांत करने का संकल्प भी किया था। उससे मित्रता करें। मकान में इष्ट देव की पूजा करें तब आपको दुःस्वप्न आने भी बन्द हो जाएँगे। घर में शान्ति रहेगी।

44 होरा कहती है कि आपके परिवार में स्त्री को पीड़ा रहती है। जिस प्रकार तेल के बिना दीपक नहीं जलता, उसी प्रकार आपकी स्त्री भी दीपक की तरह बुझ सकती है अर्थात् मर सकती है, ऐसा लगता है। ज्येष्ठ मास में रविवार के दिन आपके बन्धु से आपकी पत्नी ने झगड़ा किया है और बन्धु ने क्रोधित होकर उस पर जादू करवाया है, इसी कारण स्त्री को पीड़ा रहती है। इसका उपाय करने के लिये आप सुपारी, चारमुख का दीपक, आटे का मेढ़ा और बकरी बनाकर, स्त्री पर वार कर

दक्षिण दिशा में छोड़ दें और पेठे की बलि दें, तभी शांति होगी।

45 होरा के अनुसार ऐसा लगता है कि जो कार्य आपने सोचा है, उसमें किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं है। भारी कष्ट का सामना करना पड़ेगा। आपका अपने सम्बंधी के साथ विवाद है। इस विवाद के विषय में किसी भी पराए व्यक्ति पर विश्वास न करें। आपकी हत्या भी हो सकती है। आपके घर के सामने किसी ने ऐसा वृक्ष लगाया है जिससे आपको हानि होती है। आप इस वृक्ष को काट दें या पूजा करवाएँ तो भला होगा।

46 ऐसा दिखाई देता है कि जिस कार्य के होने की आपने आशा लगाई है, वह कार्य नहीं हो रहा है, जिससे आप दुःखी हैं। आपके परिवार में किसी व्यक्ति को पीड़ा रहती है। वह किसी काले जानवर के डरा है। जिस समय और स्थान पर वह डरा, उस समय वहाँ तीन व्यक्ति थे और कुछ व्यक्ति खेल रहे थे। उसके बाद तीसरे मास वह बीमार हो गया। उसके उपचार के लिये छागल व सुपारी से पूजा करें और ग्रहों की शांति के लिये पूजन करवाएँ तो सुख और शांति प्राप्त होगी।

47 ऐसा लगता है कि आपके घर में जो भी वस्तु आती है वह नष्ट हो जाती है। आपको पुत्र लाभ भी नहीं होता, केवल कन्या योग है, जिससे आपका मन दुःखी रहता है और आपकी स्त्री भी दुःखी है। इसका कारण यह है कि आपके घर में उत्तर दिशा की ओर एक कटा हुआ वृक्ष है जो आपके लिए हानिकारक है। इसी वृक्ष के कारण आपके घर कार्तिक मास में जीव की हत्या हुई है। आप उत्तर दिशा में वृक्ष के पास पत्थर गाड़ दें और घर में शांति पाठ करवाएँ।

48 ऐसा दिखाई देता है कि आपके भाग्य में सुख-शांति और महा आनन्द की प्राप्ति है। जिस कार्य के विषय में आप प्रश्न कर रहे हैं, वह पूर्ण होगा। किसी अच्छी वस्तु की प्राप्ति होगी। धन-धान्य का लाभ होगा। दो पुत्र होंगे और अकस्मात् धन की प्राप्ति होगी।

49 आपके मन में धन की चिन्ता है। आपको धन लाभ होगा, कार्य सिद्ध होगा। फाल्गुन मास में आपको जो हानि हुई, वह आपके बुरे कर्मों के फलस्वरूप हुई। आपको अकस्मात् धन लाभ होगा।

कोई व्यक्ति आपसे ईर्ष्या करता है, उसे अपने मन की बात न कहें। वह आपके कार्य में बाधा डालता है। ऊपर लिखा धन लाभ दक्षिण दिशा की ओर से होगा, तब समझना कि यह वेद सत्य है।

50 आपके मन में जिस कार्य के लिये चिन्ता है उसे हाथ में न लें। कार्य सिद्ध नहीं होगा। बहुत दुःख प्राप्त हो सकता है। इस कार्य में मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है।

51 जो प्रश्न आपने मन में विचारा है, उसकी सिद्धि के लिये आप दुर्गा देवी की पूजा करें। आपकी जो वस्तु खोई है वह तभी प्राप्त हो सकती है। देवी की पूजा से शुभ फल की प्राप्ति होगी। धन व पुत्रलाभ होगा। कार्य सिद्ध होगा।

52 होरा कहती है कि आप द्वारा सोचा गया कार्य सिद्ध होगा। शुभ फल की प्राप्ति होगी। सब प्रकार का लाभ होगा। सोचे गए कार्य में एक शत्रु बाधा डालने का प्रयत्न करेगा। उससे भयभीत न हों क्योंकि वह आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। एक मित्र की सहायता से आपका कार्य सिद्ध होगा। मन प्रसन्न होगा। शत्रु मन में जलेगा और दुःखी होगा। आप अपने पितर की पूजा करें तो आपका शुभ होगा।

53 आपने जिस प्रश्न के बारे में सोचा है, वह किसी दूसरे का प्रश्न है, ऐसा लगता है। वह अपने ही कारण दुःखी है। उसे किसी भी शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती। जिस कार्य को भी करना चाहता है वह सिद्ध नहीं होता। वह अन्न और धन के लिये दुःखी है। उसके मन में सन्देह है कि कार्य सिद्ध क्यों नहीं होता। यह सब कर्मों का फल है परन्तु आगे भाग्योदय होने के योग हैं।

54 जिस प्रकार मनुष्य जल के बीच डूबकर तड़पता है, उसी प्रकार आपका मन भी तड़प रहा है। ऐसा लगता है शत्रु आपसे विरोध करता है। अगर वह भलाई की बात भी करे तब भी विश्वास न करें। शत्रु आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाएगा। आपने कुल-देवता की मनौती की है, उसे पूरा करने पर आपकी शत्रुता समाप्त हो सकती है। तब शत्रु भी आपका साथ देंगे और आपके कार्य सिद्ध होंगे। यह शत्रुता धन के कारण है।

देवता की मनौती पूर्ण करने से धन भी प्राप्त होगा। आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।

55 आपने जो सोचा है, ऐसा लगता है कि आपके परिवार में झगड़ा होता रहता है। आपके परिवार के सभी व्यक्तियों की बुद्धि मलिन है। आपने देवता की मनौती की थी, उसे पूर्ण करें। घर में यज्ञ करवाएँ तभी सुख-शांति मिलेगी।

56 आपका कार्य पूर्ण होगा। आप अपने कुलदेवता की पूजा कर उसे सन्तुष्ट करें तो आपके मन को शांति मिलेगी। धन लाभ, स्त्रीलाभ तथा पशुधन लाभ होगा। अपने इष्ट देवता की भी पूजा करें तो शुभ होगा।

57 आप द्वारा सोचा गया कार्य ऐसा है जैसे शेर के मुख में हाथ डालना। इस कार्य को हाथ में न लें। इस कार्य को करने से पौष मास तक आपको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। क्योंकि यह कार्य सिद्ध नहीं होगा और ऐसा करने से पौष मास के मंगलवार को दोपहर बारह बजे तक व्यक्ति मर भी सकता है।

58 आपका कार्य सिद्ध होगा। कार्य में बहुत से शत्रु बाधा पहुँचाने का यत्न करेंगे परन्तु आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाएँगे। आप इनके साथ अच्छे सम्बन्ध बनाएँ तो आपको लाभ होगा। धन लाभ व स्त्री लाभ के योग हैं। आपका भला होगा और बाद में पुत्र लाभ होगा।

59 जिस कार्य के प्रति आपके मन में चिन्ता है, वह चिन्ता आप छोड़ दें। धन लाभ होगा। जिससे आपका कार्य है उसे सन्तुष्ट करें। वह आपका निकट सम्बंधी है। वहाँ आपका एक शत्रु भी है। उससे भी अपने सम्बंध मधुर बनाएँ, तब आपका कार्य सिद्ध होगा। तब मानना कि वेद सत्य बोलता है।

60 आपने जो कार्य सोचा है वह तुरन्त फल देने वाला है। यदि आप इस कार्य में शीघ्रता करेंगे तो इसका फल विष के समान होगा, इसलिये वह कार्य शांत मन से करें। यदि वह कार्य सात मास के अन्दर पूरा होगा तो आपका भला होगा।

61 आपने जो कार्य सोचा है उसे सिद्ध समझें। एकचित्त होकर कार्य करें तो शीघ्र सफलता मिलेगी। आपने देवता की मनौती की थी। यदि उसे पूरा नहीं करेंगे तो स्त्री की हानि हो सकती

है। देवता की पूजा करें तो सब कष्ट दूर होंगे, पुत्र लाभ होगा और सुख प्राप्त होगा।

62 आपका कार्य सिद्ध होगा। इस कार्य को यदि स्वयं करेंगे तो लाभ होगा। आपका भाग्योदय होने वाला है परन्तु शत्रु नहीं चाहते कि आपके अच्छे दिन आएँ। आप अपने देवता को सिद्ध करके इस कार्य को करें तो आपके विरोधी कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। सूर्य की पूजा करें। सूर्य देव रक्षा करेंगे।

63 जो प्रश्न आपने सोचा है, वह भूमि के सम्बंध में है। इस भूमि को कई लोग पाना चाहते हैं, जिसका आपको पता नहीं है। इस सम्बंध में किसी ने अपने इष्ट को भी आपके पीछे लगाया है। यदि आप अपना भला चाहते हैं तो कुल देवता की भक्ति करें और देव की उपासना करें। देवता के नाम से यज्ञ करवाएँ तो सुख शांति मिलेगी।

64 जिस कार्य के बारे में आपने सोचा है, उसमें आपका धन नष्ट हो सकता है। कार्य आरम्भ करने से पहले ब्राह्मण की पूजा करके ईशान दिशा (उत्तर और पूर्व के बीच) में दूर्वा, शस्त्र तथा वस्त्र दान करें। किसी से विरोध न करें। यज्ञ करवाएँ। धर्मशाला बनवाएँ, तब आपको सुख-शान्ति मिलेगी और सभी कार्य सिद्ध होंगे। आगे राम जी की कृपा।

भोट प्रश्नावली सम्पूर्ण

सिद्ध सकल्या होरा

[1] ईश्वर देवता सत्य कहता है कि आपका मन स्थिर नहीं है। एक कार्य पूरा होने से पहले ही आप दूसरे कार्य में हाथ डाल देते हैं। आपने देवता के निमित्त कोई वस्तु देने की मनौती की थी, उसे दे दें और देवता की पूजा करें। आपके सब कार्य सिद्ध होंगे और मन प्रसन्न रहेगा। आपको जो प्रेतभय है, उसके लिये छागल (झाड़ी विशेष) पूजा करें तो शुभ होगा।

[2] सिद्ध सकल्या (ऐसी देवी जिसकी सिद्धि की है) सत्य कहती है कि आपको पश्चिम दिशा से प्रेत की छाया पड़ी है, इसीलिये परिवार में कष्ट आते हैं। आटे के बने मेढ़े और सूअर की बलि दें तो सुख मिलेगा और लाभ होगा।

[3] गणपति देवता सत्य कहते हैं कि आपको सरकार की ओर से लाभ प्राप्त होगा। स्त्री को पुत्रलाभ होगा। आपके पाँच बन्धु हैं। सभी मिलकर भक्ति भाव से माघ मास में दान करें। आपके घर में स्त्री के पितर का कोप है। इसके निवारण हेतु चैत्र मास में जल के पास दान करें या पितर के नाम पर नल या सबील लगाएँ, तब सुख और लाभ होगा।

[4] मेघ मालवा (मेघ देवता) सत्य कहता है कि आपका कार्य शुभ नहीं दिखाई देता। जिस प्रकार पत्ते के ऊपर पानी नहीं टिकता है, उसी प्रकार आपका मन भी चंचल है। आप पर प्रेत का प्रकोप है। आटे की बकरी बनाकर उसकी तथा अन्न की पूजा करें तो सुख व लाभ होगा।

[5] पाण्डु देवता सत्य कहता है कि आपका मन भयभीत है। आपका भाग्य ठीक है। मनोकामना पूर्ण होगी। कार्य सिद्ध होंगे। मन को संतोष होगा। आपने देवता के प्रति कोई मनौती की थी, उसे

पूर्ण करें तो आप भय मुक्त हो जाएँगे। धन-धान्य का लाभ होगा।

6 आदि देवता सत्य कहता है कि उत्तर दिशा में एक कटा हुआ वृक्ष है, जिसकी छाया पड़ने से आपके घर में अशान्ति है। आप अपने घर में उसकी पूजा करें। आपने अपने बन्धु के साथ शत्रुता की है, बन्धु निर्बल है। उसने क्रोधित हो कर आपके घर पर इस वृक्ष के पास से टोना किया है। आपके घर में स्त्री तथा बालक की हत्या हुई है। टोने के लिये उपाय करें। पितर की शान्ति के लिये तीर्थ स्थान में जाकर दान करें। बन्धु के साथ प्रेम करें, तो शांति प्राप्त होगी।

7 शारदा देवी सत्य कहती है कि आपके पीछे शत्रु लगा है जो आपके कार्य में बाधा डालता है। ऐसा लगता है कि आगे आपके कार्य सिद्ध होंगे। सरकार की ओर से लाभ होगा। अपनी श्रद्धानुसार देवता की पूजा या यज्ञ करवाएँ, तभी आपको सुख और शान्ति मिलेगी।

8 नाग देवता सत्य कहते हैं कि आपके मन में कपट है। जिस प्रकार पत्ते पर पानी नहीं ठहरता, उसी प्रकार आपका मन भी स्थिर नहीं है। आपके शत्रु को हर प्रकार का लाभ है। आपका मन शुद्ध नहीं है, तभी आपके कार्य में बाधा पड़ती है। आपका शत्रु पूर्व दिशा में रहता है और आपका सम्बंधी है। उसके साथ अच्छे सम्बंध बनाएँ। घर में हवन करवाएँ, तभी आपको सुख और लाभ होगा।

9 माँ दुर्गा कहती है कि आपके मन में धन के विषय में चिन्ता है। एक मनुष्य आपसे रुष्ट है, वह आप पर क्रोध करता है। आप माँ दुर्गा की पूजा करें। एकचित्त होकर अपना कार्य करें तो उस व्यक्ति के बाधा डालने का कोई प्रभाव नहीं होगा। जैसे तेल के बिना दीपक नहीं जलता है, उसी प्रकार आपके परिवार में एक मनुष्य का जीवन भी समाप्त हो सकता है। उसको श्मशान के पास देवी का दोष लगा है। सुपारी, नारियल और पेठे की बलि दें। लाभ होगा।

10 रुद्र देवता सत्य कहता है कि आपके घर में जो कष्ट है, उसका कारण यह है कि पश्चिम दिशा में आपके घर पर प्रेत की छाया

पड़ी है। आप देवता की पूजा करें। आपका कार्य सिद्ध होगा। धनलाभ होगा। देवता के निमित्त मनौती करें तो लाभ होगा व सुख प्राप्त होगा।

11 सूर्य देवता सत्य कहता है कि आपके घर में कलह इस कारण है कि आपका सम्बंधी आपके घर में फूट डालता है। आपके घर में एक व्यक्ति पीड़ित है। उसके लिये माघ मास में श्मशान देवी की पूजा करें और माश की बलि दें तो लाभ होगा व सुख प्राप्त होगा।

12 वामन देवता सत्य कहता है कि आपने स्त्री को जो वचन दिया, उसे नहीं निभाया। उस वचन को पूरा करें व देवता की मनौती करें। आपको सुख और शान्ति मिलेगी।

13 पंचतीर्थ सत्य कहता है कि आपके कार्य सिद्ध होंगे। देवता की पूजा करें। पाँच मास के भीतर भूमि लाभ होगा। वहाँ पाँच व्यक्तियों के साथ बात करनी पड़ेगी तभी आपको भूमि लाभ हो सकता है। उस भूमि पर एक प्रेत का वास है, क्योंकि वहाँ एक स्त्री की हत्या हो चुकी है। स्त्री हत्या के निवारण हेतु पितर पूजा करें, पिण्डदान दें। प्रेत को भूमि से भगा दें, तभी आपको लाभ होगा। सुख मिलेगा।

14 वसुन्धरा देवी सत्य कहती है कि आपने देवता की मनौती की थी, वह आपसे पूरी नहीं हुई, इसलिये आपके घर में बालक की हत्या हुई। अन्न तथा धन का दान करें। काली देवी की पूजा करें। वस्त्र और अन्न दान करने से पुत्र लाभ होगा। सुख प्राप्त होगा।

15 ब्रह्मदेवता सत्य कहता है कि आपके कार्य में दो अन्य व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। पूर्व जन्म के कर्मों के फल के कारण कार्य में बाधा पड़ती है। लोगों के लिये प्याऊ लगवाएँ। चार वस्तुएँ (अन्न-धन-वस्त्र-गो) दान करें। काली पूजा करें। ब्राह्मण को वस्त्रदान दें। इष्ट देवी की पूजा करें तो शुभ होगा।

16 सरस्वती देवी सत्य कहती है कि आपने मन में जिस कार्य के विषय में सोचा है, वह पूर्ण होगा। ब्राह्मण की पूजा करें। गुड़-तिल का दान दें, तब आपको सुख मिलेगा। देवता की मनौती करें तो आपको स्त्री और वस्त्र का लाभ होगा।

17 विष्णु देवता सत्य कहता है कि आपके घर में हर वस्तु का लाभ

है। देवता के निमित्त कोई वस्तु देने का आपने संकल्प किया था, उसे शुद्ध मन से देवता को अर्पित करें, आपका भला होगा व कार्य सिद्ध होंगे।

18 सिद्ध सकल्या सत्य कहती है कि राजकार्य से लाभ होगा। घर में किसी एक व्यक्ति पर प्रेत की छाया पड़ी है, जिससे उसे बहुत कष्ट मिलता है। श्मशान के प्रेत और देवी का कोप है । आटे के चार सर्प बनाकर उनकी पूजा करें तो भला होगा।

19 केदार देवता सत्य कहता है कि आप पर उत्तर दिशा से प्रेत की छाया पड़ी है। माघ मास में पाँच वस्तुओं की बलि देकर पूजा करें और प्याऊ लगाएँ। आपके घर में स्त्री और बालक की हत्या हुई है, जिनका पितृदोष लगा है। तीर्थस्थान में पिण्डदान करें। तब आप जिस वस्तु की कामना करेंगे, वह पूर्ण होगी। धन का लाभ होगा। राजकार्य से भी लाभ होगा।

20 आदित्य देवता सत्य कहता है कि आपको सरकार की ओर से लाभ होगा। धन-धान्य व पुत्रलाभ होगा। आप पर प्रेत की छाया भी पड़ी है। प्रेत तथा देवी की दूध और खीर से पूजा करें तो शारीरिक सुख प्राप्त होगा।

सिद्ध सकल्या होरा सम्पूर्ण

अबजादी होरा

|अअअ| हे मनुष्य ! जो प्रश्न तू पूछ रहा है उसके विषय में ठीक तरह से सुन। मैं कह रहा हूँ जो तू चाहता है, तेरा कार्य सिद्ध होगा। अपने देवता की पूजा कर, तेरे शत्रु का नाश होगा और कार्य सिद्ध होंगे।

|अअब| हे पूछने वाले मनुष्य! मैं कहता हूँ। तू दोनों कानों से सुन। तेरे मन में जिस कार्य की इच्छा है उसे शुरू कर। वह सिद्ध होगा।

|अअज| हे मनुष्य! जिस कार्य के बारे में तू प्रश्न कर रहा है वह कार्य सिद्ध होगा। दान पुण्य करने से आपका कार्य सिद्ध होगा, मान बढ़ेगा और मन का दुःख मिट जाएगा।

|अअद| पूछने वाले मनुष्य! तेरा मन स्थिर नहीं है, इसलिये तेरा कार्य पूर्ण होना कठिन है। सोचे गए कार्य को करने से तुझे कष्ट उठाना पड़ेगा, इसलिये इस कार्य को छोड़ दे।

|अबअ| पूछने वाले मनुष्य! तू सुन ले। यह कार्य कठिन है। इसे पूरा होने में काफी समय लगेगा। आपका कार्य लम्बे समय के बाद पूरा होगा और उसमें सफलता प्राप्त होगी।

|अबब| हे पूछने वाले पुरुष! तू दोनों कानों से सुन। मैं कहता हूँ कि तेरा कार्य सिद्ध होगा। कोई शुभ समाचार सुनने को मिलेगा जो तेरे लिये लाभकारी होगा। मन प्रसन्न होगा परन्तु कुछ शंका रहेगी।

|अबज| हे पूछने वाले मनुष्य! मैं कहता हूँ, तू सुन ले। दान-धर्म करने से तेरा कार्य सिद्ध होगा परन्तु तू इस कार्य को शीघ्र कर ले। तेरा कार्य पूर्ण होगा।

|अबद| हे पूछने वाले मनुष्य! तू इस कार्य को खुशी से कर। तेरा कार्य सिद्ध होगा।

अजअ हे पूछने वाले पुरुष! तेरे द्वारा सोचा गया कार्य ठीक नहीं है। यह कार्य पूरा नहीं हो सकता। इस कार्य के करने से आपको धोखा मिलेगा और शान्ति प्राप्त नहीं होगी।

अजब हे पूछने वाले पुरुष! जिस कार्य को करने की तू हठ कर रहा है उसे छोड़ दे। तेरा कार्य सिद्ध नहीं होगा। तू मान या न मान, यह कार्य तेरे वश का नहीं है। यदि कार्य कर सकता है तो लाभ हो सकता है।

अजज हे पूछने वाले मुनष्य! तेरा एक शूद्र मित्र है जो तेरा काम बिगाड़ेगा। इसलिये तेरा यह काम पूंरा नहीं हो सकता।

अजद हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य सिद्ध होगा। देव भी आपकी रक्षा करेगा।

अदअ हे पूछने वाले मनुष्य! मन में दृढ़ निश्चय करके कार्य आरम्भ कर। कार्य सिद्ध होगा। इस कार्य में तुझे धन की प्राप्ति होगी या भाग्यवान् स्त्री से लाभ होगा। मन संतुष्ट रहेगा।

अदब हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध हो सकता है, लेकिन तेरी कुमति से यह कार्य पूर्ण नहीं होगा।

अदज हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध होगा और उसमें तुझे लाभ होगा। एक शत्रु इसमें बाधा डाल सकता है। उससे मेल न करें। उसे अपनी कोई बात न बताएँ। आपका आगे का समय अच्छा दिखाई देता है और आपको कहीं से धन की प्राप्ति हो सकती है।

अदद हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य ऐसा है जैसे शेर के साथ जूझना। कोई गरीब व्यक्ति तेरा शत्रु होगा जो तेरा कार्य बिगाड़ने का प्रयत्न करेगा। किसी से चुगली करके इस कार्य में बाधा डालेगा।

बअअ हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य के पूर्ण होने में कठिनाई है। यह कार्य ऐसा दिखाई देता है जैसा मनुष्य का जल में डूब जाना। अतः आपका यह कार्य सिद्ध नहीं होगा।

बअब हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य अत्यंत कठिन है। इस कार्य के पीछे तेरे बहुत से शत्रु बन गए हैं, जो इस कार्य को बिगाड़ेंगे। अतः तेरा यह कार्य पूर्ण नहीं होगा।

बअज हे पूछने वाले मनुष्य! तेरे द्वारा सोचा गया कार्य ठीक नहीं है।

जिस कार्य को तू अभी कर रहा है, वही कार्य कर। उसी में मन लगा। कार्य सिद्ध होगा और सुख की प्राप्ति होगी।

बअद हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध होगा, इसमें दो राय नहीं है। घबराना मत। मन बेचैन न कर। यह कार्य सिद्ध होगा।

बबअ हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य के पूर्ण होने की आशा न कर। इसमें शत्रु बाधा डालेगा। इस कार्य को न कर, इसमें तुझे लाभ नहीं होगा। उपाय करने पर भी कार्य की सिद्धि नहीं होगी।

बबब हे पूछने वाले मनुष्य ! तेरा बिगड़ा हुआ कार्य सिद्ध होगा। यह बात शत प्रतिशत सच है।

बबज हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध होगा। मन के भय को त्यागकर शुद्ध मन से कार्य कर।

बबद हे पूछने वाले मनुष्य! तूने जो कार्य सोचा है वह बहुत बड़ा है, तुझ अकेले से नहीं होगा। इसमें तेरा मित्र तेरी सहायता करेगा, फिर भी यह कार्य ढीला पड़ जाएगा। यह कार्य बड़ा कठिन है, होने की सम्भावना नहीं है।

बजअ हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य से तुझे स्त्री का लाभ होगा। कार्य कठिनता से सिद्ध होगा। काफी दुःख भी मिलेगा। आपका मन उचट जाएगा। तेरी इच्छा अधूरी रहेगी। धैर्य रखें। सोचा गया कार्य सिद्ध होगा।

बजब हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा मन चंचल है। मन की चंचलता को छोड़ दें तो आपका कार्य सिद्ध होगा। आपके शत्रु का नाश होगा।

बजज हे पूछने वाले मनुष्य! तू जिस कार्य के बारे में सोच रहा है, वह पूर्ण होगा। इस कार्य को सोच-विचार कर करना होगा। साथ ही अपने देवता को भी मनाना होगा, तब कार्य सिद्ध होगा।

बजद हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य बड़ा कठिन है। कार्य पूरा नहीं होगा। यह कार्य किसी दूसरे का लगता है जो सिद्ध नहीं होगा।

बदअ हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य कठिन है। इसके लिये तुझे काफी दिनों तक कष्ट भोगना पड़ेगा, इसलिये इस कार्य को करने का हठ छोड़ दे। जैसे लोहे की वस्तु पानी में डूब जाती है इसी तरह आपका कार्य भी पूरा नहीं होगा।

बदब हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य बड़ा कठिन है। इस कार्य के

होने की आशा बिल्कुल मत कर। तेरे बनते कार्य को दुश्मन बिगाड़ देगा। तेरे बहुत दुश्मन हैं इसलिये कार्य पूरा नहीं होगा।

बदज हे पूछने वाले मनुष्य! जिस कार्य की तेरे मन में चिन्ता है, तू उसे आरम्भ कर। तेरा कार्य पूर्ण होगा। मन में संतोष होगा। किसी दूसरे के कार्य में बाधा न डालना अन्यथा तेरे कार्य में भी बाधा आ सकती है। अपने कार्य को एकचित्त होकर कर, सफलता मिलेगी।

बदद हे पूछने वाले मनुष्य! अपना कार्य शुद्ध मन से कर। यह कार्य अनेक कष्ट झेलने पर काफी दिनों के बाद सिद्ध होगा।

जअअ हे पूछने वाले मनुष्य! तेरे द्वारा सोचा गया कार्य कठिन है, कार्य पूर्ण नहीं होगा। तू जिस काम में लगा है, वही कर। राम भजन कर तो शुभ होगा।

जअब हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य शुभ है। इस कार्य को करने से आपको सुख प्राप्त होगा, आनन्द मिलेगा। तेरा भला होगा और लाभ प्राप्त होगा।

जअज हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य बड़ा कठिन है। कार्य पूर्ण नहीं होगा। दुःख भोगना पड़ेगा। लम्बे समय के बाद, कष्ट उठाकर अगर हो भी गया तो तुझे पितृ दुःख मिलेगा।

जअद हे पूछने वाले मनुष्य! तू राम नाम का जाप कर, तभी तेरे कार्य सिद्ध होंगे।

जजअ हे पूछने वाले मनुष्य। तेरे कार्य में कुछ विलम्ब है। इस कार्य को करने की पूरी कोशिश कर, तभी तेरा कार्य सिद्ध होगा और मन को संतोष मिलेगा।

जजब हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य कठिन है। जिस प्रकार तेल के बिना दीपक, आग के बिना बाती नहीं जलती, उसी प्रकार आपका कार्य यत्न किये बिना सिद्ध नहीं होगा।

जजज हे प्रश्नकर्ता ! तेरा अभिष्ट कार्य सिद्ध होगा। अपने इष्ट देव की पूजा कर। इस कार्य को करने से तुझे चन्द्रमा की भाँति प्रकाश प्राप्त होगा। परिवार में शान्ति रहेगी। हर मनुष्य से प्रेम बढ़ेगा। शत्रु पर विजय प्राप्त होगी।

जजद हे पूछने वाले मनुष्य! अपने इष्ट देवता की पूजा कर। मन का क्रोध मिटेगा। कार्य सिद्ध होगा। मनोकामना पूर्ण होगी।

जदअ हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य कठिन है। इस कार्य को करने से भय पैदा होगा। मित्र ही तेरा शत्रु बन जाएगा और इस कार्य में बाधा डालेगा।

जदब हे प्रश्नकर्ता! इस कार्य को करने से तुझे सरकार की ओर से लाभ प्राप्त होगा। कार्य को एकचित्त होकर कर। कार्य सिद्ध होगा।

जदज हे पूछने वाले मनुष्य! आपके कार्य सिद्ध होंगे। आपकी स्त्री को भी सुख प्राप्त होगा। प्रभु आपका साथ देंगे। आपका भला होगा।

जदद हे प्रश्नकर्ता! तेरे बहुत से शत्रु हैं। उन पर विश्वास न करना। तेरा कार्य लम्बे समय के बाद सिद्ध होगा।

दअअ हे पूछने वाले मनुष्य! अपने मन को एकाग्र कर। तुझे हर प्रकार का लाभ होगा। बहुत सुख पाएगा।

दअब हे पूछने वाले मनुष्य! बहुत दिनों तक कष्ट भोगना पड़ेगा। तब पुत्र की प्राप्ति होगी। मनोकामना पूर्ण होगी। मन प्रसन्न रहेगा। बाद में दिन अच्छे व्यतीत होंगे।

दअज हे पूछने वाले मनुष्य! तेरी किसी अच्छे व्यक्ति से मित्रता होगी। सरकार की ओर से सम्मान प्राप्त होगा। सुख मिलेगा। स्त्री और धन लाभ होगा।

दअद हे प्रश्नकर्ता! यह कार्य कठिन है, पूर्ण नहीं होगा। आप इस कार्य की सिद्धि के लिये जो परिश्रम कर रहे हो वह विफल होगा, क्योंकि कार्य बनते-बनते भी बिगड़ जाएगा।

दबअ हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य को करने से आपका विवाद हो सकता है। मेरा कहना मान, वाद-विवाद को बढ़ावा न दे, तो कार्य सिद्ध हो सकता है।

दबब हे पूछने वाले मनुष्य! तेरे कार्य को एक व्यक्ति बिगाड़ सकता है, जो तुझसे शत्रुता रखता है। देव और पितृदोष भी है लेकिन फिर भी आपको अच्छी वस्तु की प्राप्ति होगी और मन को संतोष होगा।

दबज हे पूछने वाले मनुष्य! अपने सोचे गए कार्य के प्रति शंका न करें। कार्य सिद्ध होगा। आपकी चिंता मिटेगी और लाभ होगा।

दबद हे पूछने वाले मनुष्य! प्रत्येक व्यक्ति से तेरे अच्छे सम्बंध बनेंगे

और मन संतुष्ट रहेगा।

दजअ हे पूछने वाले मनुष्य! आपका मन चिंताग्रस्त है। चंचलता छोड़ दें। हर कार्य को एकाग्रचित्त से करें। सभी कार्य सिद्ध होंगे।

दजब हे पूछने वाले मनुष्य! जिस कार्य को करने की आपकी इच्छा है, उस कार्य को करने के लिये यह समय ठीक नहीं है, इसलिये कार्य आरम्भ न करें। अगर इस कार्य को आरम्भ करोगे तो आपका शत्रु कार्य पूर्ण नहीं होने देगा।

दजज हे पूछने वाले मनुष्य! एकाग्र होकर सुन लें, आपका कार्य सिद्ध होगा। इस कार्य से आपको लाभ होगा और मन संतुष्ट होगा। धन लाभ भी होगा।

दजद हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य पूर्ण होने में शंका है। काफी प्रयत्न करने से तथा किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता से कार्य सिद्ध हो सकता है और चिंता दूर होगी।

ददअ हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य सिद्ध होगा। आपके मन में जो भय है कि शत्रु इस कार्य में विघ्न डालेगा, यह निरर्थक है। शत्रु कार्य नहीं बिगाड़ सकेगा। वह कार्य में बाधा डालने में सफल नहीं होगा। आपका कार्य अवश्य पूर्ण होगा।

ददब हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य बड़ा कठिन है। इस कार्य को आरम्भ करने का अर्थ है शेर के मुख में हाथ डालना, इसलिये इस कार्य को मत करें।

ददद हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य शीघ्र पूर्ण होगा। सुख प्राप्त होगा। कार्य के मध्य में कोई व्यक्ति आपकी सहायता करेगा, तब आपका कार्य सिद्ध होगा। आपको सुख-शान्ति प्राप्त होगी। मनवांछित फल प्राप्त होगा। देवता आपसे रुष्ट है। उसकी पूजा करके उसे संतुष्ट करें। आपके सभी कार्य सिद्ध होंगे। आगे राम जाने।

जबअ हे पूछने वाले मनुष्य! तू हठ न कर। दूसरे की बात में न आना। अपने मित्र की बात पर विश्वास करके कार्य आरम्भ कर, तभी तुझे कार्य में सफलता मिलेगी।

जबब हे पूछने वाले मनुष्य! कार्य में सफलता मिलेगी, मन वांछित फल प्राप्त होगा। आपका कुलदेवता भी आपकी रक्षा करेगा। प्रसन्नचित्त होकर उसकी पूजा करें। तेरा कार्य सिद्ध होगा।

|जबज| हे पूछने वाले मनुष्य। तेरा कार्य बड़ा कठिन है, यह सिद्ध नहीं होगा। आपके बहुत से दुश्मन हैं। आपके अपने मित्र भी शत्रु का साथ देते हैं। इसलिए यह कार्य पूर्ण नहीं होगा।

|जबद| हे पूछने वाले मनुष्य! धैर्य रख। तेरा कार्य सिद्ध होगा। देवता तथा पितर का कोप है। उनकी पूजा कर तब कार्य सिद्ध होगा।

इति सिद्धम् अबजादि होरा समाप्त

|1| दजअ के बाद की चार होरा–दजब, दजज दजद, तथा ददअ उपलब्ध पाण्डुलिपि में नहीं है, जो मूल पाण्डुलिपि में है, अतः इनका अनुवाद करना यहाँ उचित समझा गया है।

|2. मूल पाण्डुलिपि के अनुसार जबअ, जबब जबद, तथा जबद की होरा का स्थान जअद के बाद है।

घर से जिस समय निकले उस समय के बारह लग्नों के शकुन

1 मेष लग्न में नीच स्त्री मिली। दूसरे चरण में आपने किसी स्त्री से बात की। उस समय तीन व्यक्ति उपस्थित थे। तीसरे चरण में ब्राह्मण मिला। चौथे चरण में कोई गरीब आदमी मिला।

2 वृष लग्न में प्रथम चरण में धन सहित शूद्र मिला। दूसरे चरण में गौ मिली। तीसरे चरण में कुत्ता मिला। चौथे चरण में स्त्री ने आपसे यह बात कही कि मेरी तरफ से प्रश्न करना।

3 मिथुन लग्न में पहले निम्न जाति के व्यक्ति से बात की। दूसरे चरण में स्त्री सामने आई। तीसरे चरण में कुष्ठ रोगी मिला। चौथे चरण में तीन या पाँच व्यक्ति मिले।

4 कर्क लग्न में पहले आपको सरकारी कर्मचारी मिला। उसके साथ कुछ लेनदेन किया। दूसरे चरण में नीच आदमी सामने आया, जिससे आपकी शत्रुता है। तीसरे चरण में स्त्री और धन मिला। चौथे चरण में मृग मिला।

5 सिंह लग्न में पहले परिवार में वाद-विवाद हुआ। दूसरे चरण में आपका मन घबराया। तीसरे चरण में चौपाया और कुटिल स्त्री मिली। चौथे चरण में पाँच व्यक्ति मिले जिनमें तीन दूसरी जाति के थे।

6 कन्या लग्न में पहले सन्त मिला, साथ में नीच व्यक्ति भी था, उस समय कौआ भी बोला। दूसरे चरण में सामने मकान दिखाई दिया, उस समय आपके हाथ में अन्न था। तीसरे चरण में पक्षी बोला जिसका मुख पूर्व की ओर था, आपके पास किसी दूसरे की वस्तु थी। चौथे चरण में नीच कर्म देखा।

7 तुला लग्न में पहले चरण में घर में वाद-विवाद हुआ। दूसरे चरण में चोरी की बात सुनी या घर में चोरी हुई। तीसरे चरण

में ब्राह्मण मिला या लाल रंग के पशु को लड़ते देखा। चौथे चरण में उत्तम वस्त्र मिला।

8 पहले चरण में कौए के दर्शन हुए। दूसरे चरण में स्त्री से बात हुई। तीसरे चरण में आपने कुल-देवता को मनाया या सामने मंदिर दिखाई दिया। चौथे चरण में कोई मनुष्य मिला। आपके घर में ब्राह्मण जाति का पितर है।

9 धनु लग्न में आपने देवता के दर्शन किये फिर धन का लेन-देन हुआ। दूसरे चरण में स्त्री के विषय में बन्धु के साथ वाद-विवाद हुआ। तीसरे चरण में चोरी हुई या चोरी की बात सुनी। चौथे चरण में पश्चिम की दिशा में दो आदमी चलते हुए दिखाई दिये।

10 मकर लग्न में पहले सरकारी कर्मचारी या नेता मिला। काले रंग की गौ मिली। जल भी मिला। दूसरे चरण में महात्मा के दर्शन हुए। तोसरे चरण में पैसा मिला या भाग्यवान् स्त्री मिली। चौथे चरण में किसी के साथ वाद विवाद हुआ।

11 कुम्भ लग्न में चलते हुए पहले देव दर्शन हुए। दूसरे चरण में सामने आपका पुत्र मिला या चार व्यक्ति मिले। तीसरे चरण में किसी पितर की स्थापना दिखाई दी। चौथे चरण में धन मिला।

12 मीन लग्न में चलते समय पहले चरण में कुलटा स्त्री मिली जिसके पुत्र नहीं हैं, कलंकी मिला और पशु मिला। दूसरे चरण में चौपाया (घोड़ा-खच्चर) मिला। तीसरे चरण में आप कुछ पीछे हटे और मन घबराया। चौथे चरण में आपने मांस खाया।

इति घर से निकलने के बारह लग्नों के शकुन

यात्रा पर जाने के वार शकुन

आदित्य (रविवार) के दिन दाहिनी ओर काँटे वाला एक वृक्ष दिखाई दिया। सोमवार कहता है कि कुलटा स्त्री ने बात की। मंगलवार बोलता है कि आपको अछूत स्त्री मिली। बुधवार बोलता है कि आपको कौआ मिला। वीरवार बोलता है कि आपको कोई शत्रु मिला। शुक्रवार बोलता है कि अंगहीन मिला। शनिवार बोलता है कि अन्न का लाभ हुआ या नीच जाति के व्यक्ति के दर्शन हुए।

इति वार शकुन

लग्नावाली
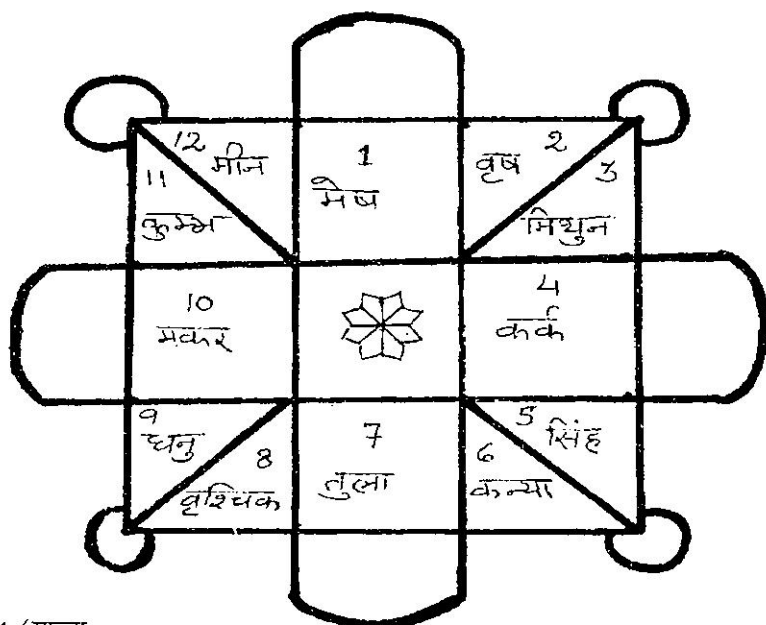
1. मेष लग्न में ब्रह्मा पूछता है और देवता कहता है, अर्थलाभ होगा। धन-धान्य की पूजा करें तब आपके घर में सुख-शांति होगी।
2. वृष लग्न में विष्णु पूछता है और नारद कहता है कि आपको हर वस्तु का लाभ होगा। शत्रु का नाश होगा और आपके घर में सुख-शांति होगी।
3. मिथुन लग्न में इन्द्र पूछता है और मंत्री कहता है कि आपके घर में हर वस्तु का लाभ होगा। घर में सुख और शांति होगी। परिवार में किसी को मान प्रतिष्ठा मिलेगी। आपके मन को शांति प्राप्त होगी।
4. कर्क लग्न में बुध ऋषि पूछता हैं और जमदग्नि ऋषि कहता है कि आपको लाभ होगा। असंख्य फल प्राप्ति होगी। इस बात को सत्य मानो। आपको सुख-प्राप्त होगा।
5. सिंह लग्न में तंतुरा पूछता है और धर्मराज कहता है कि आपको घर की चिन्ता है। देवी की पूजा करो और सत्य समझो कि आपको सुख प्राप्त होगा।
6. कन्या लग्न में पवन देवता पूछता है और पुरुष कहता है कि आपको लाभ होगा और लाभ होने से सुख और शांति प्राप्त होगी।
7. तुला लग्न में नारी पूछती है और देव कहता है कि लाभ होगा और सुख मिलेगा। इस बात को सत्य जानो। परिवार में सुख और शांति रहेगी।
8. वृश्चिक लग्न में इन्द्र पूछता है और गौतम ऋषि कहता है कि सत्य मानो आपका कार्य सफल होगा और परिवार में सुख और शांति होगी।
9. धनु लग्न में विश्वामित्र पूछता है और सहदेव कहता है कि आप कुलदेव की पूजा करो। सच्चे मन से काम करो तो सुख और शांति मिलेगी।
10. मकर लग्न में स्त्री कहती है कि अच्छे कर्म करो और अपने हाथ से दान करो तो घर में सुख और शांति प्राप्त होगी।
11. कुम्भ लग्न में ब्राह्मण पूछता है और ऋषि कहता है कि मन में जो चिन्ता है, वह दूर होगी। बन्धु के साथ मेल होगा। कार्य

सिद्ध होगा और सुख मिलेगा।

12 मीन लग्न में सरस्वती पूछे और वनिता कहे कि एकाग्रचित्त हो कार्य करें। सुख मिलेगा, मित्रों से मेल होगा। आपके मन में जो हठ है उसे छोड़ दें तभी आपके कार्य सफल होंगे। परिवार में सुख-शांति होगी। धन-धान्य, वस्त्र, पुत्र और पौत्र लाभ होगा।

इति लग्नावली सम्पूर्ण

राम नाम सत्य है, सत्य में ही विजय है।।

बारह लग्नों के शकुन

1. मेष लग्न में आपको निम्न जाति के मनुष्य के दर्शन हुए।
2. वृष लग्न में चार मनुष्य मिले।
3. मिथुन लग्न में परिवार की स्त्री मिली।
4. कर्क लग्न में बाघ की आवाज़ सुनाई दी या बाघ की बात हुई।
5. सिंह लग्न में उत्तम पुरुष से भेंट हुई।
6. कन्या लग्न में ब्राह्मण की पाँच कन्याएँ मिलीं।
7. तुला लग्न में लाल वस्त्र या मनुष्य मिला।
8. वृश्चिक लग्न में बाघ, शेर या साँप मिला।
9. धनु लग्न में मिस्त्री या नाई मिला और धन की बात चली।
10. मकर लग्न में अपने ही गोत्र की कृष्ण वर्ण की कोई स्त्री मिली।
11. कुम्भ लग्न में शाकिनी (डायन) मिली।
12. मीन लग्न में सर्प मिला या कोई शस्त्रधारी मनुष्य मिला।

इति बारह लग्नों के शकुन सम्पूर्ण

राम सत जी।।
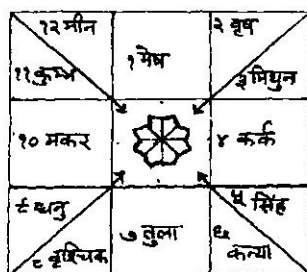
मे0 1 मेष लग्न कहता है कि आपको कुलदेवता का दोष है, जिससे धन-धान्य का नाश तथा परिवार में बार-बार किसी व्यक्ति को पीड़ा होती है, ऐसा दिखता है। आपके लिये शुभ दिखाई नहीं देता। स्त्री के लिये मृत्यु तुल्य कष्ट है। आप आग्नेय दिशा में देवी की स्थापना करके देवी की पूजा करें। तब आपके परिवार में शांति होगी।

वृ0 2 वृष लग्न कहता है कि आपको छिद्रा (भूत-प्रेत) दोष है। आपके घर में किसी को पेट में पीड़ा रहती है। आपके शरीर पर एक चिह्न है, जो आपके लिये अशुभ है। इससे आपको बार-बार कष्ट उठाना पड़ता है, इस बात को आप झूठ न समझें। चिह्न के प्रभाव के निवारण हेतु पूजा करें और भूत को भगाएँ, तब आपके कार्य शुभ होंगे। परिवार में शांति होगी।

मि0 3 मिथुन लग्न कहता है कि आपके घर में स्त्री को पीड़ा रहती है। पुत्र के वियोग में स्त्री चिंतित है। आपकी पत्नी को किसी स्त्री की कुदृष्टि पड़ने से सन्तान होकर भी न होने के बराबर है। मन में शांति नहीं है। बुद्धि भ्रष्ट हो रही है। भूत-प्रेत को भगाएँ। कुदृष्टि के लिये दूध-दही से देवी की पूजा करें तो शुभ होगा।

कर्क 4 कर्क लग्न कहता है कि बेताल का दोष है जो पश्चिम दिशा में है। घर में किसी न किसी को पीड़ा रहती है। इस कारण आपका मन दु:खी रहता है, आप पर देवी का कोप है। श्रद्धा भक्ति से देवी की पूजा करें, जप करवाएँ, तब परिवार में सुख

और शांति होगी।

सि0 5 सिंह लग्न कहता है कि आपको इष्ट का कोप है, इसलिये आपके परिवार में अशांति है। धन की हानि होती है। यह इष्ट आप द्वारा पूजित न होने के कारण रुष्ट है। इष्ट के कोप के कारण कोई भूत बनकर आपके परिवार को हानि पहुँचाता है। इसलिये इष्ट और क्षेत्रपाल की पूजा करें, तब परिवार में सुख व शांति होगी।

क0 6 कन्या लग्न कहता है कि आपको ब्राह्मण जाति की शाकिनी (डाकिनी)का दोष है। परिवार में किसी को पेट में पीड़ा रहती है। यह डाइन आपके निकट की ही है। इसके साथ ही प्रेत का भी दुःख है। प्रेत को भगाने का उपाय करें। डाकिनी के कोप को उलटा दें, तब परिवार में सुख और शांति होगी।

तु0 7 तुला लग्न कहता है कि परिवार में जो कष्ट है वह देवी के कोप के कारण है। आपके घर में किसी न किसी प्रकार की हानि होती रहती है। दूध, दही और चावल से देवी की पूजा करें। भूत का भी दुःख है। इसे भगाने का उपाय करें। चण्डी की पूजा करें, तब आपको शांति मिलेगी।

वृ0 8 वृश्चिक लग्न कहता है कि जो आपके घर में धन-धान्य की हानि होती है, वह कुलदेवता के कोप के कारण है, इसलिये आप अपने कुलदेवता की पूजा करें। सत्यनारायण की पूजा करें, तब परिवार में धन-धान्य का लाभ होगा।

ध0 9 धनु लग्न कहता है कि हर वर्ष आपकी किसी न किसी प्रकार की हानि होती रहती है। आपका आग्नेय दिशा में किसी मित्र के साथ वस्त्र के कारण विवाद हुआ। इसलिये मित्र के घर से प्रेत का कोप और मित्र का क्रोध लगता है, जिससे आपकी हानि होती है। मित्र को संतुष्ट कर प्रेत को भगा दें, तब आपको शांति प्राप्त होगी।

म0 10 मकर लग्न कहता है कि पितृदोष है और दक्षिण दिशा से मित्र के घर से प्रेत का कोप दिखता है, जो कि स्त्री के साथ चलता है। पितृदोष भी किसी स्त्री का है जिसके निवारण हेतु आपने पहले भी उपाय किया था। वह कार्य आपने शुद्ध मन से नहीं किया, इसलिये आपके घर में पीड़ा रहती है। बार-बार परिवार

में बीमारी आती है। ब्राह्मण से गृह में पूजा करवाएँ व हवन करवाएँ। मित्र के साथ समझौता करें और पितर का तीर्थ में जाकर पिण्डदान करें। गंगा में स्नान करें। प्रेत को भगाने का उपाय करें। देवता की पूजा करें। तब आपके परिवार में सुख और शांति होगी।

कु0 11 कुम्भ लग्न कहता है कि शंखनी (डाकिनी) का दोष है। ब्राह्मण के साथ भी आपकी शत्रुता है। आपके परिवार में कोई व्यक्ति पेट पीड़ा से दुःखी रहता है या मर गया है, घर में भूत का कोप इसका कारण है। उपाय करके भूत को भगाएँ, अपने कुलदेवता की पूजा करें। तब आपको सुख-शांति प्राप्त होगी।

मी0 12 मीन लग्न कहता है कि आपके परिवार में किसी को पीड़ा या बिना बीमारी के किसी को कमज़ोरी महसूस होती है। राजदरबार में भी आपका किसी के साथ झगड़ा चला है। उसके शाप से भी आपको दुःख पहुँचता है और पीड़ा रहती है, ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं। जिसके साथ आपका विवाद है, उसे आपने झूठा वचन दिया इसलिये आपको उसका शाप लगता है। उसके साथ समझौता करें। अपने इष्टदेव को मनाएँ तो सुख-शांति मिलेगी।

लग्न होरा समाप्त

देव होरा

1. मंगल ग्रह यह कहता है कि भूमि का लाभ होगा और उसी भूमि से इष्ट (भूत) लगेगा। आपके परिवार पर इस भूत का प्रकोप होगा, अतः इस भूमि की शुद्धि करवाएँ। पूजा, जप, होम आदि करवाएँ, तब यह भूमि रास आएगी। किसी प्रकार की हानि नहीं होगी।

2. नारायण देवता कहता है कि तुझे देवता का दोष है। आपके परिवार में किसी स्त्री को पीड़ा रहती है। आप अपने कुलदेवता की पूजा करें, तब स्त्री को शांति मिलेगी और आपके सभी कार्य सिद्ध होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा।

3. सहदेव कहता है कि आपके घर में किसी ब्राह्मण का पितर है, जिसके कोप से आपको पुत्र सुख नहीं मिलता। पितृपूजा करें तब पुत्र लाभ होगा। आपके मन को शांति मिलेगी।

4. चौंसठ योगिनी ऐसा कहती हैं कि आपको जो शारीरिक पीड़ा है वह आकाश देवी के कोप के कारण है। एक छिद्रा (भूत) का कोप भी है। इनकी शांति के लिये पूजा करें, तब सुख प्राप्त होगा और लाभ मिलेगा।

5. चन्द्रदेव कहता है कि आपके घर पर देवता का कोप है। इसलिये चन्द्र का शुद्ध मन से व्रत करें और चन्द्र देवता का मनन करें, तब देह को शांति मिलेगी और लाभ होगा।

6. आदित्य देवता कहता है कि आपको पुत्र का वियोग है। आप पुत्र वियोग से चिंतित हैं। पुत्र प्राप्ति के लिये सूर्य देवता का व्रत करें व सूर्य की पूजा करें, तभी पुत्रलाभ होगा। मन की चिंता दूर होगी और कार्य सिद्ध होंगे।

7. भूमिदेव कहता है कि आपके घर पर भूत-बेताल का कोप है।

इसके निवारण के लिये भूत-बेताल की पूजा करके इन्हें भगा दें, तभी कार्य पूर्ण होंगे और परिवार में सुख और शांति होगी।

8 बुध ग्रह कहता है कि आपके परिवार में किसी व्यक्ति को पीड़ा है। यह देवी और छिद्रा का कोप है। आप देवी और छिद्रा की अन्न से पूजा करें, आपको लाभ होगा और शांति मिलेगी।

9 वीर देवता ऐसा कहता है कि आपके घर पर किसी ने टोना किया है और डाकिनी का भी कोप है। इसके निवारण हेतु अमावस्या के दिन आटे की बकरी बनाएँ और चार बत्ती वाला दीपक जलाकर टोने और डाकिनी के प्रभाव को समाप्त करें। गृहशुद्धि के लिये हवन करवाएँ, तब सुख मिलेगा।

10 शुक्र ग्रह ऐसा कहता है कि भूत की छाया के कारण पशु की हत्या होती है। इसलिये आप जल धर्म करें अर्थात् प्याऊ लगवाएँ। भूत भगाने के लिये उपाय करें, तब आपको किसी प्रकार की हानि नहीं होगी।

11 शनि ग्रह यह कहता है कि आपके घर की भूमि के साथ की भूमि पर भूत का वास है। उसी भूत का आपको कोप लगता है। अपनी भूमि और उस भूमि के बीच में सीमा डालें। आटे की बकरी बनाकर काला रंगें और भूत को उसकी बलि दें, तब आपको सुख और शांति मिलेगी।

12 राहु देवता कहता है कि आपके परिवार में मशाण (श्मशान का भूत) का कोप है। आप अपने घर में पूजा करवाएँ तभी आपको शांति प्राप्त होगी और पुत्रलाभ होगा।

13 केतु ग्रह ऐसा कहता है कि गुरु के शाप के कारण आपको शारीरिक कष्ट मिलता है। जो कार्य आप कर रहे हैं, वह कार्य आपने अशुभ मुहूर्त में आरम्भ किया है, इस कारण कार्य करते हुए आपको पीड़ा हुई। पूर्व दिशा में जो आपका कुलदेवता है, उसकी पूजा करें और नवग्रह की पूजा करें तब सुख और शांति मिलेगी।

14 नृसिंह देवता कहते हैं कि आपके घर पर भूत-बेताल का कोप है। वह आपकी हर प्रकार की हानि करता है। इस कारण परिवार में अशांति रहती है। उत्तर दिशा में लाल वस्त्र सहित पूजा करके, आटे का मेढ़ा बनाकर बलि दें, तब आपको अन्न,

धन तथा वस्त्र का लाभ होगा।

15 गोरखनाथ ऐसा कहता है कि आपके घर को निम्न जाति के व्यक्ति का शाप लगा है, साथ में डाइन का कोप भी है। इसलिये हर कार्य में बाधा आती है, अन्न-धन की हानि होती है। आप अपने घर में चन्द्र की पूजा करें और गोदान करें। निम्न जाति के व्यक्ति के क्रोध को शांत करें, तब आपको हर वस्तु का लाभ होगा और मन को शांति मिलेगी।

16 देवी दुर्गा ऐसा कहती है कि आपको किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती। आपके कार्य सिद्ध नहीं होते। शत्रु की जीत होती है। वे हर कार्य में आपसे आगे रहते हैं। इसका कारण यह है कि आपको कुलदेवता का कोप लगा है। आपने कुल देवता के निमित्त यज्ञ करवाने की मनौती की थी, जिसे पूरा नहीं किया। आपके घर में कन्या के पितर का दोष भी है। कन्या के पितर की जलस्थान में स्थापना करें, पूजन करवाएँ। गोदान करें। कन्या पूजन करके उन्हें वस्त्रदान दें। देवता की मनौती पूरी करें, तब आपके कार्य सिद्ध होंगे, मन में संतोष होगा।

17 सरस्वती देवी ऐसा कहती है कि आपको जो पुत्र चिंता है, वह पिछले कर्मों के फल के कारण है। पुत्रप्राप्ति के लिये अपनी स्त्री सहित एकादशी का व्रत करें। पूजन व दान करें, तब आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। मन में संतोष होगा तथा लाभ प्राप्त होगा।

18 मेघराजा ऐसा कहता है कि दो वर्ष पहले से आपके परिवार में स्त्री को पीड़ा रहती है, जो कभी ठीक होती है तो कभी पुनः आरम्भ होती है। इसका कारण यह है कि दक्षिण दिशा से प्रेत की छाया पड़ी है। इस प्रेत की पूजा करें और दक्षिण दिशा की ओर भगा दें, तब शरीर को सुख मिलेगा।

19 गणपति देवता ऐसा कहता है कि आपकी स्त्री को लाभ नहीं है। उस स्त्री को मायके के कुलदेवता का कोप है तथा मायके के इष्ट का दोष है। इस देवता तथा इष्ट की एकचित्त होकर पूजा करें, तब स्त्री को लाभ होगा, ऐसा दिखाई देता है।

20 इन्द्र राज ऐसा कहता है कि आपको डाकिनी का दोष है। अन्न खाते समय आप पर डाकिनी की छाया पड़ी। निवारण हेतु कैंथ की लकड़ी में कील गाड़ कर उसमें कच्चे सूत के धागे के तीन

फेरे लपेट कर चौराहे में दबा दें, तब कोप शान्त होगा और आपका भला होगा, मन को शांति मिलेगी।

21 ब्रह्म देवता कहता है कि आपके गृह को क्षेत्रपाल और देवी का दोष लगा है। लड्डू का प्रसाद बाँटें और आटे का सांप बनाकर उत्तर दिशा में बलि दें। देवी की मनौती करें, तब सुख और शांति मिलेगी तथा धन-धान्य की वृद्धि होगी।

22 कुम्भ देवता ऐसा कहता है कि आप गृह शांति करवाएँ। आपके घर में श्रावण मास में टोना किया गया है। फिर भी कुलदेवी आपकी रक्षा कर रही है और अशांति नहीं फैलने दे रही। इसलिये आप अपने घर में जप, हवन करें और देवी की पूजा करें तो आपके सब कार्य सिद्ध होंगे। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। परिवार में सुख-शांति होगी। धन-धान्य, पुत्र तथा वस्त्र लाभ होगा।

इति देवहोरा सम्पूर्ण

स्थान शोधन की होरा

मे0 1 मेष राशि कहती है कि आपके स्थान में कुत्ते और बिल्ली का वाहन है और आपके घर में संतान नहीं है। आपके घर में स्वगोत्र का पितर, एक बालक का पितर और एक स्त्री का पितर है। मेष राशि ऐसा कहती है कि आपके कुल में से कोई परिवार पूर्व या पश्चिम की दिशा में रहते थे जिनका नाश हो गया है।

वृ0 2 वृष राशि कहती है कि आपके स्थान में सर्प का वाहन है। आपके परिवार के दो घर हैं। आपके घर में गर्भिणी स्त्री का पितर है, जिसका आपको संतान के लिये दोष है। इस पितर की दक्षिण या उत्तर की दिशा में स्थापना करें।

मि0 3 मिथुन राशि कहती है कि आपके स्थान में बिल्ली का वाहन है। धन का नाश हो रहा है। आपने ब्राह्मण का धन लूटा, जिसमें दो परिवारों के व्यक्ति शामिल थे। मित्रों में विवाद होने के कारण पराई स्त्री की हत्या हुई। जिस भूमि पर आपका घर है वह भूमि किसी दूसरे की है। जिनसे यह भूमि ली है, वह पूर्व या उत्तर दिशा में रहते थे। उनके कुल का नाश हो गया है।

क0 4 कर्क राशि कहती है कि आपके स्थान में मेंढक का वाहन है। ऐसा लगता है कि आपके घर का विनाश हो सकता है। आग्नेय दिशा से आपके घर इष्ट आया है, जिसने किसी स्त्री के साथ प्रवेश किया है। यह आपके घर या तो साठ वर्ष पूर्व आया है या आने वाले साठ वर्ष तक रहेगा। यह इष्ट दक्षिण दिशा या उत्तर दिशा से आया है। जिस परिवार से यह इष्ट आया है, उस परिवार का नाश हो चुका है।

सिं0 5 सिंह राशि कहती है कि आपके स्थान में शेर का वाहन है।

धन का नाश है। आपकी लड़की की पीठ पर नाग का चिह्न है, जिससे आपको संतान का दुःख रहता है। आपके घर में एक स्त्री और एक बालक के पितर का कोप है। इष्ट दोष भी है। पशुओं की हत्या और हर प्रकार की हानि होती है। आग्नेय दिशा में धन की हानि हुई है। पश्चिम या उत्तर दिशा में आपके ही परिवार में से किसी का विनाश हुआ है।

|क0 6| कन्या राशि ऐसा कहती है कि आपके स्थान में गौ और भैंस का वाहन है। शुभ कार्य। शुभ स्थान। घर की भूमि के कारण दो स्त्रियों में झगड़ा है। इस कारण आपके घर में हर वस्तु का विनाश होता है। इन स्त्रियों में एक का मायका पूर्व दिशा में है तथा दूसरी का उत्तर दिशा में। जिस स्त्री का कोप है उसके मायके के परिवार का नाश हो चुका है।

|तु0 7| तुला राशि ऐसा कहती है कि आपके स्थान में बाघ या सर्प का वाहन है। आपके परिवार में किसी व्यक्ति को पीड़ा रहती है। आपके पहले जो अच्छे दिन थे, अब वे बुरे दिनों में बदल रहे हैं। पुरुष के कारण किन्हीं दो स्त्रियों का झगड़ा होता है। दोनों के बीच झगड़ा डालने वाली स्त्री किसी दूसरे परिवार की है। आपके घर में कोई संतान नहीं है। पुत्र हत्या हुई है। पूर्व या वायव्य दिशा में आपके कुल में से ही एक परिवार का विनाश हुआ है।

|वृ0 8| वृश्चिक राशि ऐसा कहती है कि आपके स्थान में हिरण और सर्प का वाहन है और आग्नेय दिशा से आपको भय है। पूर्व दिशा से आपको ब्रह्महत्या या अपने गोत्र के किसी व्यक्ति की हत्या का कोप दिखाई देता है। आपके कुल के किसी परिवार का उत्तर या वायव्य दिशा में नाश हो चुका है। आपके परिवार में हर वस्तु की हानि होती है। धन-धान्य की हानि होती है।

|ध0 9| धनु राशि ऐसा कहती है कि आपके स्थान में हिरण का वाहन है। हर वस्तु की हानि होती है। आपके घर में पराए गोत्र का व्यक्ति आया, जिसका पालन-पोषण इसी घर में हुआ। बाद में वाद-विवाद होने के कारण उसका शाप आपको लगा है। गृह की पूजा करें। जो व्यक्ति आपके घर आया था उसका घर पूर्व या उत्तर दिशा में था। उनका नाश हो चुका है। उन्हीं का

कोप है।

|म0 10| मकर राशि ऐसा कहती है कि आपके घर में हाथी का वाहन है। जिस कार्य में आप हाथ डालते हो, उस कार्य से ही हाथ धोना पड़ता है। एक पुरुष की बद्दुआ लगी है और अपने परिवार के किसी व्यक्ति की हत्या का दोष है। स्त्री हत्या हुई है। गृह में उलझनें रहती हैं और वाद-विवाद होता है। पूर्व या उत्तर दिशा में किसी बन्धुजन का नाश हुआ है, उन्हीं का कोप है।

|कु0 11| कुम्भ राशि ऐसा कहती है कि आपके स्थान में सिंह और कुत्ते का वाहन है। गृह पर किसी का शाप लगा है। गरीब ब्राह्मण की हत्या हुई है। स्त्री की भी हत्या हुई है। आपके घर में कोई संतान नहीं है। परिवार में बंटवारा हुआ और दक्षिण या उत्तर दिशा में आपके बन्धुजनों का नाश हुआ, उन्हीं का कोप है।

|मी012| मीन राशि ऐसा कहती है कि आपके स्थान में सिंह और कुत्ते का वाहन है। परिवार में कष्ट है। पहले विवाह कर लाई गई स्त्री को त्यागा है। उसके पश्चात् दूसरी स्त्री लाई गई। एक नीच ब्राह्मण ने आपके घर पर टोना किया, जिससे आपके घर में दुःख प्रकट होते हैं। निम्न घर की एक स्त्री की कुदृष्टि पड़ी है। एक स्त्री का पितर है, जिसका पूर्व में स्थान है।

इति स्थान शोधन होरा समाप्त

दिशाफल होरा
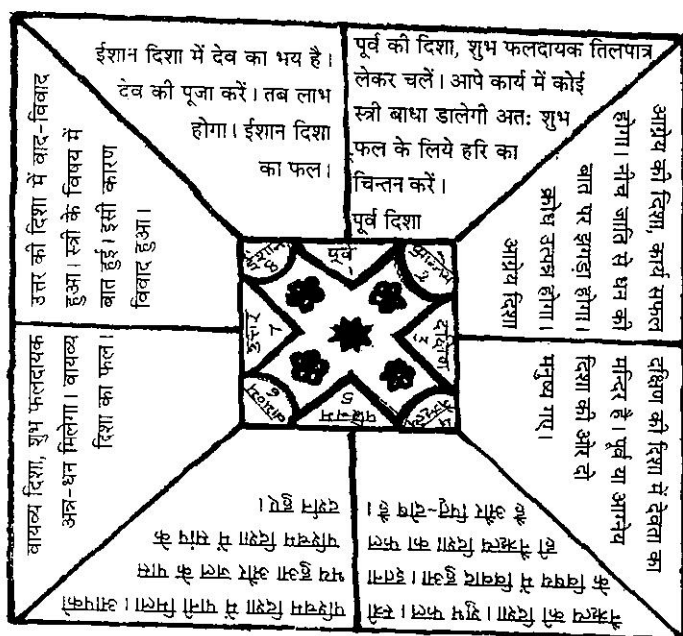
पू0 1 पूर्व की दिशा में चलते समय शुभ कार्य हुआ, फिर आपको एक मित्र मिला। उस समय आप दो व्यक्ति थे और आपकी आपस में धन के विषय में बातचीत हुई तथा वाद-विवाद हुआ। इति पूर्व दिशा फल।

आ0 2 आग्नेय दिशा (पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा) से चलते समय साँवले वर्ण का व्यक्ति मिला। आपके दाहिने हाथ में वस्त्र था। आपका कार्य शुभ नहीं है। आपका प्रश्न स्त्री या भूमि से सम्बंधित है। भूमि खेती-बाड़ी करने योग्य है। स्त्री का प्रश्न बीमारी से सम्बंधित है। इति आग्नेय दिशा फल।

द0 3 दक्षिण दिशा से आए हे प्रश्नकर्ता! आपका पुत्र बीमार है। उसकी बीमारी बुरी ग्रह दशा के कारण है। इसके निवारण के लिए ब्राह्मण से ग्रह शांति हेतु पूजा करवाएँ तब शांति मिलेगी।

इति दक्षिण दिशा फल।

|नै0 4| नैऋत्य (दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा) दिशा से आए मनुष्य आप भूत भय से चिंतित हैं। यह भय एक वर्ष से चला आ रहा है। आपके कोई संतान नहीं है। आपके घर में किसी पितर का दोष दिखाई देता है। आप पितृ तर्पण करें और उसकी स्थापना करें। आपको संतान की प्राप्ति होगी। इति नैऋत्य दिशा फल।

|प0 5| पश्चिम दिशा से आए प्रश्नकर्ता। आपके घर में अन्न और धन की कमी है। आपको अपने कुलदेवता का कोप है। इसी कारण धन-धान्य की हानि और संतान से क्लेश मिलता है। इस कष्ट के निवारण हेतु कृष्णपक्ष में उत्तर दिशा की ओर गोदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएँ और कन्यापूजन करें। कुलदेवता की पूजा करें, तब आपको अन्न तथा धन का लाभ होगा। परिवार में संतान सुख प्राप्त होगा। मन को शांति मिलेगी। इति पश्चिम दिशा फल।

|वा0 6| वायव्य (पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा) दिशा से आए मनुष्य! पहले आपको जल के पास ताम्बे का पात्र दिखाई दिया। उसके बाद घर की ही स्त्री मिली, जो देवी की उपासक है। उसका पीला वर्ण है, वह स्त्री पानी के पास कपड़े धोती हुई मिली। आपके घर में भूत का कोप है जिससे परिवार में शांति नहीं है। आप चण्डी देवी की पूजा करें तभी आपको सुख-शांति प्राप्त हो सकती है। आते समय बीच राह में भोजन किया। इति वायव्य दिशाफल।

|उ0 7| उत्तर दिशा से आए प्रश्नकर्ता! आपके घर में देवता का कोप है। घर में आपस में ही झगड़ा रहता है। आपके घर में कोई व्यक्ति भ्रष्ट हो गया है। उसकी कुबुद्धि का कारण यह है कि उसने किसी स्त्री से झगड़ा किया। उसी स्त्री के शाप से उसकी बुद्धि भ्रष्ट हुई। आप जो भी कार्य करते हो उससे फल की प्राप्ति नहीं होती। घर में किसी न किसी को बीमारी लगी रहती है। बीमारी का कारण पितृदोष है। इसीलिये घर में कष्ट रहता है। इति उत्तर दिशा फल।

|ई0 8| ईशान दिशा (पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा) से आए

प्रश्नकर्ता! आपका कार्य सिद्ध होगा। आप घर से पाँच व्यक्ति साथ चले। आपकी आपस में धन के सम्बंध में बात हुई। आप दूसरे के हित के लिये प्रश्न करने आए हैं। आप परोपकारी लगते हैं। इति ईशान दिशा फल।

इति अष्ट दिशा होरा सम्पूर्ण

रामसत जी। अथ नवग्रह की होरा

|1.आ0| आदित्य (रवि) देवता ऐसा कहता है कि जल के समीप गौ हत्या हुई, आपको उसका कोप लगा है। निवारण हेतु काला वस्त्र, काँसे का पात्र तथा गोदान करें, तब भला होगा।

|2. च0| चन्द्र देवता कहता है कि आपके परिवार में जिस व्यक्ति को पीड़ा है, उसे देवी का दोष लगा है। देवी की पूजा करें। ब्राह्मण को दान दें, तब लाभ होगा।

|3.भौ0| भौम देवता कहता है कि आपके घर पर भूत की छाया पड़ी है और पुत्ररहित डाकिनी का भी कोप है। देवता का दोष भी लगा है। श्मशान में आप भयभीत हुए हैं। पितृदोष है। पितृ-पूजा करें। लाल वस्त्र दान करें तो शुभ होगा। सुख और शांति मिलेगी।

|4. बु0| बुध देवता ऐसा कहता है कि आपको बालक के पितर का दोष लगा है इसलिये आप संतान की ओर से दु:खी हो। पितृपूजा करें, स्वर्ण दान करें तब भला होगा। संतान की ओर से सुख प्राप्त होगा।

|5.जी0| वृहस्पति देवता कहता है कि आपका परिवार कष्ट में है। आप अपने कुल पुरोहित को साथ लेकर कुलदेवता की पूजा करें, तब शुभ होगा। कष्टों से छुटकारा मिलेगा, सुख-शांति प्राप्त होगी।

|6.शु0| शुक्र देवता कहता है कि आपको देवता तथा देवी का कोप है। परिवार में किसी व्यक्ति को पीड़ा दिखाई देती है। शंखिनी देवी का भी कोप है। कुलदेवता तथा देवी की पूजा करें। तभी दु:ख का नाश होगा और सुख की प्राप्ति होगी।

|7. श0| शनि देवता ऐसा कहता है कि आपके परिवार में ब्राह्मण की हत्या हुई है। इसलिये आपके परिवार पर कष्ट आते हैं। ब्राह्मण

के पितर को शांत करने के लिये कांस्य पात्र और ताम्बे के पात्र तथा गौ का दान करें और अपने घर में यज्ञ करें, तब आपको ब्रह्म हत्या के कोप से शांति मिलेगी।

8.रा0 राहु देवता ऐसा कहता है कि निम्न जाति के व्यक्ति की हत्या का दोष है। उसी हत्या का पितर है। उस पितर की स्थापना ज़मीन में या पानी के तालाब के पास करें, तब सुख प्राप्त होगा।

9. के0 केतु देवता कहता है कि निम्न जाति के व्यक्ति की हत्या का दोष है। गो हत्या और बिल्ली की हत्या हुई है। हत्या के दोष के निवारण हेतु 101 बिल्लियों को भोजन खिलाएँ। यह आवश्यक नहीं कि सभी बिल्लियों को एक समय में ही खिलाया जाए। प्रतिदिन एक बिल्ली के हिसाब से 101 दिन में भी भोज कराया जा सकता है और यह विधि पूरी की जा सकती है। तब सुख प्राप्त होगा।

इति नवग्रह होरा सम्पूर्ण

एक पाशटी होरा

1 पहली होरा कहती है कि कुलदेवता के रुष्ट होने के कारण आपको धन का लाभ नहीं होता है। भूमि के लिये बंधु के साथ झगड़ा हैं इसलिये बंधु का शाप लगा है। शारीरिक कष्ट भी बंध ु तथा देवता के कोप के कारण ही है। आपको पितृदोष भी है। पीतर तथा देव की पूजा करें और बन्धु के साथ समझौता करें, तब शांति होगी।

2 दो की होरा कहती है कि आपको धन तथा वस्त्र का लाभ है। आपके परिवार की एक स्त्री व्याधिग्रस्त है। आपके कुल का एक बंधु दूर रहता है। उसके साथ आपका विवाद हुआ है। उसी का शाप लगा है। इसी शाप के कारण आप पर छिद्रा (भूत) की छाया पड़ी। बंधु के साथ समझौता करें। भूत को भगाएँ तब आपको सुख-शांति प्राप्त होगी।

3 तीन की होरा कहती है कि आपका प्रश्न सरकार से सम्बंधित है। आपके परिवार में किसी व्यक्ति को पीड़ा रहती है। आप अपने कुलदेवता की पूजा करें। आपको पितृदोष भी लगा है। पितर की पूजा करें, तब सुख और शांति प्राप्त होगी।

4 चार की होरा कहती है कि आपकी संतान को पीड़ा रहती है और स्त्री की हानि है। एक स्त्री का शाप लगा है और उसके साथ ही देवी का दोष भी है। कन्या का पितर है। दक्षिण दिशा में पानी के पास कन्या के पितर की स्थापना करें। स्त्री के कोप को शांत करें तभी आपको सुख व शांति प्राप्त होगी।

इति चार होरा समाप्त

इस होरा में एक बार पाशा फेंकना और उसी होरा का प्रश्नफल विचारना।

रामसत जी

सूतक के स्थान पर जितनी स्त्रियाँ थीं उनका फलादेशः—

मेष — मेष लग्न में बालक का जन्म हुआ। उस समय वहाँ पाँच स्त्रियाँ थीं।

वृष — वृष लग्न में बालक के जन्म के समय वहाँ दो स्त्रियाँ थीं।

मिथुन — मिथुन लग्न में बालक के जन्म के समय उस स्थान पर तीन स्त्रियाँ थीं।

कर्क — कर्क लग्न में बालक के जन्म के समय पाँच स्त्रियाँ थीं।

सिंह — सिंह लग्न में बालक के जन्म के समय प्रसूति गृह में तीन स्त्रियाँ थीं।

कन्या — कन्या लग्न में बालक के जन्म के समय प्रसूति गृह में तीन स्त्रियाँ थीं।

तुला — तुला लग्न में बालक के जन्म के समय छः स्त्रियाँ उपस्थित थीं।

वृश्चिक — वृश्चिक लग्न में बालक के जन्म के समय तीन स्त्रियाँ उपस्थित थीं।

धनु — धनु लग्न में बालक के जन्म के समय नौ स्त्रियाँ उपस्थित थीं।

मकर — मकर लग्न में बालक के जन्म के समय तीन स्त्रियाँ थीं।

कुम्भ — कुम्भ लग्न में बालक के जन्म के समय दो स्त्रियाँ थीं।

मीन — मीन लग्न में बालक के जन्म के समय तीन स्त्रियाँ उपस्थित थीं।

इति सूतक के स्थान पर जितनी स्त्रियां थीं उनका फलादेश कहा गया

अथ जन्मलग्न फलादेश

मिथुन मिथुन लग्न में पैदा हुए जातक के जन्म के समय वहाँ पर उन्हीं के कुटुम्ब के तीन पुरुष और छः स्त्रियाँ उपस्थित थीं। पिता घर पर नहीं थे। बालक के समीप दीपक जला हुआ था।

कर्क कर्क लग्न में पैदा हुए जातक का सिर उत्तर दिशा की ओर था। पिता घर में ही थे। बालक धीरे से रोया और उसे छींक आई। उस समय चार स्त्रियाँ वहाँ पर थीं । एक अन्य स्त्री बाद में आई। कुछ दूरी पर दीपक जला था। बालक के शरीर पर लहसुन का चिह्न है। माँ को बच्चे के जन्म के समय भारी कष्ट हुआ।

सिंह सिंह लग्न में पैदा हुए जातक का सिर पूर्व की ओर था। बालक पैदा होते ही रोया। पिता घर में ही था। उस समय वहाँ तीन स्त्रियाँ थीं और एक बाद में आई। दरवाज़े पर दीपक जला हुआ था।

कन्या कन्या लग्न में जन्मे शिशु का सिर पश्चिम की ओर था। पिता घर में नहीं था। बालक जन्म के बाद धीरे से रोया। वहाँ सात स्त्रियाँ थीं और एक दाई थी। वहाँ पीला वस्त्र भी था। गर्भवती ने पहले खटरस भोजन किया था। सामने दीपक जला हुआ था।

तुला तुला लग्न में पैदा हुए शिशु का सिर पश्चिम की ओर था। पैदा होते ही बालक रोया। बाप घर पर नहीं था। बालक के दाहिनी ओर वस्त्र थे। माँ को बालक के जन्म के समय अधिक कष्ट नहीं हुआ इसलिये खुशी हुई। बालक का जन्म भूमि पर हुआ। बालक ने जन्म लेते ही करवट ली।

वृश्चिक वृश्चिक लग्न में पैदा हुए शिशु का सिर उत्तर की ओर था।

पिता घर में नहीं था। शिशु के गले में जरायु लिपटा था। प्रसूति गृह में पहले छः स्त्रियाँ थीं, बाद में एक और स्त्री आई। बालक ने जन्म लेते ही छींक मारी। गर्भवती ने पुत्र जन्म से पहले लाल रंग की खाद्य वस्तु खाई। माँ को जन्म देते समय भारी कष्ट हुआ और पिता को भी भारी कष्ट हुआ।

धनु धनु लग्न में पैदा हुए शिशु का सिर पूरब की ओर था। पिता घर में ही था। तीन दाइयाँ थीं। एक गर्भवती स्त्री बाद में आई। भाग्यवान जातक पैदा हुआ। पिता को लाभ हुआ। स्त्री ने पुत्रजन्म से पहले पीले रंग की खाद्य वस्तु खाई। उसके बाद निम्न जाति की स्त्री आई।

मकर मकर लग्न में पैदा हुए जातक का सिर दक्षिण दिशा की ओर था। पिता घर से बाहर था। जन्म लेते ही बालक ने छींक मारी। प्रसूता के पास पहले दो स्त्रियाँ थीं। बाद में नीच जाति की स्त्री आई। गर्भवती स्त्री ने पुत्र जन्म से पहले काले रंग का खाद्य खाया।

कुम्भ कुम्भ लग्न में पैदा हुए जातक का सिर पश्चिम की ओर था। पिता घर में था। जातक के जन्म के समय माँ को बहुत कष्ट हुआ। वहाँ दो दाइयाँ थीं। बालक जन्म लेते ही रोया। बालक के शरीर पर लहसुन का चिह्न है। प्रसूता के पास तीन स्त्रियाँ पहले थीं और एक बाद में आई।

मीन मीन लग्न में पैदा हुए जातक का सिर उत्तर की ओर था। दाई उच्च जाति की थी। गर्भवती स्त्री ने पुत्र जन्म से पहले सफेद खाद्य वस्तु खाई। पुत्र जन्म के समय तीन स्त्रियाँ उपस्थित थीं।

इति जन्मलग्न फलादेश सम्पूर्ण
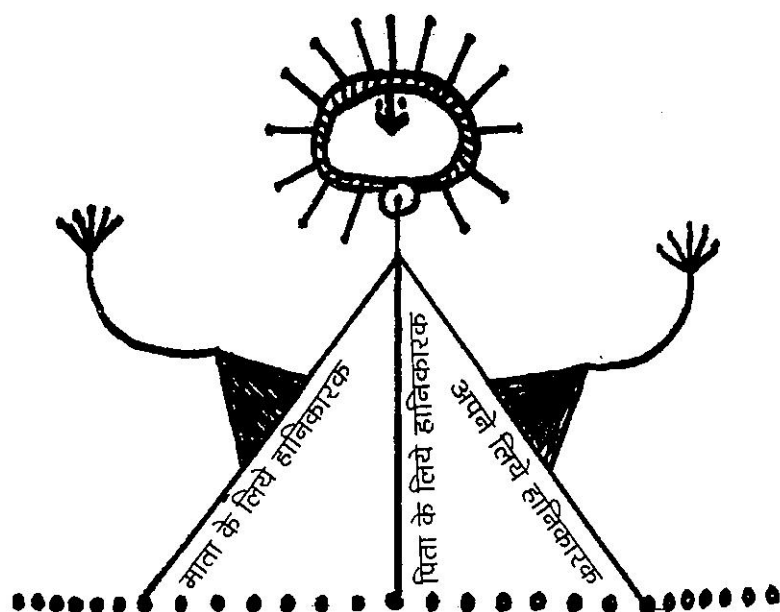
जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसी नक्षत्र से गणना आरम्भ करके जिस नक्षत्र में बच्चे का जन्म हो उस नक्षत्र तक गिनें। यदि जन्म नक्षत्र पहली डाँडी में आए तो पुत्र माता के लिये हानिकारक समझा जाता है। यदि छत्र में जन्म नक्षत्र आए तो जातक पिता के लिये हानिकारक है। यदि जन्म नक्षत्र तीसरी डाँडी में आए तो जातक को स्वयं के लिये कष्ट होता है।

यदि जन्म नक्षत्र छत्र की डाँडी पर आए तो कष्ट निवारण हेतु चाँदी का छत्र, तीन किस्म के वस्त्र और बकरी की पूजा कर वे वस्तुएँ ब्राह्मण को दान करें। तभी ग्रहों की शांति होगी।

आदित्य देवता
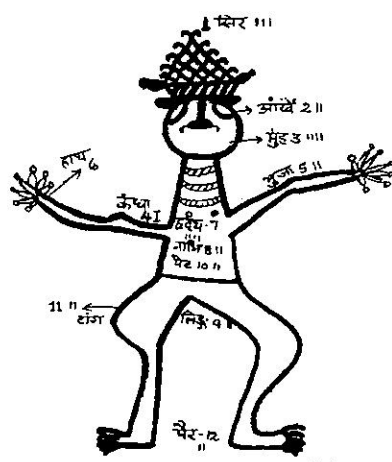
आदित्य का विचार लिखा जा रहा है :—

जन्म नक्षत्र से गणना आरम्भ की जाती है तथा जिस नक्षत्र में सूर्य हो वहाँ तक गणना की जाती है। यदि सूर्य सिर पर आए तो जातक को वस्त्र की कमी नहीं रहती। यदि सूर्य आँख पर आए तो सारे कार्य सिद्ध होते हैं। यदि सूर्य मुख पर आए तो अच्छे भोजन की प्राप्ति होती है। कंधे पर आए तो बोझ उठाने वाला होता है। यदि सूर्य बाजू पर आए तो जातक बलवान् होता है। यदि सूर्य हाथ पर आए तो उसे धन का लाभ होता है। यदि सूर्य हृदय में आए तो जातक उच्च विद्या प्राप्त करता है। नाभि में आए तो जातक अल्पायु होता है। यदि सूर्य जननेन्द्रिय पर आए तो पराई स्त्री को भगाने वाला होता है। यदि पेट पर आए तो जातक बहुत भोजन खाने वाला होता है। यदि सूर्य टाँग पर आए तो जातक भ्रमण करने वाला होता है। यदि सूर्य पैर पर आए तो जातक की बीस वर्ष के भीतर ही मृत्यु हो सकती है। इन सब के कष्ट निवारण हेतु सूर्य की पूजा करें। आगे ईश्वर की कृपा।

इति आदित्य विचार सम्पूर्ण

लग्नों के प्रश्न

मुहूर्त देते समय के प्रश्न

रामसत जी।।

1 मेष — मेष लग्न के मुहूर्त समय में बैल या ब्राह्मण मिला या गौ रम्भाई।

2 वृष — वृष लग्न में मुहूर्त देते समय ढोल की ध्वनि सुनाई दी या बैल रम्भाया अथवा आगे से आता हुआ मनुष्य दिखाई दिया।

3 मिथुन — मिथुन लग्न में मुहूर्त देते समय बैल या गर्भवती स्त्री मिली या आप आधे रास्ते से एक बार वापिस मुड़े।

4. कर्क — कर्क लग्न में मुहूर्त समय में ब्राह्मण मिला। उसके बाद तीन जातियों के व्यक्ति मिले।

5 सिंह — सिंह लग्न में मुहूर्त देते समय ढोल की आवाज़ सुनाई दी अथवा कोई सरकारी व्यक्ति दिखाई दिया। राजदरबार की ओर से कोई बात हुई।

6 कन्या — कन्या लग्न में मुहूर्त देते समय कोई स्त्री आई या बालक के रोने की आवाज़ सुनाई दी अथवा कोई पुरुष आया।

7. तुला — तुला लग्न में मुहूर्त देते समय आग के दर्शन हुए या कोई बिल्ली आई।

8. वृश्चिक — वृश्चिक लग्न में मुहूर्त देते समय बाघ की ध्वनि सुनाई दी या ढोल की ध्वनि सुनाई दी अथवा जलता हुआ दीपक दिखाई दिया।

9. धनु — धनु लग्न में मुहूर्त देते समय आप कोई वस्तु भूल गए और बाद में उसकी याद आई, फिर दो पुरुष आए।

10. मकर — मकर लग्न में मुहूर्त देते समय पश्चिम दिशा से ढोल की आवाज़ सुनाई दी या कोई कन्या आई।

11. कुंभ — कुंभ लग्न में मुहूर्त देते समय अपंग मनुष्य आया या गर्भवती स्त्री आई।

12. मीन — मीन लग्न में मुहूर्त देते समय सम्मोहन करने वाली स्त्री आई और उसने बात की।

इति मुहूर्त देते समय के शकुन

शनि देवता
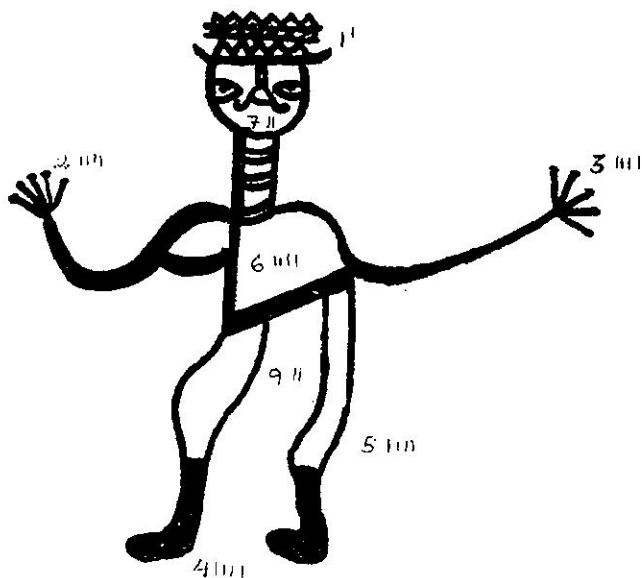
शनि ग्रह

रामसत जी। अथ शनि का विचार लिखा जा रहा है। जन्म नक्षत्र से गणना शुरू करके जिस नक्षत्र पर शनि हो वहाँ तक गणना की जाती है। फिर इसका फलादेश इस प्रकार विचारा जाता है– यदि शनि जातक के मुख पर आए तो वह मृदुभाषी होता है या मीठा खाने का शौकीन होता है। यदि शनि बाईं ओर आए तो जातक दरिद्र हो। यदि शनि पैर पर आए तो जातक की परदेश में मृत्यु हो। शनि के हृदय पर आने से जातक उच्चविद्या प्राप्त करता है। यदि शनि दाहिनी ओर आए तो हर प्रकार का लाभ होता है। यदि शनि आँखों पर आए तो जातक के सब कार्य सिद्ध होते हैं।

इति शनिविचार सम्पूर्ण

।। रामसत जी।।

बालक के जन्म के समय लग्न, घड़ी, वार, नक्षत्र, तिथि के शुभ-अशुभ फल :–

सिंह लग्न की पहली घड़ी में और वृश्चिक लग्न की आखिरी घड़ी में, धनु लग्न की बीच की घड़ी व अंतिम घड़ी में, शनिवार, अनुराधा नक्षत्र, मघा नक्षत्र, मूल नक्षत्र, अमावस्या तिथि में जन्मा जातक अपने लिये तथा दूसरों के लिये कष्टकारी होता है। इस जातक की राशि देखने वाले ब्राह्मण को भी कष्ट होता है।

मेष लग्न में पैदा हुआ जातक सुखी रहता है। वृष और मिथुन लग्न में पैदा हुआ जातक जरायु में लिपटा होता है। कर्क लग्न वाला जातक पैदा होते ही बहुत रोता है। सिंह लग्न वाला जातक उलटा पैदा होता है। कन्या लग्न के जातक के गले में जरायु लिपटा होता है या बालक अपंग होता है। तुला लग्न वाले जातक के बाहर झिल्ली लिपटी होती है। वृश्चिक लग्न के जातक का श्वास रुक-रुक कर चलता है। धनु लग्न में पैदा जातक अपंग होता है या गूंगा-बहरा होता है। मकर लग्न में पैदा बालक बहुत रोने वाला होता है। कुम्भ लग्न में पैदा जातक उलटा पैदा होता है। मीन लग्न में पैदा हुआ जातक ज़मीन बेचकर खाता है।

इति लग्नप्रश्नावली सम्पूर्ण

नक्षत्रों का फलादेश

रामसत जी।। अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक अच्छे वस्त्र पहनने वाला होता है। भरणी नक्षत्र में उत्पन्न जातक चोर बनता है। कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक को आग का भय होता है अर्थात् वह जल सकता है। रोहिणी नक्षत्र का जातक बड़े परिवार वाला होता है। मृगशिरा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक भाग्यवान होता है। आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे जातक की अल्पायु में मृत्यु हो सकती है। पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक सुखी रहता है। पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक सरकारी नौकरी में होता है। आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक व्यापारी होता है। मघा नक्षत्र में जन्मे बालक की आधी आयु में मृत्यु हो सकती है। पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक राजदण्ड भोगने वाला होता है। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक को जल में डूबने का भय रहता है। हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुखी रहता है। चित्रा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक धनवान् होता है। स्वाति नक्षत्र में जन्मा जातक उच्च विद्या प्राप्त करता है। विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान होता है। अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न बालक चिंतनशील होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मा बालक घृणा करने वाला होता है। मूल नक्षत्र में पैदा जातक अपने लिये कष्टकारक होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा बालक सुखी रहता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मा जातक धनवान् होता है। श्रवण नक्षत्र में पैदा हुआ जातक धनवान होता है। धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मा जातक सुख भोगने वाला होता है। शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक विद्वान होता है। पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक दुःखी रहता है। उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में उत्पन्न हुआ जातक भाग्यवान् होता है। रेवती नक्षत्र में पैदा हुआ जातक सुखी रहता है।

इति बालक के जन्म नक्षत्र के शुभाशुभ फल सम्पूर्ण

अथ जन्म की बारह राशियों का शुभाशुभ फल विचार

1 मेष राशि का स्वामी मंगल है जो पूर्व दिशा का स्वामी है। इस राशि का जातक पित्त प्रकृति का होता है। गर्म स्वभाव का होता है। क्षत्रिय वर्ण है। लाल नेत्र वाला, सदा रोगी रहने वाला, धर्म कर्म करने वाला, बलवान, स्त्रियों का प्रिय, अधिक प्रीति रखने वाला, धनवान, विद्यावान, बुद्धिमान, पुत्रयुक्त, अल्पभोजी, माथे पर चिह्न वाला, लम्बी गर्दन वाला, विदेश का भ्रमण करने वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, कुटुम्ब को पालने वाला होता है। इस राशि के जातक के लिये सब कार्य करने हेतु मंगलवार का दिन शुभ है। चौथा और पहला चन्द्रमा, पाँचवाँ मंगल, दूसरा बुध, छठा गुरु, तीसरा शुक्र, सातवाँ शनि, आठवाँ राहु घातक है। जन्मलग्न से कार्तिक मास, 1,6,11 तिथि, रविवार, मघा नक्षत्र, विषम योग, ववकरण, पहला प्रहर इस जातक के लिये घातक है। पहले वर्ष में गले में व्याधि और अंगरोग होगा। गोदान और अन्नदान देने से शुभ होगा। तीसरे वर्ष में अग्निभय। जलपूरित कलश दान देने से शुभ होगा। पाँचवें वर्ष में कष्ट हो। तिल और तेल दान दें तो शुभ हो। सातवें वर्ष में ज्वर पीड़ा हो या शत्रु से हानि हो या जल में डूबे। घी-चावल दान दें तो शुभ हो। दस वर्ष में कष्ट हो। ताम्बा और कम्बल दान दें तो शुभ हो। सोलह सत्रह वर्ष में रोग उत्पन्न हो। उन्नीसवें वर्ष में जल भय। तीसवें और पचासवें वर्ष में शस्त्र से घाव हो। गोदान से शांति हो। यदि इस कष्ट से बचे तो 97 वर्ष की आयु हो। कार्तिक मास की नवमी तिथि, मंगलवार, भरणी नक्षत्र, चौथे प्रहर में प्राण त्यागेंगे।

2 वृष राशि के जातक का स्वामी शुक्र है। शान्त स्वभाव वाला,

वैश्य वर्ण, अच्छे भोग भोगने वाला, दयावान, सदा स्त्री के कहने में रहने वाला, माता–पिता की सेवा करने वाला, सदा प्रसन्न रहने वाला होगा। कमर या पाँव में काला तिल होगा। तीन पत्नियाँ होंगी। एक बार कैद होगी। पेट, गले या नेत्र का रोग होगा। चौपाए से भय होगा। स्वर्ण मूर्ति का दान करें शुभ होगा। जातक के लिये शुक्रवार शुभ है। आठवाँ सूर्य, पाँचवाँ चन्द्रमा, नौवाँ मंगल, छठा बुध, ग्यारहवाँ गुरु, दसवाँ शुक्र, सातवाँ शनि, आठवाँ राहु घातक है। मार्गशीर्ष मास की 5,10,15 तिथि, शनिवार, हस्तनक्षत्र, शकुनि करण, चौथा प्रहर घातक है। पहले वर्ष में हाथ में रोग, तीसरे वर्ष में अग्नि भय, छठे वर्ष में रक्तविकार, सातवें वर्ष में नज़र लगेगी। एकादशी को मोती दान करें तो शुभ हो। आठवें वर्ष में चौपाए से भय, नवें वर्ष में हैजा रोग, ग्यारहवें वर्ष में रक्त विकार, बारहवें वर्ष में पेड़ से गिरने का भय, सोलहवें वर्ष में सर्प भय, उन्नीसवें वर्ष में पीड़ा भय, पच्चीसवें वर्ष में जल भय, तीसवें और तैंतीसवें वर्ष में क़मर पीड़ा का भय हो। स्वर्ण, वस्त्र, गौ, भेड़ दान करें तो शुभ होगा। छियालीसवें, बावनवें, त्रेपनवें वर्ष में बिजली का भय हो। बछड़ा दान दें तो शुभ हो। इसके बाद छियानबे वर्ष की आयु है। माघ मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि, रोहिणी या ज्येष्ठा नक्षत्र, शुक्रवार, सूर्यास्त के समय चौथे प्रहर में मृत्यु होगी।

3 मिथुन राशि के जातक का स्वामी बुध है जो पश्चिम दिशा का स्वामी है। जातक गर्म स्वभाव का होता है। शूद्र वर्ण है। मीठा बोलने वाला, सम्मोहित करने वाला, मुख पर शीतला के दाग वाला, दयावान, भजन गीत गाने वाला, गोरे रंग वाला, लम्बे कद वाला होता है लेकिन परस्त्रीगामी होता है। आधी आयु में दुःख पाएगा। दो स्त्री वाला, कम संतान वाला होगा, रक्तविकार होगा। दबाया हुआ धन प्राप्त होगा। दूसरे की स्त्री से खतरा होगा। बारहवाँ सूर्य, नौवाँ चन्द्रमा, पहला मंगल और बुध, तीसरा शुक्र, दूसरा गुरु, ग्यारहवाँ शनि, चौथा राहु घातक है। पहले वर्ष के छठे मास में कष्ट भोगेगा। यश प्राप्त करेगा। कीर्तिमान होगा। दो माता वाला होगा। सत्यवादी होगा। पहले वर्ष में कष्ट होगा। पेड़ से गिरने का भय रहेगा। तुलादान से

सुख प्राप्त होगा। तीसरे वर्ष में कष्ट हो। छठे वर्ष में अंगपीड़ा, दसवें और ग्यारहवें वर्ष में आँख का रोग हो। गोदान करने से शुभ होगा। संतों को मीठा भोजन कराएँ तो शुभ होगा। चौदहवें वर्ष में वैरी घात करे। अठारहवें वर्ष में कानों में पीड़ा, बीसवें वर्ष में कष्ट, छत्तीसवें वर्ष में अल्पायु योग हो। पैंतालीसवें वर्ष में चौपाए से चोट लगने का खतरा हो। वस्त्र, चाँदी दान करें तो शुभ हो। अगर कष्ट टले तो 92 वर्ष की आयु प्राप्त होगी। पौष मास की द्वितीया या अष्टमी तिथि, बुध या शुक्रवार का मूल या आर्द्रा नक्षत्र, पहला या तीसरा-प्रहर मृत्यु तुल्य कष्टकारक हो। आगे श्री हरि जानें।

4 कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है जो उत्तर दिशा का मालिक है। ब्राह्मण वर्ण है। धनवान तथा वीर होता है । क्षीण काया वाला, गुस्से वाला, अच्छे मित्रों वाला, साधु संतो का भक्त, माता-पिता, पुत्र सबको मानने वाला, धर्म-कर्म करने वाला, बुढ़ापे में सुख प्राप्त हो। व्याधिग्रस्त हो। स्त्री, भाई, बन्धु युक्त हो। पेट या पैर में काला तिल हो। पेट या गर्दन में पीड़ा रहे। पेट, पाँव या नाभि दर्द से मृत्यु होगी। चोरी का कलंक लगेगा। सोमवार सबसे अच्छा दिन है। पाँचवाँ सूर्य, दूसरा चन्द्रमा, छठा मंगल, तीसरा बुध, सातवाँ गुरु, आठवाँ शुक्र, चौथा शनि, नवाँ राहु व केतु घातक है। पौष मास, 2, 7, 12 तिथि, बुधवार, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, पहला प्रहर घातक है। स्त्री का प्रिय हो। ग्यारहवें दिन से नवमें महीने तक शारीरिक कष्ट हो, पांचवें या सातवें वर्ष में कष्ट हो। दान करें तो शुभ होगा। नौवें वर्ष, बारहवें या अठारहवें वर्ष में रोग, अंगपीड़ा, अग्नि का भय हो। जल का पात्र दान करें तो शुभ होगा। इकत्तीसवें वर्ष में सर्प भय हो। पैंतालीसवें, पचपनवें, इकसठवें वर्ष में मृत्यु तुल्य कष्ट हो। भूमि तथा गोदान करें तो शुभ होगा। सतानवें वर्ष में माघमास, तिथि बारह, बुधवार या सोमवार, दूसरे प्रहर को प्राण त्यागेंगे। आगे राम रक्षक है।

5 सिंह राशि के जातक का स्वामी सूर्य है जो पूर्व दिशा का स्वामी है। क्षत्रिय वर्ण है। जातक गर्म स्वभाव वाला, लक्ष्मी युक्त, ब्रह्म ज्ञानी, शीलवान, छोटे केश वाला, सुशील स्त्री वाला, लहसुन

युक्त (जन्म से ही शरीर पर पड़ा छोटा सा लहसुन के आकार का दाग) होता है। गुस्सा करने वाला, नशा करने वाला, विदेश घूमने वाला, माँ-बाप का प्यारा, युद्ध करने वाला, गोरा, सुदर्शन, लाल आँखों वाला, अहंकारी होता है। सिर में दर्द रहे। दो स्त्रियों का दूध पीने वाला होगा। कमर या पीठ पर तिल होगा। दो बार चोरी में फंसे। अग्नि का भय हो। किसी स्त्री से प्रीति करने वाला, जिससे उसे भय है। रविवार सब कार्यों के लिये अच्छा है। आठवाँ सूर्य, छठा चन्द्र, दसवाँ मंगल, सातवाँ बुध, ग्यारहवाँ गुरु, बारहवाँ शुक्र, आठवाँ शनि, पहला राहु या केतु घातक है। ज्येष्ठ मास, 3, 8, 13 तिथि, शनिवार, मूल नक्षत्र, धृति योग, ववकरण, पहला प्रहर घातक है। दसवें वर्ष सन्निपात हो। ब्राह्मण को भोजन कराने तथा गोदान देने से शुभ होगा। इसके बाद पचासी वर्ष की आयु होगी। फाल्गुन मास, शुक्लपक्ष, एकादश तिथि, रविवार या बुधवार, प्रथम प्रहर को प्राण त्यागेंगे। आगे श्री हरि जानें।

6 कन्या राशि के जातक का स्वामी बुध है। वैश्य वर्ण हो। शांत स्वभाव वाला हो। राजदरबार में पूजनीय होता है। धर्म-कर्म करने वाला और दान करने वाला होता है। चतुर कवि हो। प्रसन्नचित्त, घुमक्कड़, धनवान, गुरुभक्त, मृदुभाषी हो। बहुत संतान वाला हो। पत्नी से दुःख प्राप्त होगा। कण्ठ या बाजू में तिल हो। व्यापार से लाभ हो। भाई बन्धु से प्रीति कम हो। खाँसी, सर्दी, पेट में दर्द रहे। बुध का दिन अच्छा है। मृत्युञ्जय का जाप कराएँ तो शुभ होगा। पहला सूर्य, दसवाँ चन्द्रमा, दूसरा मंगल, ग्यारहवाँ बुध, तीसरा गुरु, चौथा शुक्र, बारहवाँ शनि, पहला राहु या केतु घातक है। भाद्रपद मास की 5,10,15 तिथि, शनिवार, श्रवण नक्षत्र, कौलव पहला प्रहर घातक है। जातक को तीसरे वर्ष में अग्नि का भय हो। पाँचवें वर्ष में आँख में पीड़ा हो। लाल वस्त्र दान करें तो सुख प्राप्त होगा। आठवें वर्ष में ढाँक (पहाड़) से गिरने का भय हो। तेरहवें वर्ष में ज्वर पीड़ा हो। मोती दान करें तो शुभ होगा। पन्द्रहवें वर्ष में सर्प का भय हो। इक्कीसवें वर्ष में पेड़ से गिरने का भय हो। गोदान तथा मोतीदान करें तो शुभ हो। छब्बीसवें वर्ष में जलघात हो।

तीसवें वर्ष में चोरी का भय हो। एक लाख मोती दान दें और जल के पास गोदान करें तो शुभ हो। तैंतीसवें वर्ष में शस्त्र से घाव हो। 43, 51, 65, 74वें वर्ष में अल्पायु भय हो। नारियल दान दें तो शुभ हो। 95 वें वर्ष के चैत्र मास में कृष्णपक्ष की पंचमी या दशमी तिथि, चित्रा नक्षत्र, बुधवार या शुक्रवार आधी रात को मृत्यु हो। आगे श्री हरि की इच्छा।

7 तुला राशि का स्वामी शुक्र है। शूद्रवर्ण है। जातक का स्वभाव गर्म हो। मृदुभाषी, धनवान, बुद्धिमान, अपव्ययी हो। अल्पकोश वाला, मित्रता करने वाला, देवता की पूजा करने वाला, दो स्त्री वाला, माँ-बाप की सेवा करने वाला, कम संतान वाला हो। खेती करने में चतुर हो। स्त्री के बस में रहे। शुक्रवार सब कार्यों के लिये अच्छा है। तीसरा चन्द्रमा, सातवाँ मंगल, चौथा बुध, आठवाँ गुरु, नौवाँ शुक्र, पाँचवाँ शनि, दसवाँ राहु घातक है। माघ मास की 5, 9, 14 तिथियाँ, गुरुवार, शतभिषा नक्षत्र, शूल योग, तैतिल करण और चौथा प्रहर घातक है। पहले सोलह महीने तक अंग रोग से पीड़ित हो। चौथा वर्ष कष्टकारक हो। सातवें वर्ष में अग्नि का भय है। दसवें तथा बारहवें वर्ष में जल से भय हो। अन्न व काली बकरी दान दें तो शुभ हो। बीसवें वर्ष में घोड़े से या सर्प से भय हो। इक्कीसवें, तैंतीसवें तथा छत्तीसवें वर्ष में अंग पीड़ा हो। बछड़ा, अन्न व वस्त्र दान दें तो शुभ हो। इकतालीसवें या इक्यानवें वर्ष में देव दोष और पितृ दोष हो। इकसठवें वर्ष में अल्पमृत्यु का भय हो। काँसा व लोहा दान दें तो शुभ हो। इसके बाद सतानबे वर्ष की आयु हो। ज्येष्ठ मास में छठे प्रविष्टे, शुक्ल पक्ष की पंचमी या दशमी तिथि, सोमवार या मंगलवार, अनुराधा या रोहिणी नक्षत्र में मृत्यु योग हो।

8 वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल है। विप्र वर्ण है। सर्वगुण सम्पन्न और स्त्री का प्रिय हो। उसके हाथ से किसी की हत्या हो। शूरवीर हो। लाल आँखों वाला हो। स्त्री का घातक हो। मित्रों से झूठ बोलने वाला हो। महाधूर्त, चोर, विश्वासघाती, गुप्त पाप करने वाला, दो स्त्रियों का स्वामी हो। मुँह शीतला के दाग से युक्त हो। अल्पाहारी हो। उसे उत्तर दिशा में लाभ हो। मंगलवार

सब कार्यों के लिये अच्छा हो। दसवाँ सूर्य, सातवाँ चन्द्रमा, ग्यारहवाँ मंगल, आठवाँ बुध, बारहवाँ गुरु, पहला शुक्र, नौवाँ शनि, बारहवाँ राहु, असौज मास, 1,8,11 तिथि, शुक्रवार, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, प्रथम प्रहर घाती है। प्रथम वर्ष में ज्वर पीड़ा और सातवें वर्ष में कष्ट हो। गोदान और स्वर्णदान दें तो शुभ हो। आठवें और तेरहवें वर्ष में जल व अन्नदान दें। ग्यारहवें, बीसवें, पचीसवें वर्ष में ज्वर पीड़ा हो। तिल और तेल दान दें तो शुभ हो। बत्तीस व पैंतीस वर्ष में अंग रोग हो। पैंतालीस वर्ष में शस्त्र या अग्नि से भय हो। त्रेसठ वर्ष में अल्पमृत्यु के योग। अन्न, वस्त्र, काँसा, चाँदीपात्र, धेनु दान करें तो शुभ हो। इसके बाद छियानवे वर्ष की आयु हो। असौज मास, कृष्णपक्ष, शतभिषा नक्षत्र, 12 प्रविष्टे, पंचमी तिथि, मंगलवार के दिन मृत्यु हो।

9 धनु राशि का स्वामी गुरु है। पूर्व दिशा का स्वामी है। क्षत्रिय वर्ण है। सत्यवादी, सर्वप्रिय, गुरुभक्त, गर्म स्वभाव वाला, धनवान, मृदुभाषी, राजदरबार में मान्य हो। मोटी देह वाला, बहुत संतान वाला, वेद-ब्राह्मण देवता को पूजने वाला, वस्तुओं को एकत्रित करने वाला हो। तीन स्त्रियों का स्वामी हो। मुँह या कमर पर काला तिल हो। गुरुवार का दिन सब कार्यों के लिये अच्छा है। सातवाँ सूर्य, चौथा चन्द्र, आठवाँ मंगल, पाँचवाँ बुध, नौवाँ गुरु, दसवाँ शुक्र, छठा शनि, ग्यारहवाँ राहु घातक है। श्रावण मास, 3, 8, 13 तिथि, शुक्रवार, भरणी नक्षत्र, वरियान योग, तैतिल करण, प्रथम प्रहर घाती हो। पहले वर्ष कोई कष्ट हो। तीसरे, नौवें, ग्यारहवें, सोलहवें वर्ष में नेत्र या पैर में पीड़ा हो। स्वर्ण या वस्त्र दान दें तो शुभ हो। चौबीसवें वर्ष में जल भय या ढाँक से गिरने का भय हो। ब्राह्मण को भोजन करावें या दान दें। छत्तीसवें वर्ष में अंगपीड़ा हो। सैंतालीसवें वर्ष में शूल रोग हो। नारियल दान दें। पैंसठ वर्ष में सर्प या जल भय हो। अन्न या वस्त्र दान दें तो शुभ हो। इसके बाद छियानवे वर्ष की आयु हो। आषाढ़ मास की द्वितीय तिथि, मूल नक्षत्र, गुरुवार या शुक्रवार, तीसरे प्रहर में मृत्यु भय हो।

10 मकर राशि का स्वामी शनि है जो दक्षिण दिशा का मालिक है।

वैश्य वर्ण है। इस राशि का जातक सत्यवादी, पंडित, परस्त्रीगामी, शांत स्वभाव का होता है। स्त्री के वश में रहने वाला, गाने-बजाने वाला, बहुत संतान व बंधुओं वाला, भला करने वाला, लम्बे कद वाला, गोल मुँह वाला और साँवले रंग का होता है। देव भक्त होता है। गर्दन के पास काला तिल हो। कहीं से मुफ्त जायदाद मिले। सुन्दर स्त्री वाला हो। शनि का दिन सब कामों के लिये अच्छा हो। ग्यारहवाँ सूर्य, आठवाँ चन्द्रमा, बारहवाँ मंगल, नौवाँ बुध, पहला गुरु, दूसरा शुक्र, दसवाँ शनि, ग्यारहवाँ राहु, वैशाख मास, 4, 9, 14 तिथियाँ, मंगलवार, रोहिणी नक्षत्र, वैधृति योग, शकुनि करण, चतुर्थ प्रहर घातक हो। तीसरे व पाँचवें वर्ष में जानु में पीड़ा हो, सातवें वर्ष में पेड़ से गिरने का भय हो। चाँदी और वस्त्र दान दें तो शुभ रहे। बारहवें वर्ष में शस्त्र से चोट का भय हो। चौबीसवें व पचीसवें वर्ष में मित्र से कष्ट पहुँचे। ब्राह्मण को भोजन करावे तथा देवी पूजा करें तो शुभ हो। पैंतीसवें वर्ष में अग्नि भय हो। 42,48, 56, 61, 68वें वर्ष में अंग पीड़ा हो। चावल या चाँदी दान करें तो शुभ हो। इस कष्ट से बचे तो इक्कासी वर्ष की आयु हो। श्रावण या ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की छठी तिथि, श्रवण नक्षत्र, शनिवार आधी रात को मृत्यु का भय हो।

11 कुम्भ राशि का स्वामी शनि है। शूद्र वर्ण है। इस राशि का जातक धन-धान्यपूर्ण, गर्म स्वभाव का, सच्चा, सुन्दर, अल्प केशों वाला, साँवले वर्ण का, सुन्दर नेत्रों वाला होता है। दादा-दादी के लिये घातक हो। पशु हानि हो। गुरु भक्त हो। घर में हाथी घोड़ा बाँधने वाला हो। क्षीण काय हो। दो स्त्रियों का स्वामी हो और कम संतान वाला हो। शनिवार हर कार्य के लिये अच्छा है। दूसरा सूर्य, ग्यारहवाँ चन्द्र, तीसरा मंगल, बारहवाँ बुध, चौथा गुरु, पाँचवाँ शुक्र, पहला शनि, छठा राहु घातक है। चैत्र मास 3, 7, 13 तिथि, गुरुवार, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, तीसरा प्रहर हानिकारक हो। पहले वर्ष में पीड़ा, तीसरे वर्ष में अग्नि भय या ढाँक से गिरने का भय हो। ब्राह्मण को भोजन कराएँ तो शुभ हो। अठारहवें, अट्ठाइसवें, बत्तीसवें वर्ष में वस्त्र या भोजन दान दें तो शुभ हो। पांचवें, नौवें, बारहवें वर्ष

में अकस्मात् पीड़ा हो। देव दोष, सर्प भय, जल भय रहे। चौंतीसवें वर्ष में कष्ट हो। चौपाये से चोट का भय हो। मोती दान दें तो शुभ हो। 42,48,57,61, 64वें वर्ष में कष्ट हो। चरखा व स्वर्ण दान दें तो शुभ हो। इन सब कष्टों से बचें तो पचानबे वर्ष की आयु हो। भाद्रपद या असौज मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी या प्रतिपदा, रविवार या शनिवार, शतभिषा नक्षत्र, चौथे प्रहर में मृत्यु का भय हो। आगे राम की इच्छा।

12 मीन राशि का स्वामी गुरु है। उत्तर दिशा का मालिक है। विप्र वर्ण है। इस राशि का जातक सत्कर्म करने वाला, बड़े परिवार वाला, यशस्वी, शांत स्वभाव वाला हो। दूर देश की बात जानने वाला हो। शूरवीर, महाकंजूस, विद्यावान हो। भाई-बंधु का पालन करे। स्वप्न बहुत देखे। बहुत संतान वाला हो। गर्मी का रोग हो। चौपाये रखेगा। चार स्त्रियों से प्रीति हो। देवस्थान में मृत्यु होगी। गुरुवार हर कार्य के लिये अच्छा है। तीसरा सूर्य, बारहवां चन्द्रमा, चौथा मंगल, पहला बुध, पाँचवाँ गुरु, छठा शुक्र, दूसरा शनि, सातवाँ राहु हानिकारक है। फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पूर्णिमा तिथि, शुक्रवार, अश्लेषा नक्षत्र, वैधृति योग, चतुष्पद करण, चौथा प्रहर घातक है। पहले, पाँचवें वर्ष में कष्ट या जलभय हो। शस्त्रदान करें तो शुभ हो। छठे व आठवें वर्ष में कष्ट हो । बछड़ा दान दें तो शुभ हो। 18, 22, 24, 33वें वर्ष में ज्वर पीड़ा हो। हलवाहक बछड़ा दान दें तो शुभ हो। 42, 51, 56 वें वर्ष में गले की व्याधि व हाथ की व्याधि हो। स्वर्ण व वस्त्र दान करें तो शुभ हो। अगर इस कष्ट से बचें तो अट्ठासी वर्ष की आयु हो। असौज मास के कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि, उत्तरा नक्षत्र, शुक्रवार प्रथम प्रहर में मृत्यु का भय हो।

अथ नक्षत्र व नवग्रह दशा फल

आदित्य	चन्द्र	भौम	राहु	जीव	शनि	बुध	केतु	शुक्र
6 वर्ष	10 वर्ष	7 वर्ष	18 वर्ष	16 वर्ष	19 वर्ष	17 वर्ष	7 वर्ष	20वर्ष
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वा-फा०
उत्तराफा०	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वा-भा०	उत्तरा-भा०	रेवती	अश्विनी	भरणी

आदित्य दशा में जन्मा जातक शनि दशा में मर सकता है।
चन्द्रमा की दशा में जन्मा जातक शुक्र में मर सकता है।
भौम दशा में उत्पन्न जातक की मृत्यु बुध दशा में हो सकती है।
जीव अर्थात् वृहस्पति दशा में उत्पन्न जातक की मृत्यु चन्द्र दशा में हो सकती है।
शनि दशा में उत्पन्न जातक की मृत्यु भौम दशा में हो सकती है।
बुध दशा में पैदा हुए जातक की मृत्यु जीव दशा में हो सकती है।
राहु दशा में पैदा हुए बालक की मृत्यु केतु दशा में हो सकती है।
केतु दशा में जन्मे जातक की मृत्यु राहु दशा में होती है।
शुक्र दशा में उत्पन्न जातक की मृत्यु वृहस्पति दशा में हो सकती है।
आदित्य दशा में उत्पन्न जातक उत्तम वस्त्र वाला होता है।
चन्द्र दशा में उत्पन्न जातक सुखी और लाभ प्राप्त करने वाला होता है।
भौम दशा में उत्पन्न जातक को अग्नि से भय रहता है।
बुध दशा में उत्पन्न जातक नशीले पदार्थों का सेवन करने वाला होता है।
जीव दशा में उत्पन्न जातक गर्म स्वभाव का होता है।
शुक्र दशा में उत्पन्न जातक सुखी रहता है।
शनि दशा में उत्पन्न जातक कलंकी होता है।
राहु दशा में उत्पन्न जातक हत्यारा होता है।
केतु दशा में उत्पन्न जातक निर्धन होता है।

इति नवग्रह दशा फल

अथ जन्म लग्न फलादेश

1 मेष	मेष लग्न में उत्पन्न जातक के ग्रह शुभ हों।
2 वृष	वृष लग्न में पैदा हुए जातक को दो मास के भीतर दूध की कमी हो।
3 मिथुन	मिथुन लग्न में जन्मा जातक माँ या मामा के लिये कष्टकारी होता है। जातक की मृत्यु आधी उम्र में हो सकती है।
4 कर्क	कर्क लग्न में जन्मे बालक की मृत्यु आधी उम्र में हो सकती है।
5 सिंह	सिंह लग्न में उत्पन्न जातक माता के लिये कष्टकारक होता है और जातक को अपने लिये भी कष्ट होता है।
6 कन्या	कन्या लग्न में उत्पन्न जातक रोग ग्रस्त रहता है।
7 तुला	तुला लग्न में पैदा हुआ जातक सुखी रहता है।
8 वृश्चिक	वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक सम्मोहक होता है।
9 धनु	धनु लग्न में जन्मा जातक चोर होता है।
10 मकर	मकर लग्न में उत्पन्न जातक दु:खी रहता है और कष्ट भोगता है। उच्च जाति से निम्न जाति में आता है।
11.कुंभ	कुंभ लग्न में पैदा हुआ जातक विवादी होता है और कष्टकारक होता है।
12 मीन	मीन लग्न में उत्पन्न हुआ जातक ज़मीन बेचकर खाने वाला होता है।

इति जन्म लग्न फलादेश

अथ बालक के जन्म समय के नवांश का शुभाशुभ फलादेश

1. पहले अंश में जन्मा बालक चंचल प्रकृति का हो। शांत स्वभाव, सत्यवादी लेकिन मन्दबुद्धि वाला हो।
2. द्वितीय अंश में जन्मा बालक सर्वगुणसम्पन्न, भाग्यशाली व भोगी हो। गृह स्वामी, दीर्घायु हो। उसके बाद माता के संतान न हो।
3. तृतीयांश में पैदा हुआ बालक क्रोधी, धर्मी, कष्ट भोगी, शांत स्वभाव का, चापलूस, तेज, सच्चा हो। भाई बंधु के लिये शुभ हो।
4. चतुर्थांश में पैदा हुआ जातक जाति-पाति को न मानने वाला, गोरे वर्ण का, यति और सति, मान्य व्यक्ति हो।
5. पंचमांश में जन्मा जातक राजपद पाने वाला हो।
6. छठे अंश में पैदा हुआ बालक अपने कुल में उत्तम, पिछले कर्मों के कारण धनवान् परन्तु कंजूस हो।
7. सप्तमांश में जन्मा बालक महाचोर, श्यामवर्ण का, अधिक परिवार वाला हो। सुखी और दीर्घायु हो।
8. अष्टमांश में पैदा हुआ बालक सद्‌गुणी, परिवार का पालन करने वाला, सदा भोगी हो।
9. नवमांश में उत्पन्न हुआ जातक भाग्यशाली, सत्यवादी, अर्थ लाभ वाला, अच्छे स्वभाव वाला हो।

अथ शुक्लपक्ष के जन्म तिथि के फल

राम सत जी।।

पड़वा तिथि में पैदा हुए जातक को राजयोग हो। माता के लिये कष्टकारक हो। सौतेली माँ द्वारा पालन-पोषण हो।

दूज तिथि में पैदा हुआ जातक पिता की प्रकृति का होता है। अपने लिये या पिता के लिये कष्टकारक होता है।

तीज तिथि में उत्पन्न जातक को आग से भय रहता है।

चौथ तिथि में पैदा हुआ जातक बहुत लालची और चंचल प्रकृति का होता है।

पंचमी तिथि में उत्पन्न जातक परस्त्री से प्यार करने वाला व लालची होता है।

षष्ठी तिथि में उत्पन्न जातक विवादी या झगड़ालू होता है।

सप्तमी तिथि में पैदा हुआ जातक सत्यवादी होता है।

अष्टमी तिथि में उत्पन्न जातक विवादी या झगड़ालू होता है।

नवमी तिथि में उत्पन्न जातक रोग ग्रस्त रहता है।

दशमी तिथि में पैदा हुआ जातक भ्रमण करने वाला होता है।

एकादशी तिथि में पैदा जातक चालाक और शुद्ध विचार वाला होता है। इसे मांस व अण्डे खाना निषिद्ध होता है।

द्वादशी तिथि में उत्पन्न जातक दरिद्र होता है।

त्रयोदशी तिथि में उत्पन्न जातक बीमार रहता है।

चतुर्दशी तिथि में उत्पन्न जातक चंचल और लोभी होता है।

पूर्णमासी को उत्पन्न जातक भाग्यवान् और सुखी हो। बहुत सम्मान प्राप्त करता है और परोपकारी होता है।

अथ कृष्णपक्ष में जन्म तिथि के फल

कृष्ण पक्ष की पड़वा के दिन जन्मा जातक माँ-बाप या सगे सम्बंधियों के लिये कष्टकारक होता है।

दूज तिथि में उत्पन्न बालक सुखी रहे।

तीज तिथि में उत्पन्न जातक बुराई करने वाला व चुगलखोर हो।

चौथ तिथि का जातक चंचल प्रकृति का होता है।

पंचमी तिथि के जातक को दूध की कमी नहीं रहती।

षष्ठी तिथि का जातक परिवार के लिये व अपने लिये कष्टकारक होता है।

सप्तमी तिथि का जातक सुख और आनन्द भोगता है।

अष्टमी तिथि का जातक परोपकारी होता है।

नवमी तिथि का जातक निशानेबाज होता है।

दशमी तिथि का जातक विद्वान् होता है।

एकादशी तिथि का जातक सुख भोगता है और परोपकारी होता है।

त्रयोदशी तिथि का जातक संतोषी होता है।

चतुर्दशी तिथि का जातक शस्त्र चलाने का शौकीन होता है।

अमावस्या को उत्पन्न जातक चोर होता है।

इति पक्ष के अनुसार जन्मतिथि के फलादेश

अथ बालक जन्म का रेखा बिन्दु का शुभाशुभ विचार

नीचे बने चक्र में क्रमशः पहला बिन्दु, दूसरी रेखा, तीसरा बिन्दु, चौथी रेखा है। कृत्तिका नक्षत्र से गणना आरम्भ करें। जिस नक्षत्र में बालक का जन्म हो वहाँ तक गणना करें, तब शुभाशुभ फल विचारें।

0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बिन्दु सभी शुभफलदायक हैं। रेखाओं का शुभाशुभ फल इस प्रकार है– पहली रेखा पर नक्षत्र आए तो बालक के लिये घातक है। दूसरी रेखा पर नक्षत्र आए तो जातक पिता के लिये घातक हो। तीसरी रेखा पर नक्षत्र आए तो शिशु माता के लिये घातक हो। चौथी रेखा पर आए तो बच्चा माता की माँ के लिये हानिकारक हो। पाँचवीं रेखा पर आए तो पिता के भाई के लिये घातक हो। छठी रेखा दादा-दादी के लिये हानिकारक। सातवीं रेखा पड़ोसी के लिये हानिकारक हो। आठवीं रेखा नगर के लिये खराब हो। नौवीं रेखा नौकर के लिये घातक। दसवीं रेखा पर नक्षत्र आए तो जातक परिवार के लिये घातक हो। ग्यारहवीं रेखा मामा या अपने लिये हानिकारक। बारहवीं रेखा माता को कष्ट करे या जातक को अग्नि-भय हो। तेरहवीं रेखा मामा-मामी व मामा के पुत्र के लिये बुरी हो।

खुण्डे का विचार

मेष राशि के लिये मुसली का खुण्डा (शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिये बनाए जाने वाले यन्त्र के लिये प्रयुक्त लकड़ी) प्रयुक्त होता है। शत्रु की नामराशि के लिये यह तन्त्र है। वृष राशि वाले के लिये तुन्ही का, मिथुन राशि वाले शत्रु के लिये खैर का खुण्डा, कर्क राशि वाले के लिये टिम्बर का, सिंह राशि वाले के लिये किम्मू का खुण्डा, कन्या राशि वाले को दुधले का, तुला राशि वाले के लिये पीपल का खुण्डा, वृश्चिक वाले के लिये काकड़ा वृक्ष का, धनु राशि के लिये ब्यूहल का, मकर राशि वाले के लिये ब्यूहल का खुण्डा, कुम्भ राशि वाले के लिये छानण का, मीन राशि वाले के लिये पीपल का खुण्डा प्रयुक्त होता है। इसी लकड़ी से शत्रु के निमित्त हवन भी करें।

एकादरा बुखार (तीसरे दिन आने वाला बुखार) नाशक यंत्र व भूतनाश तथा डाकिनी नाश यंत्र
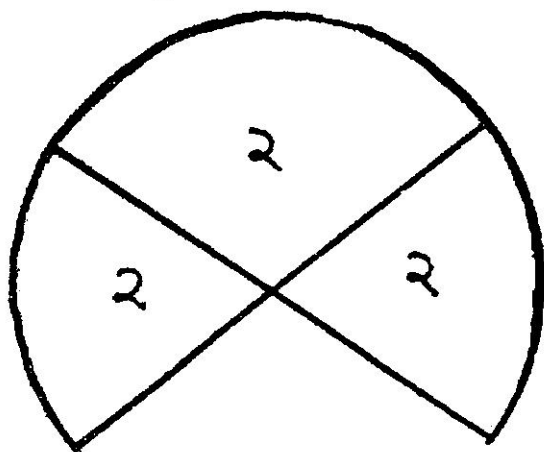
गृह प्रवेश चक्र
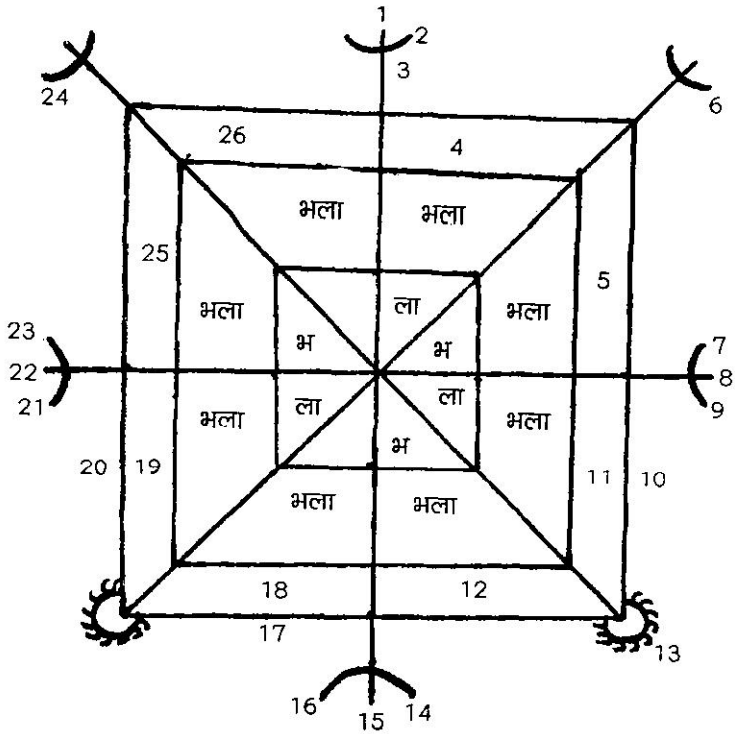
पूर्णिमा को जो नक्षत्र हो, उस नक्षत्र से गणना शुरू की जाती है। (चक्र के अनुसार अंक 1 से गणना आरम्भ करें)। जिस दिन गृह में प्रवेश करना हो, उस दिन के नक्षत्र तक गणना की जाती है। इस चक्र के अनुसार शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है। यदि नक्षत्र गणना चक्र के अन्दर के अंकों अर्थात् 4, 5, 11, 12, 18, 19, 25, 26 में आए तो शुभ होता है। यदि नक्षत्र गणना चक्र के बाहर अर्थात् 3, 6, 10, 17, 20 अंकों पर आए तो अशुभ हो। यदि 1, 2, 7, 8, 9, 13, 14, 15, 16, 21, 22, 23, 24, 27 अंकों पर नक्षत्र आए तो गृह में प्रवेश न करें। यदि इन अंकों पर नक्षत्र आने पर गृह में प्रवेश किया जाए तो परिवार में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है।

अथ अंगुल से वास्तु प्रमाण
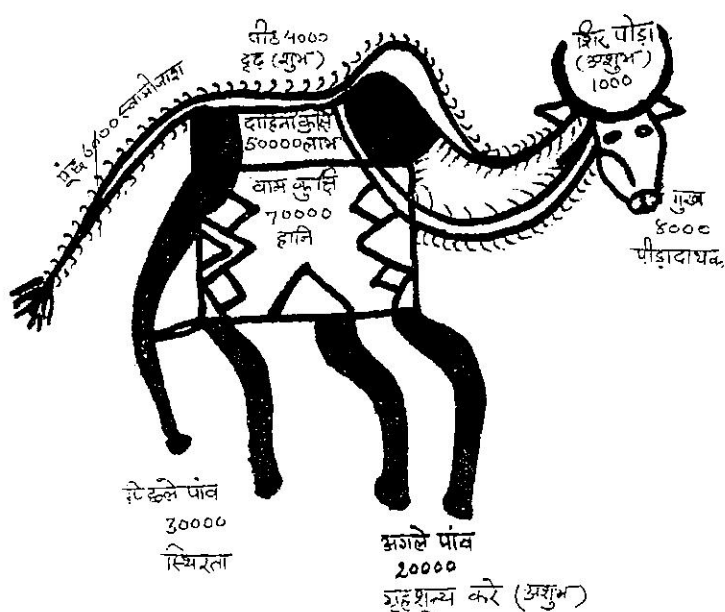
वास्तु की नींव लगाने की विधि : जिस नक्षत्र में आदित्य हो, उससे वास्तु लगाने के लिए दिन के नक्षत्र तक कूर्म चक्र में शून्य पर से गिनें। सिर से आरम्भ करके तीन नक्षत्र सिर पर, चार नक्षत्र अगले पैरों में, चार पिछले पैरों में, तीन नक्षत्र पीठ में, चार नक्षत्र दाहिनी कुक्षि में, तीन नक्षत्र पूँछ में व चार नक्षत्र वाम कुक्षि में, तीन नक्षत्र मुख में, अभिजित सहित 28 नक्षत्रों का चक्र बना है। सिर के नक्षत्र में वास्तु आए तो अशुभ हो। अगले पैरों में वास्तु आए तो गृहशून्य हो। पिछले पैरों में आए तो शुभ, पीठ के नक्षत्र पर धन-प्राप्ति या दृढ़ता, दाहिनी कोख में विजय देने वाला, पूँछ में स्वामीनाश, वाम कोख में दरिद्रता, मुख वाले नक्षत्र में पीड़ा। इस प्रकार फल देखें। शुभ नक्षत्र में आए तो गृहारम्भ के लिये शुभ है। अशुभ नक्षत्र में नींव नहीं लगानी चाहिये।
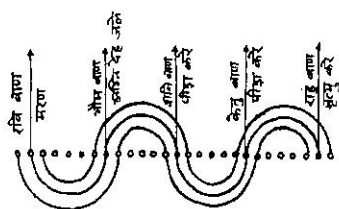
अथ बाण लिख्यते

शुभाशुभ फल :– आदित्य से गिनना आरम्भ करके पीड़ा के नक्षत्र तक गिनें। रवि बाण मृत्युकारक, भौम बाण मध्यम, शनि बाण मृत्युकारक, राहु बाण मृत्युकारक तथा केतु बाण अनिष्ट कारक है। आरम्भ और अन्त के दोनों बाण मृत्यु तुल्य हैं। यदि गणना करने पर नक्षत्र बाण पर न आए तो उसे शारीरिक रोग है, ओपरा नहीं (नक्षत्रों को दर्शाने के लिये शून्य का चिह्न है)।

अथ वार पीड़ा लिख्यते

1. रविवार के दिन जसमा योगिनी का दोष लगे। सिर में दर्द हो और भोजन न पचे। वह योगिनी उत्तर दिशा में बसे। उपाय हेतु लोहे की कड़ाही में पकवान बना कर पूजा करें। आग्नेय दिशा में आखे[1] के सात पत्तों पर पकवान की बलि दें या बेर के पत्ते, लाल कपड़े और धूप सहित उत्तर दिशा की ओर बलि दें तो पीड़ा दूर होगी।
2. सोमवार के दिन यदि पीड़ा हो तो गलवा देवी का दोष समझें। ज्यादा दिन पीड़ा रहे। हाथ-पाँव में कंपकंपी हो और मूर्च्छा आए तो शंखिनी दोष भी समझें। वह शंखिनी पूर्व में बसे। पूर्व दिशा की ओर से नज़र भी लगी है। उपचार हेतु लाल कपड़ा पहनकर आटे का नाग बनाएँ और पाजे[2] के पत्ते के ऊपर रखकर सिर पर से घुमाएँ और पूर्व दिशा की ओर बलि दें। पीड़ा दूर होगी।
3. भौमवार के दिन यदि पीड़ा हो तो बसमा देवी का दोष समझें। भोजन करते समय कुदृष्टि पड़ी है। एक आँख वाली, मुंह पर काले निशान वाली, श्याम वर्ण की डाइन है। आटे का नाग

बनाकर पीले रंग से रंगें। सफेद वस्त्र पहनकर पेठे का फल और पीले रंग से रंगा नाग रोगी के सिर पर घुमाएं और चौराहे पर बलि दें। पीड़ा दूर होगी।

4 बुधवार के दिन पीड़ा हो तो वसुरा देवी का दोष समझें। हाथ और सिर में कंपकंपी हो और अन्न न पचे। वह शंखिनी दक्षिण दिशा की हो। अन्न खाते हुए नज़र लगी है। पाजे का पत्ता लें और चावल के आटे का मनुष्य बनाएं। उजले वस्त्र पहनकर पाजे के पत्ते पर चावल के आटे के मनुष्य की बलि दें तो दो दिन में पीड़ा दूर हो।

5 वीरवार के दिन पीड़ा हो तो गृहिणी देवी का दोष समझें। अन्न खाते और दूध पीते हुए नज़र लगी है। आटे का नाग बनाकर पीले रंग से रंगें। भोज पत्र और पुठकण्डे[3] के सात-सात पत्तों पर चावल की पीठी के मनुष्य बनाएँ और रोगी के सिर पर से घुमाकर कच्चे सूत, गुड़, धूप सहित आटे के बने नाग और चावल की पीठी के बने मनुष्य की बलि दें तो पीड़ा दूर हो।

6 शुक्रवार को यदि पीड़ा हो तो जसमा योगिनी का दोष हो। दोपहर के समय पीड़ा हो। अंगों में पीड़ा हो और अन्न न पचे। वह शंखिनी पश्चिम की हो। उपचार हेतु तीन बलि लेकर रोगी के सिर पर से घुमाकर पश्चिम दिशा के चौराहे पर गाड़ दें तो चौदह दिन के भीतर पीड़ा दूर हो।

7 शनिवार को यदि पीड़ा हो तो गृहिणी देवी का दुःख समझें। बुखार चढ़े। वह डाकिनी वायव्य दिशा की हो। उपचार हेतु एरण्ड के चार पत्ते लें और उस पर मीठे चावल की पीठी के चार लड्डू रख कर वायव्य दिशा में बलि दें और काली की पूजा करें तो दो दिन में पीड़ा दूर होगी।

---

1 काँटेदार झाड़ी विशेष जिसमें खट्टे-मीठे फल लगते हैं, जो कच्ची अवस्था में हरे और पकने पर लाल और कुछ झाड़ियों में काले होते हैं।

2 छोटे आकार का एक वृक्ष जिसकी शाखाएँ विवाह में काम आती हैं। इसे पीपल की तरह शुभ माना जाता है।

3 काँटे वाली झाड़ी जो औषधि के काम आती है।

नक्षत्र पीड़ा दान

आश्विन	9	11	17	2	श्वेत वस्त्र व स्वर्ण दान
भरणी	मृत्यु	14	9	11	काला वस्त्र व लोहा दान
कृत्तिका	7	9	18	3	श्वेत वस्त्र व स्वर्ण दान
रोहिणी	6	10	16	7	चाँदी व काला वस्त्र दान
मृगशिरा	30	7	28	1	श्वेत वस्त्र व ऊनी वस्त्र दान
आर्द्रा	मृत्यु	27	कष्ट	मृत्यु	सफेद ऊनी वस्त्र दान
पुनर्वसु	7	28	24	31	रक्त व पीत वस्त्र दान
पुष्य	7	मृत्यु	20	20	पीत वस्त्र व स्वर्णदान
अश्लेषा	मृत्यु	कष्ट	15	मृत्यु	काला वस्त्र व लोहा दान
मघा	24	7	17	28	वस्त्र व भोजन दान
पू0 फाल्गुनी	मृत्यु	15	कष्ट	30	ब्राह्मण हेतु मिष्टान्न दान
उ0 फाल्गुनी	10	14	मृत्यु	60	काला वस्त्र व गौ दान
हस्त	15	7	14	5	रक्त वस्त्र व काला फल दान
चित्रा	11	मृत्यु	7	31	फूलदार वस्त्र का दान
स्वाति	मृत्यु	17	23	मृत्यु	वेत वस्त्र व गो दान
विशाखा	कष्ट	6	13	5	ब्राह्मण हेतु भोजन व गो दान
अनुराधा	कष्ट	11	15	6	ब्राह्मण भोजन व अन्न दान
ज्येष्ठा	मृत्यु	14	23	24	ब्राह्मण भोजन व स्वर्णदान
मूल	15	9	15	5	ब्राह्मण भोजन, स्वर्ण व वस्त्रदान
पूर्वाषाढ़ा	मृत्यु	14	11	मृत्यु	स्वर्ण दान
उत्तराषाढ़ा	30	14	कष्ट	20	वस्त्र, भोजन, स्वर्ण दान
अभिजित	1	1	1	1	ब्राह्मण के लिये दूध–भात दान
श्रवण	11	13	30	60	स्वर्ण रजत वस्त्र दान
धनिष्ठा	5	30	3	19	श्वेत वस्त्र दान
शतभिषा	11	14	कष्ट	6	भूरा वस्त्र दान
पू0 भाद्र0	मृत्यु	4	कष्ट	11	काला ऊनी वस्त्र दान
उ0 भाद्र0	11	14	कष्ट	7	भूरा ऊनी वस्त्र दान
रेवती	कष्ट	मृत्यु	24	6	श्वेत वस्त्र दान

पक्षी के बीटने का विचार

रामसत जी।। यदि पक्षी–कौआ या चिड़िया–सिर पर विष्ठा करे तो अपने लिये अरिष्ट हो। जिस मास में बीट करे, उस मास शारीरिक पीड़ा हो और एक वर्ष तक इसका भय रहे। कन्धे के ऊपर बीट करे तो हानि हो । दाहिने बाजू के ऊपर बीटे तो हानि हो या मित्र की मृत्यु हो। बाएँ बाजू पर बीटे तो अपने को शारीरिक कष्ट हो। माथे के ऊपर बीटे तो परिवार वालों को कष्ट हो। छाती के ऊपर बीटे तो पत्नी की हानि हो। पीठ के पीछे बीटे तो मीठा भोजन मिले। पेट के ऊपर विष्ठा करे तो भतीजे की मृत्यु हो। दाहिनी टाँग पर बीटे तो विदेश गमन हो। बाईं टाँग पर बीटे तो दरिद्र हो। बैठे हुए की गोद में बीटे तो मित्र से लाभ हो। दाहिनी या बाईं कोख पर बीटे तो मित्र से झगड़ा हो। पैर पर बीटे तो गिरने का भय हो। कान के ऊपर बीटे तो बनवास हो।

अथ मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के ग्रह

मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा बालक पिता के लिये अशुभ हो। दूसरे चरण में जन्मा बालक माँ के लिये अरिष्ट होता है। तीसरे चरण में जन्मे बालक के घर में धन व पशु का नाश हो। चौथे चरण में जन्मा बालक शुभ होता है। पन्द्रह घड़ी का एक चरण और साठ घाड़ी का एक नक्षत्र होता है। जो दिन के पहले चरण में पैदा हुआ हो, वह पिता के लिये अशुभ होता है। रात के दूसरे चरण में जन्मा जातक माँ के लिये बहुत कष्टकारक हो। रात्रि के पहले चरण में जन्मा बालक पिता के लिये शुभ होता है। दिन के दूसरे चरण में जन्मा बालक माँ के लिये शुभ हो। दिन के मूल में पैदा बालक पिता के लिये अशुभ हो। रात्रि के मूल में पैदा जातक माँ के लिये अशुभ हो। संध्याकाल के मूल में जन्मा बालक अपने लिये अरिष्ट हो। मूल की घड़ियाँ और फल आगे दर्शाए गए हैं। उसमें

शुभाशुभ विचार देखें। मूल नक्षत्र की 60 घड़ियाँ चक्र में गिनें। जितनी घड़ी गिनकर आए उसके अनुसार मूल वृक्ष के मूल स्थान से गिनना आरम्भ करें तथा जिस घड़ी में बालक जन्मा हो वहाँ तक गिनें। जिस स्थान पर गिनकर आए, उसका फल देखें।

मूल	घड़ी	फल
जड़	4	नाश करवाए
स्तम्भ	7	हानि, धन का क्षय
त्वचा	10	भाई का नाश करे
शाखा	8	माता का नाश करे
पत्र	9	शुभ हो, कुटुम्ब का विस्तार हो
फूल	5	उच्च पदवी प्राप्त करे
फल	6	राज योग
शिखर	11	अल्पायु हो

एक पाशटी होरा

1 होरा एक कहती है कि धन के लिये किसी की हत्या की गई है, जिसके श्राप से स्त्री कष्ट भोग रही है।

2 होरा दो कहती है कि दूसरी जाति की स्त्री की नज़र लगने से घर में किसी की मृत्यु हुई है। आपको इष्ट देव और पितर दोष लगा है, इसलिये गृह में कष्ट और धन-धान्य की हानि हो रही है।

3 होरा तीन कहती है कि किसी के धन को लूटने के कारण उसका कोप तथा उसके इष्ट का कोप लगा है, जिस इष्ट की स्थापना जल के पास या खेत में की हुई है।

4 होरा चार कहती है कि चौपाए के कारण झगड़ा होने से उच्च जाति की डाकिनी की छाया पड़ी है, जिससे घर में अशांति रहती है तथ धन का क्षय होता है। स्त्री का नाश भी हो सकता है।

इति

चार प्रहर की होरा

1. प्रथम प्रहर में यदि प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो होरा कहती है कि चण्डिका देवी का दुःख है। श्यामवर्ण, कानी, एक हाथ में कोई निशान वाली स्त्री की नज़र फल खाते समय लगी है। पितृ दोष भी है।
2. दूसरे प्रहर में यदि प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो होरा कहती है कि पूर्व दिशा से स्त्री या पुरुष की कुदृष्टि पड़ी है। चलती बार सामने से कुदृष्टि पड़ने से उसी समय पीड़ा हुई तथा रात को स्वप्न में भी वही घटना घटी। जिसकी नज़र लगी वह बाईं ओर से गुज़रा/गुज़री। आपस में झगड़ा हुआ, इसलिये कष्ट हुआ। यदि देव पूजा की जाए तो सुख प्राप्त होगा।
3. तीसरे प्रहर में यदि प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो होरा कहती है कि दक्षिण दिशा में रहने वाली घर की स्त्री की नज़र लगी है। मुख पर तिल है और वर्ण लाल है। स्थान देवता का दोष भी है।
4. चौथे प्रहर में यदि प्रश्नकर्ता प्रश्न करे तो होरा कहती है कि साँवले वर्ण की बाहर की स्त्री की नज़र लगी है, जिसने सफेद वस्त्र पहना था और जो उत्तर दिशा में रहती है। इसलिये गृह में अशांति है। उत्तर दिशा में देवता की पूजा करें तब शांति मिलेगी।

इति

रात्रि के शुभ लग्न – रात्रि के समय के मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु, मकर लग्न बलिष्ठ हैं अर्थात् शुभ हैं।

दिन के शुभ लग्न – दिन के समय के सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मिथुन लग्न बलिष्ठ हैं अर्थात् शुभ हैं।

सुहाग लगाने के लग्न के शुभाशुभ विचार

मेष (अशुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री विधवा होवे।

वृष (शुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री देवी स्वरूप हो।

मिथुन (शुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री सदा सुहागिन रहे।

कर्क (मध्यम) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री वेश्या हो।

सिंह (अशुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री के संतान न होवे।

कन्या (मध्यम) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री स्वामी पर अधिकार जमाने वाली होवे।

तुला (शुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री सुखदायिनी हो।

वृश्चिक (अशुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्वामी को हर प्रकार से दुःख देने वाली हो।

धनु (शुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री लक्ष्मीस्वरूपा हो।

मकर (अशुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री घर बर्बाद करने वाली हो।

कुंभ (मध्यम) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री स्वामी के साथ कलह करने वाली होवे।

मीन (अशुभ) लग्न में सुहाग लगाया जाए तो स्त्री स्वामी को दुःख पहुँचाने वाली हो।

अथ अग्निवास

उदाहरण– जिस दिन यज्ञ करना हो उस दिन प्रतिपदा से जो तिथि हो, रविवार से जो वार हो, उसमें एक अंक नक्षत्र का मिलाएँ और उसका जोड़ करें। जोड़ को चार से भाग दें। यदि शेष एक बचे तो अग्नि का वास स्वर्ग (आकाश) में जानना। यदि इसमें होम करें तो धन व प्राण का नाश हो। दो बचे तो अग्नि का वास पाताल में जानना। इसमें यज्ञ करें तो धन-सम्पत्ति का नाश हो। तीन बचे तो अग्नि का वास मृत्यु लोक में जानना। इसमें होम करना शुभ फलदायक है। शून्य शेष बचे तो अग्नि का वास वायुमण्डल में जानना जो अत्यंत शुभ फलदायक है।

जिस नक्षत्र में सूर्य हो उस नक्षत्र में एक-एक ग्रह में तीन-तीन अंक गिनें। जो नक्षत्र कार्य करने का हो, वहाँ तक गिनें तथा ऊपर वाले चक्र से शुभाशुभ फल का विचार करें।

अथ विवाहपात चक्र

आदित्य से विवाह के नक्षत्र तक गिनें तथा शुभाशुभ फल चक्र से देखें:—

रवि 1	2	3	4	5	6	7	8	9
नाश मृत्यु, बुरा	[illegible] भला लाभ	[illegible] शुभ	विपत्ति, बुरा	पुत्र लाभ	नाश बुरा (अत्यन्त अशुभ)	पटरानी सम्पदा (मध्यम)	धन लाभ	लक्ष्मी भला होवे (उत्तम)

अथ स्वरज्ञान की घड़ियां

बुध रात

बुध दिन

वीर रात

वीर दिन

शुक्र रात

शुक्र दिन

शनी रात

मंगल दिन

बुध रात

बुध दिन

जीव रात

जीव दिन

शुक्र रात

शुक्र दिन

आषाढ़ : श्रावण : भाद्रपद : आश्विन : मास की घड़ियां

भौम रात:

भौम दिन:

बुद्ध रात:

बुद्ध दिन

जीव रात

जीव दिन

शुक्र रात:

रवि रात्री का चौघड़िया	रवि दिन का चौघ.	चन्द्र रात्री का चौ.
शुभ वेला — ४	उद्वेग वेला — ४	चंचल वेला — ४
अमृत वेला — ४	चंचल वेला — ४	रोग वेला — ४
चंचल वेला — ४	लाभ वेला — ४	काल वेला — ४
रोग वेला — ४	अमृत वेला — ४	लाभ वेला — ४
काल वेला — ४	काल वेला — ४	उद्वेग वेला — ४
लाभ वेला — ४	शुभ वेला — ४	शुभ वेला — ४
उद्वेग वेला — ४	रोग वेला — ४	अमृत वेला — ४
शुभ वेला — ४	उद्वेग वेला — ४	चंचल वेला — ४

चन्द्र दिन का चौ.	भौम रात्री का चौ.	भौम दिन का चौघड़िया
अमृत वेला — ४	काल वेला — ४	रोग वेला — ४
काल वेला — ४	लाभ वेला — ४	उद्वेग वेला — ४
शुभ वेला — ४	उद्वेग वेला — ४	चंचल वेला — ४
रोग वेला — ४	शुभ वेला — ४	लाभ वेला — ४
उद्वेग वेला — ४	अमृत वेला — ४	अमृत वेला — ४
चंचल वेला — ४	चंचल वेला — ४	काल वेला — ४
लाभ वेला — ४	रोग वेला — ४	शुभ वेला — ४
अमृत वेला — ४	काल वेला — ४	रोग वेला — ४

बुध रात्री का चौ०	बुध दिन का चौ:	जीव रात्री का चौ०
उद्वेग बेला — ४	लाभ बेला — ४	अमृत बेला — ४
शुभ बेला — ४	अमृत बेला — ४	चंचल बेला — ४
अमृत बेला — ४	काल बेला — ४	रोग बेला — ४
चंचल बेला — ४	शुभ बेला — ४	काल बेला — ४
रोग बेला — ४	रोग बेला — ४	लाभ बेला — ४
काल बेला — ४	उद्वेग बेला — ४	उद्वेग बेला — ४
लाभ बेला — ४	चंचल बेला — ४	शुभ बेला — ४
उद्वेग बेला — ४	लाभ बेला — ४	अमृत बेला — ४

जीव दिन का चौ:	शुक्र रात्री का चौ:	शुक्र दिन का चौ:
शुभ बेला — ४	रोग बेला — ४	चंचल बेला — ४
रोग बेला — ४	काल बेला — ४	लाभ बेला — ४
उद्वेग बेला — ४	लाभ बेला — ४	अमृत बेला — ४
चंचल बेला — ४	उद्वेग बेला — ४	काल बेला — ४
लाभ बेला — ४	शुभ बेला — ४	शुभ बेला — ४
अमृत बेला — ४	अमृत बेला — ४	रोग बेला — ४
काल बेला — ४	चंचल बेला — ४	उद्वेग बेला — ४
शुभ बेला — ४	रोग बेला — ४	चंचल बेला — ४

शनी रात्री का चौः	शनी दिन का चौः	इति चौघाडिया
अमृत वेला — ४	काल वेला — ४	रात दिन का सम्पू
उद्वेग वेला — ४	शुभ वेला —	र्णम कृष्णाः गते ३०
शुभ वेला — ४	रोग वेला — ४	वैशाख माहिने साल
अमृत वेला — ४	उद्वेग वेला — ४	१९८५ का ४ घड़ी
चंचल वेला — ४	चंचल वेला — ४	का एक वेला गिणा
रोग वेला — ४	लाभ वेला — ४	ना और शुभ अशुभ
काल वेला — ४	अमृत वेला — ४	इसी समझ लेना
लाभ वेला — ४	काल वेला — ४	सुगम कर दिया है [illegible]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	सर्वघात
4	8	12	5	9	1	7	10	7	11	2	3	सूर्यघात
1	5	9	2	7	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र घात
5	9	1	7	10	2	7	11	8	12	3	5	भौम घात
2	6	10	3	7	11	8	8	5	9	12	1	बुध घात
7	10	2	7	11	3	8	12	11	1	8	5	गुरु घात
3	7	11	4	8	12	5	9	7	10	1	2	शुक्र घात
7	11	2	9	12	1	9	1	13	2	4	7	शनि घात
3	7	1	4	5	11	12	1	2	9	11	3	राहु घात
मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	उत्तरा	आश्विन	रोहिणी	आर्द्रा	पुष्य	नक्षत्र घात
1	2	4	7	10	12	6	8	9	11	3	3	लग्न घात
रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	रवि	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र		वार घात
कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	असौज	मास घात
1	5	1	2	3	5	14	1	2	14	3	5	तिथि
7	10	2	1	10	1	2	8	9	8	11		
11	15	12	12	12	12	11	13	4	12	15		
			7	8	10	9	2	8	9	8	11	चन्द्र घात
			12	13	15	14	11	13	4	13	15	

बारह लग्नों की प्रत्येक घड़ी का शुभाशुभ विचार

1. मेष की घड़ी तीन। प्रथम घड़ी में हानि हो। दूसरी घड़ी में हर सुख प्राप्त हो। तीसरी घड़ी में हानि हो।
2. वृष की घड़ी चार। प्रथम घड़ी सुख पहुँचाने वाली। द्वितीय घड़ी में हर प्रकार का भोग-विलास भोगे। तृतीय घड़ी व्याधि देने वाली। चतुर्थ घड़ी भय पहुँचाने वाली हो।
3. मिथुन की घड़ी पाँच। प्रथम घड़ी सुख पहुँचाने वाली। दूसरी घड़ी आनन्द दायक हो। तृतीय घड़ी राजसुख पहुँचाने वाली। चतुर्थ घड़ी आनन्द देने वाली। पंचम घड़ी पशु की हानि करे।
4. कर्क की घड़ी छः। प्रथम घड़ी भोग-विलास वाली। द्वितीया सुख पहुँचाने वाली। तृतीया घड़ी वाद-विवाद कराने वाली। चतुर्थ शुभ फलदायिनी। पंचमी घड़ी रोग पैदा करने वाली। षष्ठी घड़ी शुभ फल देने वाली।
5. सिंह की छः घड़ी। प्रथम घड़ी अशुभ। दूसरी घड़ी लाभदायक। तीसरी घड़ी शुभ फलदायक। चौथी घड़ी महाकष्टकारक। पाँचवीं घड़ी भय पैदा करने वाली। छठी घड़ी सर्व आनन्ददायक।
6. कन्या की घड़ी छः। प्रथम घड़ी राजसुख पहुँचाने वाली। दूसरी घड़ी आनन्द देने वाली। तीसरी घड़ी हानि पहुँचाने वाली। चतुर्थ घड़ी भय पहुँचाने वाली। पंचमी घड़ी उद्वेग पैदा करने वाली। छठी घड़ी राजसुख देने वाली हो लेकिन अग्नि का भय करे।
7. तुला की छः घड़ी। प्रथम घड़ी राजसुख देने वाली। दूसरी घड़ी कलह पैदा करने वाली। तीसरी घड़ी लाभदायक हो। चतुर्थ घड़ी कलह पैदा करने वाली और हानि पहुँचाने वाली। पंचमी घड़ी रोग पैदा कराने वाली। छठी घड़ी में चोर का भय हो।

8 वृश्चिक की छः घड़ी। पहली घड़ी सुख देने वाली। दूसरी घड़ी सम्मान देने वाली। तीसरी घड़ी शुभ फल देने वाली और लक्ष्मी देने वाली। चौथी घड़ी धन–सम्पत्ति का लाभ देने वाली। पाँचवीं घड़ी हानि पहुँचाने वाली। छठी घड़ी अत्यंत कष्टकारक।

9 धनु की घड़ी छः। पहली रोग पैदा करने वाली। दूसरी घड़ी पशु-हानि करने वाली। तीसरी घड़ी में राजभय हो। चौथी घड़ी महाकष्टकारक। पाँचवीं घड़ी में बैरागी बनने का भय हो। छठी घड़ी में मृत्यु का भय हो।

10 मकर की घड़ी पाँच। पहली घड़ी हानि करने वाली। दूसरी घड़ी में राज लाभ हो। तीसरी घड़ी लाभकारक। चौथी घड़ी शुभ फलदायक और लक्ष्मी देने वाली। पाँचवीं घड़ी हानि करे।

11 कुम्भ की घड़ी चार। प्रथम घड़ी सफलता देने वाली। दूसरी घड़ी शुभ फलदायक। तीसरी घड़ी राजदरबार से लाभ देने वाली। चौथी घड़ी हानि करे।

12 मीन की घड़ी तीन। प्रथम घड़ी हानि करे। द्वितीया घड़ी शुभ फलदायिनी और लक्ष्मी देने वाली। तीसरी घड़ी में चोर बनने का भय हो और बन्धन भय हो।

वार के हिसाब से छींक का विचार

1. रविवार के दिन यदि पूर्व दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो कार्य में विलम्ब होगा। आग्नेय दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो मन उचाट हो। दक्षिण दिशा की ओर से छींके तो विलम्ब होगा। नैऋत्य दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो बात देरी से सुनी जाएगी। उत्तर दिशा से छींक सुनाई दे तो लाभ होगा। पश्चिम दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो कार्य में विघ्न और अर्थ नाश होगा। वायव्य दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो अशुभ समाचार मिलेगा। ईशान दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो सफलता प्राप्त होगी।
2. सोमवार के दिन यदि पूर्व दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो लाभ हो। आग्नेय दिशा में छींक सुनाई दे तो लाभ हो। दक्षिण दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो मृत्यु भय हो। पश्चिम की ओर से छींक सुनाई दे तो अर्थलाभ हो। वायव्य दिशा से छींक सुनाई दे तो अर्थ हानि हो। उत्तर की ओर से सुनाई दे तो लाभ हो। नैऋत्य की ओर से सुनाई दे तो अन्न लाभ हो। ईशान दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो शुभ समाचार मिले।
3. भौमवार को यदि छींक पूर्व दिशा की ओर से सुनाई दे तो अर्थ लाभ हो। आग्नेय दिशा से सुनाई दे तो हानि हो। यदि छींक दक्षिण दिशा की ओर से सुनाई दे तो वाद-विवाद हो। नैऋत्य दिशा से छींक सुने तो कार्य में बाधा आए। पश्चिम की ओर से छींक सुनें तो मरणभय हो। वायव्य दिशा से छींक सुनें तो अर्थनाश हो। उत्तर दिशा से छींक सुनें तो कार्य में सफलता मिले। ईशान दिशा से छींक सुनें तो मरणभय हो।
4. बुधवार को यदि छींक पूर्व दिशा की ओर से सुनें तो मरणभय

हो। यदि दक्षिण दिशा की ओर से छींक सुनें तो मित्र मिलाप हो। नैऋत्य दिशा की ओर से सुनें तो लाभ हो। पश्चिम दिशा से छींक सुनें तो अर्थनाश हो। वायव्य दिशा से सुनें तो लाभ हो। उत्तर दिशा से छींक सुनें तो अर्थ लाभ हो। ईशान दिशा से छींक सुनाई दे तो मरणभय हो। आग्नेय दिशा से छींक सुनाई दे तो कार्य सफल हो।

5 वीरवार को यदि पूर्व दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो अर्थनाश हो। आग्नेय दिशा से छींक सुनाई दे तो कार्य सफल हो। दक्षिण दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो कोई नई बात सुनाई दे। पश्चिम दिशा से छींक सुनाई दे तो कार्य सफल हो। वायव्य दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो मरणभय हो। उत्तर दिशा से छींक सुनाई दे तो अर्थलाभ हो। ईशान दिशा की ओर से छींक सुनें तो ज्ञान पूर्ण बात सुनाई दे। नैऋत्य दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो दूर का कोई समाचार सुनने को मिले।

6 शुक्रवार के दिन यदि पूर्व दिशा से छींक सुनाई दे तो शुभफल प्राप्त हो। आग्नेय दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो घमण्डी व्यक्ति से मुलाकात हो। दक्षिण की ओर से छींक सुनाई दे तो लाभ हो। नैऋत्य दिशा से छींक सुनाई दे तो कार्य सफल हो। उत्तर दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो मरणभय हो। ईशान दिशा से छींक सुनाई दे तो पशु हानि हो।

7 शनिवार के दिन यदि पूर्व दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो हानि हो। आग्नेय दिशा से छींक सुनाई दे तो लाभ हो। दक्षिण दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो शुभ समाचार मिले। पश्चिम दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो दूसरे के सम्बंध में बात सुनें। वायव्य दिशा से छींक सुनाई दे तो भोग विलास हो। ईशान दिशा की ओर से छींक सुनाई दे तो मित्र से विवाद हो। नैऋत्य दिशा से छींक सुनाई दे तो शुभ समाचार मिले।

लग्न चोरी फल

चोरी का फल जानने के लिये यदि व्यक्ति को चोरी का पता मेष लग्न में लगे तो चोर ब्राह्मण हो, वृष लग्न में क्षत्रिय चोर, मिथुन लग्न में एक से अधिक व्यक्ति चोर, कर्क लग्न में स्त्री चोर हो। सिंह लग्न में मित्र चोर हो, कन्या लग्न में अपनी थाती चोर हो अर्थात् वस्तु अपने घर में ही गुम हुई है या चोरी करने वाला नीच जाति का हो। तुला लग्न में चोरी का पता लगे तो वस्तु घर के अन्दर गुम हुई है। वृश्चिक लग्न में चोरी का पता लगे तो शूद्र चोर हो। धनु लग्न में पता लगे तो चोर अपना मित्र हो, मकर लग्न में चोरी का पता लगे तो चोर कोई स्त्री हो। कुम्भ लग्न में घराटी चोर या वस्तु भूमि में ही कहीं गुम हुई हो। मीन लग्न में चोरी का पता लगे तो चोर स्त्री हो या वस्तु कहीं घर के पास ही गुप हुई हो।

नक्षत्र चोरी फल

रोहिणी, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, रेवती नक्षत्रों में यदि चोरी हुई हो तो वस्तु अवश्य मिलेगी, कहीं नहीं जाएगी। मृगशिरा, अश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा, अश्विनी नक्षत्रों में चोरी हुई वस्तु मिट्टी में पड़ी मिलेगी, कहीं नहीं जाएगी। आर्द्रा, मघा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वा भाद्रपदा, भरणी नक्षत्रों में खोई हुई वस्तु तीसरे दिन या तीसरे मास में मिलेगी, यदि इतने समय में न मिले तो फिर कभी नहीं मिलेगी। पूर्वा फाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण, उत्तरा भाद्रपदा, कृतिका नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु को दूर का मनुष्य ले गया है अतः उसका मिलना असम्भव है।

	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	योग
1	अश्विन	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़ा	शतभिषा	आनन्द
2	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू0 भाद्रपदा	कालदण्ड
3	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फाल्गुनी	स्वाति	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपदा	धर्मयोग
4	रोहिणी	पुष्य	उ0 फाल्गुणी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	प्रजापति
5	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विन	सौम्य
6	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू0 भाद्रपदा	भरणी	ध्यांक्ष
7	पुनर्वसु	पू0 फाल्गुनी	स्वाति	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपदा	कृतिका	ध्वज
8	पुष्य	उ0 फाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	श्रीवत्स
9	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़ा	शतभिषा	आश्विन	मृगशिरा	वज्र
10	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू0 भाद्रपरा	भरणी	आर्द्रा	मदिगर
11	पू0 फाल्गुनी	स्वाति	मूल	श्रवण	उ0 भाद्रपदा	कृतिका	पुनर्वसु	छत्र
12	उ0 फाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	महित्र
13	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विन	मृगशिरा	अश्लेषा	मानस
14	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू0 भाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	सुकाम
15	स्वाति	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू0 फाल्गुणी	अलाप
16	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फाल्गुणी	कन्दमूल
17	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विन	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	मृत्यु
18	ज्येष्ठा	अभिजित	पू0 भाद्रपदा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	काण
19	मूल	श्रवण	उ0 भाद्रपदा	कृतिका	पुनर्वसु	पू0 फाल्गुनी	स्वाति	सिद्धि
20	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ0 फाल्गुनी	विशाखा	शुभ
21	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विन	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	अमृत
22	अभिजित	पूभाद्रपदा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	गज
23	श्रवण	उ0 भाद्रपदा	कृतिका	पुनर्वसु	पू0 फाल्गुणी	स्वाति	मूल	मूसल
24	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ0 फाल्गुणी	विशाखा	पूर्वाषाढा	मातंग
25	शतभिषा	अश्विन	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	चय
26	पू. भाद्रपदा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	चर
27	उ. भाद्रपदा	कृतिका	पुनर्वसु	पू0 फाल्गुनी	स्वाति	मूल	श्रवण	स्थिर
28	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ0 फाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	प्रवर्तमान

साही को भगाने का यंत्र। इसे गुरुवार को भोजपत्र पर लिखकर उस खेत में गाड़ें जिसमें साही फसल को नुकसान कर रही है।
अनुराधा, द्वितीया तिथि। उत्तरा भाद्रपदा तृतीया तिथि। मघा चतुर्थी तिथि। हस्त, मूल सप्तमी तिथि। रोहिणी, चित्रा, स्वाति त्रयोदशी तिथि।

उपर्युक्त नक्षत्र व तिथियाँ सभी शुभ कार्यों के लिये वर्जित हैं, क्योंकि ये सब यमकृत्य हैं।

सूर्य	सप्तमी	हस्त
चन्द्र	षष्ठी	मृगशिरा
भौम	सप्तमी	अश्लेषा
बुध	आर्द्रा	अनुराधा
वृहस्पति	नवमी	पुष्य
शुक्र	दशमी	रेवती
शनि	द्वितीया	रोहिणी

उपर्युक्त नक्षत्र यमभद्र है, अतः सभी शुभ कार्यों में वर्जित है।

1 ↑

↓ 2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

303

15 ↑

↓ 16

303

304

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29 ↑

↓ 30

31

32

33

34

35

36

37

38

39

40

41 ↑

↓ 42

43

44

45 ↑

↓ 46

47

48

49 ↑

↓ 50

51

52

53

54

55

56

57

58

59

60

61 ↑

↓ 62

63

64

65

66

67 ↑

↓ 68

69

70

71 ↑

↓ 72

73

74

75

76

77

78

79

80

81

82

83

84

85

86

87 ↑

↓ 88

89

90

91

92

93

94

95

96

97

98

99 ↑

↓ 100

101

102

103 ↑

↓ 104

105 ↑

↓ 106

107 ↑

↓ 108

109 ↑

↓ 110

111 ↑

↓ 112

113 ↑

↓ 114

115 ↑

↓ 116

117 ↑

↓ 118

119 ↑

↓ 120

121 ↑

↓ 122

123

124

125 ↑

↓ 126

127 ↑

↓ 128

129 ↑

↓ 130

131 ↑

↓ 132

133 ↑

↓ 134

135

136

137 ↑

↓ 138

139 ↑

↓ 140

141

142

143

144

145 ↑

↓ 146

147 ↑

↓ 148

149

150

151

152

153 ↑

↓ 154

155

156

157

158

159 ↑

↓ 160

161 ↑

↓ 162

163

164

165 ↑

↓ 166

167 ↑

↓ 168

169 ↑

↓ 170

171 ↑

↓ 172

173 ↑

↓ 174

175 ↑

↓ 176

177 ↑

↓ 178

179 ↑

↓ 180

181

182

183 ↑

↓ 184

185 ↑

↓ 186

187 ↑

↓ 188

189 ↑

↓ 190

191

192

193

194

195 ↑

↓ 196

197 ↑

↓ 198

199

200

201 ↑

↓ 202

203 ↑

↓ 204

205 ↑

↓ 206

207 ↑

↓ 208

209 ↑

↓ 210

211

212

213 ↑

↓ 214

215 ↑

↓ 216

217 ↑

↓ 218

219 ↑

↓ 220

221 ↑

↓ 222

223 ↑

↓ 224

225

226

227 ↑

↓ 228

229 ↑

↓ 230

231

232

233 ↑

↓ 234

235

236

237

238

239 ↑

↓ 240

241 ↑

↓ 242

243 ↑

↓ 244

245 ↑

↓ 246

247 ↑

↓ 248

249 ↑

↓ 250

251

252

253 ↑

↓ 254

255 ↑

↓ 256

257 ↑

↓ 258

259 ↑

↓ 260

261 ↑

↓ 262

263 ↑

↓ 264

265 ↑

↓ 266

267 ↑

↓ 268

269 ↑

↓ 270

271

272

273 ↑

↓ 274

275

276

277 ↑

↓ 278

279 ↑

↓ 280

281 ↑ ↓ 282

283 ↑

↓ 284

285 ↑

↓ 286

287

288

289 ↑

↓ 290

291

292

293 ↑

↓ 294

295

296

297 ↑

↓ 298

299 ↑

↓ 300

301 ↑

↓ 302

303 ↑

↓ 304

305 ↑

↓ 306

307 ↑

↓ 308

309 ↑

↓ 310

311 ↑

↓ 312

313 ↑

↓ 314

315

316

317 ↑

↓ 318

319 ↑

↓ 320

321 ↑

↓ 322

323 ↑

↓ 324

325 ↑

↓ 326

327 ↑

↓ 328

329

330

331 ↑

↓ 332

333

334

335 ↑

↓ 336

337

338

339

340

ता म सी प ड त न श चा ल

खा धा पा क च क र ली

ख श्रा र ध डी च ब डी सी

341 ↑

↓ 342

343 ↑

↓ 344

345 ↑

↓ 346

347 ↑ ↓ 348

349

350

351 ↑

↓ 352

353 ↑

↓ 354

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी